

श्री सद्गुरुवे नमः

जगत है रैन का सपना

साकार राम दशरथ का बेटा। निराकार राम घट घट में लेटा॥
बिंद राम जिन जगत पसारा। निरालंब राम सबही ते न्यारा॥
एक पुरुष है सबते न्यारा। सब घट व्यापक अगम अपारा॥
ताकी भक्ति महा निरतारा। भक्ति करे सो उतरे पारा॥
चिंता तो सत्य नाम की, और न चितवे दास।
जो कुछ चितवने नाम बिन, सोई काल की फाँस॥

—सतगुरु मधु परमहंस जी

साहिब



बन्दगी

सन्त आश्रम रांजड़ी, पोस्ट राया, ज़िला साम्बा (जे. एण्ड के .)

जगत है रैन का सपना

—सतगुरु मधुपरमहंस जी

© SANT ASHRAM RANJRI (J & K)
ALL RIGHTS RESERVED

First Edition	—	June, 2011
Copies	—	5000

प्रचार अधिकारी

— राम रतन, जम्मू

Website Address.

www.sahibbandgi.org

www.sahib-bandgi.org

E-Mail Address.

*satgurusahib@sahibbandgi.org

Editor

Sahib Bandgi Sant Ashram Ranjri

Post -Raya, Distt.-Samba (J & K)

Ph. (01923) 242695, 242602

Mudrak : Deepawali Printers, Sodal Road, Preet Nagar, Jalandhar

विषय सूची

पृष्ठ संख्या

1.	जगत है रैन का सपना	
	समझ न कोई यहाँ अपना	5
2.	देह धरे का दंड है	33
3.	यह यम देश कठिन बहुताइ	48
4.	गर्भ त्रास तब छूटै भाई ।	
	जब सतगुरु कहँ बाँह थमाई ।।	57
5.	शब्द	80
6.	दोहे	121



दो शब्द

इस संसार में आकर कोई भी जीव सुख को प्राप्त नहीं कर सका। यदि कोई कहे कि उसे कोई दुख नहीं है तो यह अज्ञानमय बात होगी, झूठी बात होगी। कोई-न-कोई दुख सबको लगा हुआ है।

कोठी बंगले कारों की, कमी नहीं जिनके पास में।

वो भी यूँ कहते हैं, हम बड़े दुखी संसार में॥

क्योंकि देही मिली ही दंड के लिए है। इसलिए कितना भी सुख क्यों न हो, दुख जरूर होगा। देही नाशवान् है, इसलिए मरने का भय सबको है। जहाँ भय है, वहाँ सुख कैसा। इसलिए इस देही में सुख नहीं हो सकता है। फिर यहाँ प्रतिस्पर्धा है, एक दूसरे से आगे निकलने की होड़ है। जन्म से ही इसका प्रारंभ है। अपने से ऊँचे के प्रति ईर्ष्या होती है। जहाँ ईर्ष्या है, वहाँ सुख नहीं हो सकता है। ये ही चीजें स्वर्ग आदि लोकों में भी हैं। इसलिए केवल धरती पर ही नहीं, काल पुरुष के पूरे तीन लोक में कहीं भी सुख नहीं है। जहाँ पर स्थूल देही है तो वहाँ पर सूक्ष्म देही है। कहीं भी परम आनन्द की अवस्था नहीं है। सूक्ष्म देहियों में सुख है, पर वो भी परम सुख नहीं है। जब तक आत्मा काल पुरुष के इस तीन लोक के कैदखाने में रहेगी, वो परम सुख को प्राप्त नहीं हो सकती है। सद्गुरु जब कृपा करके स्थूल और सूक्ष्म देहियों से निकालकर हंस रूप करके अपने देश ले चलते हैं, वहीं पर परमानन्द की स्थिति है।



जगत है रैन का सपना समझ न कोई यहाँ अपना

यों सपना पेखना, जग रचना तिम जान।
इसमें कछु साँचो नहीं, यह नानक साँची मान ॥

क्या सच में हम जिस दुनिया में जी रहे हैं, वो सपना है? ऐसा वाणियों में आ रहा है। साहिब भी कह रहे हैं—

जगत है रैन का सपना ॥

यह रैन का सपना है तो क्यों हमें सब कुछ सच-सच लग रहा है? सुख-दुख सच लग रहा है, भाई-बंधु सच्चे लग रहे हैं, दुनिया के वैभव सच्चे लग रहे हैं। इंसान जो इच्छाएँ कर रहा है, सब सच्चा लग रहा है। क्या मामला है?

जैसे हम सपना देखते हैं तो सब कुछ सच्चा लगता है। पर सच में सब सपना है। सच क्यों लग रहा है? है सब कुछ स्वप्न। ऐसा नहीं है कि चंद लोगों को सच लग रहा है, बाकी को नहीं। ऐसा नहीं है। यह सभी को सत्य लग रहा है। क्यों सत्य लग रहा है? यह सच नहीं है। शास्त्र भी कह रहे हैं कि संसार स्वप्नवत् है। पर जिसे भी देखो, शरीर को नित्य मान रहा है, जगत के पदार्थों को नित्य मान रहा है। जिसे भी देखो, जगत की चीजों को नित्य मानकर चल रहा है। फिर क्यों सच लग रहा है? यह सच इसलिए लग रहा है कि अवस्था का खेल है। प्रमाण देता हूँ। अवस्था के कारण दुनिया सच्ची लग रही है। जैसे सपना देखते हैं तो सपना सत्य

लगता है। जो भी स्वप्न देख रहा है, उसे स्वप्न नित्य लग रहा है। लेकिन जाग्रत पर इसका ज्ञान होता है कि यह तो हम सपना देख रहे थे। पर जितनी देर सपना देख रहे होते हैं, उतनी देर वो सब सच्चा लग रहा होता है। क्या बात रही? देखने वाले भी हम हैं, जगने वाले भी हम हैं। उस अवस्था में उसे सत्य मानने वाले भी हम हैं और जगने पर उसे झूठ, स्वप्न-मात्र मानने वाले भी हम हैं। आखिर हमें क्या हो गया था कि सपने को हमने सच मान लिया था? सपने में राज्य मिले तो खुशी मिलती है। हम जितनी देर सपना देख रहे थे, सब सच्चा लग रहा था। जागने पर हम ही थे, जिसने उसे नकार दिया। सपने में प्राप्त होने वाला सुख-दुख नहीं रह पाता है। यह क्या हुआ? अवस्था थी। इस तरह इंसान का चाहना एक स्वप्न है।

क्या सच में जिस शरीर में रह रहे हैं, यह स्वप्नवत् है। जिस दुनिया में जी रहे हैं, क्या यथार्थ में काल का देश है? क्या सच में हम किसी शैतानी ताकत के हाथ बँधे हुए हैं? क्या प्रमाण मिल सकता है? थोड़ा चिंतन करें तो प्रमाण मिल रहा है। जो भी दिख रहा है, मायावी है। हम सब मायावी संसार में जीते हैं। यहाँ सब स्वप्न है। कभी-कभी आदमी एक बात जानने का भरसक प्रयास करता है कि 'कौन हूँ'। जब विचार करते हैं तो अपने में क्या पाते हैं? अपने को कैसा महसूस करते हैं? हम क्या हैं? क्या इसका कोई इशारा अपने अन्दर मिल रहा है। ये बड़े जटिल सवाल हैं। आदमी अपनी खुदी को नहीं जान पा रहा है, अपने को समझने में सक्षम नहीं है। अपने वजूद तक पहुँचने में किन चीजों की रूकावटें हैं? अपने को क्यों नहीं जान पा रहा है? कौन सी चीजें बाधक हैं? ऐसे तो हम सब कह रहे हैं कि मन-माया की रूकावट के कारण नहीं जान पा रहे हैं। क्या मन-माया की रूकावट को ठीक से समझ सकते हैं?

कौन-सी चीजें हैं, जो बाधा डाल रही हैं? क्या जो देख रहे हैं, सब सपना है? अगर सब सपना है तो इनको सच क्यों मान रहे हैं? किस

कारण से ये चीजें सच्ची लग रही हैं ? योगावशिष्ट महारामायण में संवाद है। जब राम जी ने कहा कि हे गुरुवर, यह संसार बड़ा पीड़ादायक है तो वशिष्ट जी ने कहा कि हे राम ! किस संसार की बात कर रहे हो, यह हुआ ही नहीं है। यह न कभी था, न है, न होगा। राम जी ने कहा कि हे गुरुवर, ये माता-पिता, ये मित्र, ये सूर्य-चाँद, ये मैं और आप आदि का भास फिर क्या है ? वशिष्ट जी ने कहा-हे राम ! यह केवल तुम्हारे चित्त की स्फुरना है। इसलिए चित्त का निरोध करो। जैसे चित्त का निरोध करोगे तो संसार का अस्तित्व ही मिट जायेगा। यह केवल चित्त का कल्पना है। हमें इन सब चीजों को यथार्थ में देखना होगा कि क्या संसार वास्तव में मिथ्या है या मान लें। आप विचार करें। साहिब ने बार-बार कहा-

कहत कबीर सुनो भाई साधो ॥

लोगों ने सोचा कि ओ महापुरुषो, सुनो। नहीं। 'कहत कबीर' यानी कह रहा हूँ। 'सुनो' यानी मेरी बात सुनो और 'साधो' यानी उस पर विचार करो। यानी वो कह रहे हैं कि जो मैं कह रहा हूँ, उसे सुनो और चिंतन करो।

तो देखते हैं कि यह जगत सच में स्वप्न है। साहिब ने भी स्वप्न कहा। धर्मशास्त्रों का चिंतन करते हैं तो पता चलता है कि संसार स्वप्नवत् है। हम सुन रहे हैं, समझ भी रहे हैं, पर वास्तव में हम संसार की सभी चीजों को नित्य ही मान रहे हैं।

कैसे स्वप्नवत् है ? सबसे पहले देखते हैं कि इसका आभास कैसे हो रहा है ? सूत्र क्या हैं ? खुशबू का आभास करते हैं, नाक माध्यम है। स्वाद का आभास करते हैं तो जीभ माध्यम है। जगत की अनुभूति कैसे हो रही है ? सब जानते हैं तो फलानी माँ है, फलाना पिता है, फलाना भाई है। इतना ही परिचय है। देखें कि कर्मज्ञानेन्द्रियों का खेल है। इसका आभास कर्मज्ञान इंद्रियों द्वारा हो रहा है। हमारी कर्मज्ञान इंद्रियाँ इसकी

अनुभूति दे रही हैं। हमने अपनी माता को देखा। कैसे? इस जगत की अनुभूति कर्मज्ञान इंद्रियों से हो रही है। इन्हीं के माध्यम से अनुभव हो रहा है। अपनी माता को देखें तो पता चलता है कि माता है। माता है की अनुभूति के पीछे क्या कारण है? हमारी आँखों ने देखा। आँखें किसी को भी देखकर उसका एक चित्र बनाती हैं। उसका तार चित्त से जुड़ा था। चित्त के पास वो चित्र पहुँचा तो उसने बताया कि माता है।

जगत की अनुभूति कर्मज्ञान इंद्रियों द्वारा हो रही है। इसमें स्थूल, सूक्ष्म और अंतःकरण की इंद्रियाँ काम कर रही हैं। हमारी आत्मा का कोई रिश्ता नहीं है। रिश्ते-नाते कर्मज्ञान इंद्रियों तक हैं, आगे नहीं। हमारी कर्मज्ञान इंद्रियाँ ये अनुभूति कर रही हैं। आँखें देख सकती हैं। ये कोशिकाओं का समावेशन है। इनके द्वारा ब्रेन के पास एक पिकचर पहुँचती है। चित्त में 2 खरब बातों को याद रखने की क्षमता है। माँ ने पुकारा तो पहचान जाते हैं कि माँ ने पुकारा है। श्रवण इंद्रियों ने बताया। ये आवाज को अनुभव करती हैं। यानी भाई-बहन, माता-पिता, पूरा जगत इन इंद्रियों का खेल है।

पैर चल रहे हैं तो इनको संचालित कर रहा है—ब्रेन। कोई गड़ढ़ा आ जाए तो पैर वहाँ नहीं जाते हैं। पैरों में देखने की ताकत नहीं है। ब्रेन कैसे कर रहा है! वो आँखों की सहायता से यह काम कर रहा है। आँखें ब्रेन को संदेश दे रही हैं। वो कोशिकाओं द्वारा पैरों को संदेश पहुँचाता है कि वहाँ न जाओ। यह काम बड़ी स्पीड में होता है। यह पूरा शरीर ही मायाबी है।

यह पिंजड़ा नहीं तेरा हंसा, यह पिंजड़ा नहीं तेरा॥

यह शरीर अधम कहलाया। महापुरुषों ने इसे नाशवान् कहा। जब यह नाशवान् है तो इससे संबंध रखने वाली चीज़ यथार्थ कैसे हो सकती है! पैर ठीक दिशा में चले जा रहे हैं। हम सोचते हैं कि ठीक चल रहे हैं। उनको पता नहीं है कि ठीक जा रहे हैं या नहीं। आँखों द्वारा ब्रेन

को पता चलता है और ब्रेन बताता है। जब ध्यान दूसरी ओर हो तो आँखें खुली होते हुए भी नहीं देख पाती हैं। ऐसे में ठोकर लग जाती है। क्योंकि आँखों ने नहीं देखा और पैरों को ब्रेन द्वारा संदेश नहीं पहुँच पाया। ऐसे ही हाथों में ज्ञान नहीं है। लहरसिंह आया तो ब्रेन ने कहा कि नमस्कार करो। हाथ जुड़ गये। यदि ब्रेन कहता कि तमाचा मारो तो वही हाथ तमाचा मार देते। हाथों को जुड़ने और मारने का पता नहीं है। जैसा संदेश आता है, ये वैसा ही अनुकरण करने लग जाते हैं। इनके पास यह ज्ञान नहीं है। ये मस्तिष्क का अनुकरण कर रहे हैं। हमारा दिमाग जो संदेश दिया, वही अनुकरण किया। मुख खाने की क्रिया करता है। इसे कर्म इंद्रि भी कहते हैं और ज्ञान इंद्रि भी, क्योंकि खाने का काम भी करती हैं और बोलने का काम भी करती हैं। बोल रहे हैं तो भी जीभ की भूमिका है। इसे नहीं पता है कि कम खा रहे हैं या ज्यादा खा रहे हैं। यह कंट्रोल ब्रेन कर रहा है। वो बता रहा है कि बस, अब और नहीं खाना है, गैस बनेगी, बीमार हो जाओगे। इस तरह इंद्रियों में ज्ञान नहीं है। इनका संचालन मस्तिष्क कर रहा है। आँखें देख रही हैं, माता-पिता आदि का बोध हो रहा है। पर ये केवल जरिया हैं। इनकी खुराक सुंदरता है। सुंदर स्त्री दिखे तो अटक जाती हैं। कभी माँ, बहन आदि की तरफ भी अटक जाती हैं तो फौरन मस्तिष्क कंट्रोल करता है कि नहीं, यह माँ है, यह बहन है। खुशबू और बदबू लेने में नाक एक माध्यम है। मस्तिष्क की कोशिकाओं ने इल्म दिया। यह जरिया था। कभी कुछ खाकर कहते हैं कि मजा आ गया। जीभ के पास तो मजे का अनुभव नहीं है। यह मजा तो दिमाग ने अनुभव किया। दिमाग का कंट्रोलकर्त्ता मन है। तभी तो कह रहे हैं—

कहत कबीर सुनो भाई साधो, जगत बना है मन से॥

हम जो भी अनुभव कर रहे हैं, इसकी अनुभूति मन कर रहा है। कान सुन रहे हैं। ये ज्ञान दे रहे हैं। कोई कहता है कि वहाँ आओ या फिर कोई प्रश्न पूछता है। आप उत्तर देते हैं। यह बड़ी तेजी से काम हुआ।

आप वहाँ गये, यह काम भी बड़ी स्पीड में हुआ। कानों के पर्दे से आवाज टकराने के बाद चित्त के पास पहुँची। उसने बताया कि वहाँ चलना है। उसने पैरों को वहाँ चलने के लिए संदेश दिया और पैर उस ओर चल पड़े। उसी ने समझा कि क्या प्रश्न पूछा गया है और क्या उत्तर देना है। मुँह को तो केवल एक माध्यम बनाकर बोलने का काम पूरा किया गया।

किसी गंदे नाले के पास से निकलते हैं तो नासिका के माध्यम से बदबू का आभास पाकर मस्तिष्क हाथों को संदेश देता है कि नहीं, यह ठीक नहीं है। वो हाथों को नाक बंद करने का संदेश देता है और हाथ क्रियाशील हो जाते हैं। अन्यथा हाथों के पास बदबू का आभास करने की ताकत नहीं थी। इस तरह अलग अलग इंद्रियाँ अलग-अलग ज्ञान रखती हैं। वो केवल दिमाग के पास संदेश पहुँचाती हैं कि ऐसा है। आगे क्या करना है, वो संदेश दिमाग सोचकर बताता है। और यह काम इतने कम समय में होता है कि कुछ कहा नहीं जा सकता है। पूरा ब्रेन ऑपरेट कर रहा है। बड़ी चालाकी से शरीर की सृजना है। इनके द्वारा संसार की अनुभूति करते हैं।

कभी देखते हैं, कुछ लोग शांत होते हैं, कुछ गंभीर होते हैं, कुछ क्रूर होते हैं। सब कोशिकाओं का खेल है। कभी आदमी ज्यादा शर्मिला हो जाता है। यदि वो कोशिकाएँ निकाल दी जाएँ तो शर्मिलापन दूर हो जायेगा। क्रूर होना, शांत होना सब कोशिकाओं का खेल है, इसलिए सब मन है।

हमारे दिमाग के चार अंग हैं, मन के चार रूप हैं—मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार। हम अपने को क्यों समझ रहे हैं कि हम बालाकृष्णा हैं, हम लहरसिंह हैं। मैं की अनुभूति अपने आप तक है। यहीं तक हम पलट कर अनुभव करके लाते हैं कि मैं फलाना हूँ, अच्छा हूँ, बुरा हूँ। मेरे इस बिंदु पर ध्यान देना। हरेक आदमी अपने अंतःकरण में अलग-अलग फीलिंग कर रहा है। जब इस बात को समझने का प्रयास करते हैं कि क्या

हैं, तभी चिंतन के द्वारा यह रिजल्ट आता है। जब भी मनुष्य जीवन में इस पहलू पर सोचने की कोशिश करता है कि क्या है, जब भी अपने बारे में सोचने का प्रयास करता है तो कहाँ तक पहुँचता है? आदमी कहाँ जाकर टकराता है? इस खोज में उसे क्या उत्तर मिलता है? किस निष्कर्ष पर पहुँचता है?

जब भी यह सोचने का प्रयास करते हैं तो अपने ब्रेन तक पहुँचते हैं, अपनी याददाश्त तक पहुँचते हैं, अपनी क्रियाओं तक पहुँचते हैं। हम सोचने लगते हैं कि खेरूराम हूँ, फलानी जगह का रहने वाला हूँ। फिर हम एक बिंदु तक पहुँचते हैं कि अच्छा हूँ, बुरा हूँ। कैसे? कर्म किये हैं, वो साक्षी हैं। चित्त के अन्दर डुबकी लगाते हैं तो वो बताता है कि क्या क्रियाएँ की हैं। तीसरा हम अपनी इच्छाओं से अनुसार अपने को जान रहे हैं। मैंने यह-यह इच्छा की है, मेरे बाल-बच्चे भी हैं। आप यह अनुभव करने लगते हैं। चौथा 'मैं हूँ' तक टकराते हैं, व्यक्तित्व तक टकराते हैं। चारों मन है। यानी चारों की दीवार आ जाती है। जब भी अपने को जानने का प्रयास करते हैं, परमात्मा को जानने का प्रयास करते हैं, यही दीवार आती है। अगर कहा जाए कि भूल जाओ तो भी भूल नहीं पायेंगे। यह है—चित्त। इन्हीं को कहा—आपा, खुदी, वजूद। हम यहीं तक अटक जाते हैं। वजूद के अन्दर से किसी तरह भी बाहर नहीं निकल पा रहे हैं।

नानक हौंमें रहा अड़ाई ॥

यह है—मन। इसलिए बड़ा कठिन है। इस मन से निकलना बड़ा कठिन है। इन संकल्पों से बाहर निकलना, बुद्धि से निकलना बड़ा कठिन है। यह है—मन। देखा, कितना ताकतवर है! तभी कहा—

कहत कबीर सुनो भाई साधो, जगत बना है मन से ॥

बहुत खूँखार है मन। आखिर मन से बाहर क्यों निकलना? मुक्ति क्यों पानी है? जब तक कर्मज्ञान इंद्रियों के बीच में हैं, सुख-दुख मिलेगा। क्यों मिले? इनके माध्यम से किया हुआ कर्म असत्य है। कितना भी संग्रह

किया है, कर्म द्वारा कितनी भी चीजें प्राप्त की हैं, वो चली जाती हैं। तब कष्ट मिलता है। इच्छा की पूर्ति ही सुख है और पूर्ति न होना ही दुख है। शरीर के रहते-रहते इच्छाओं की पूर्ति नहीं होती तो पुनर्जन्म मिल जाता है। इसलिए कह रहे हैं—

चाह मिटी चिंता मिटी, मनवा बेपरवाह।

वो ही शाहनशाह है, जिसको नाहीं चाह॥

पर चाह का मिटाना बड़ा मुश्किल है। हम पल-पल इच्छा करते हैं। कभी खाने की इच्छा, कभी पानी पीने की इच्छा। पल-पल इच्छा हो रही है।

काम काम सब कोऊ कहे, काम न चीह्ने कोय।

जेती मन की कल्पना, काम कहावे सोय॥

क्यों बाहर निकलना है? सुख-दुख ब्रेन अनुभव कर रहा है। जब किसी कार्य में असिद्धि हुई तो दुखी हो जाते हैं। दुखी ब्रेन हुआ। सिद्धि मिली तो सुखी हो जाते हैं। इसलिए ज्ञानी सुख-दुख से ऊपर उठ जाता है।

ये किताबी बातें नहीं हैं। मन का उलझाव बड़ा तगड़ा है। पूर्ण सत्य है कि शरीर मिट्टी में मिल जाता है, पर आत्मा नित्य है।

निरंजन ने अपनी सुविधा के लिए शरीर का निर्माण किया। आपको फल खाने की इच्छा हुई। चित्त ने याद किया कि वहाँ आम का पेड़ है। अब वहाँ तक चलकर जाने के लिए पैरों की ज़रूरत थी। फिर फल को देखने के लिए आँखों की ज़रूरत भी थी। फिर उसे खाने के लिए, उसका आस्वादन करके के लिए मुख की ज़रूरत पड़ी। प्रिय व्यक्ति को अपनी बात व्यक्त करनी है तो उसके लिए जीभ बनाई। अन्यथा कैसे व्यक्त करते! इस तरह निरंजन ने सब अपनी सुविधा के लिए बनाया। हमारी आत्मा में ये नहीं हैं।

जड़ चेतन है ग्रंथि पड़ गई। यद्यपि मिथ्या छूटत कठिनई॥

साहिब ने एक बात कही—

तन धर सुखिया कोई न देखा, जो देखा सो दुखिया।
 बाटे बाट हर कोई दुखिया, क्या गिरही क्या वैरागी॥
 योगी दुखिया जंगम दुखिया, तपसी को दुख दूना।
 आशा तृष्णा सब घट व्यापत, कोई महल न सूना॥

मैं बताता हूँ। आप सोचते हैं कि धनवान लोग सुखी हैं। नहीं। मत सोचना कि धनवान सुखी हैं। नहीं हैं। जिसके पास एक लाख है, उसका प्लान करोड़ों कमाने का है। गरीब की समस्या तो रोटी खाने तक है। इच्छाएँ ही बंधन का कारण हैं। तपसी भी दुखी है, वैरागी भी दुखी है। तपसी दुखी है कि दोपहर की रोटी खाई, शाम की रोटी का जुगाड़ कहाँ से करे। गृहस्थी दुखी है कि भोजन का संसाधन—दाल, आटा, चावल आदि कहाँ से जुटाए। इनकी पूर्ति के लिए परेशान है। सन्यासी परेशान है कि शाम का खाना किसके दरवाजे पर खाऊँगा।

राजा दुखिया परजा दुखिया॥

राजा को भय है कि दूसरा राजा हमला न कर दे। भारत कितना विशाल देश है! कश्मीर में दूसरे देश का हस्तक्षेप होते देख परेशानी बढ़ जाती है। राजा लोग भी दुखी हुए कि नहीं! पूरा झमेला मन से हुआ।

मैं जो बातें बोल रहा हूँ, बाद में मेरी नकल करके अन्य महात्मा लोग भी बोलेंगे। जब वो मेरा प्रोग्राम देखेंगे, मेरी वाणी सुनेंगे, पढ़ेंगे तो उन्हें अच्छी लगेंगी। उन्हें लगेगा कि कथा-कहानियाँ तो सब जानते हैं, ये नयी बातें हैं। फिर वो मेरी बातों को फुटकल रूप में लेंगे, पूरी नहीं लेंगे। उनके लोग समझेंगे कि हमारे गुरु जी का अपना ज्ञान है। फिर कहीं वो मेरी बात सुनेंगे तो उन्हें लगेगा कि मैं उनके गुरु जी की नकल कर रहा हूँ। क्योंकि वो अच्छा बोलना जानते हैं।

....तो इस तरह मन, बुद्धि, चित्त आदि का खेल है। चित्त से ही पूरी दुनिया याद है। मैं एक गजल गाता था। 50 साल से उसकी दो

कड़ियाँ ही गाता था। एक दिन मैं गाड़ी में था। बड़ा थका हुआ था तो गला, पेट कोई भी गाने के लिए साथ नहीं दे रहा था। तो मैं गुनगुनाने लगा।

गुजरे हैं आज इश्क में, हम इस मुकाम से।
नफरत सी हो गयी है, महोब्बत के नाम से॥
हमको न यह गुमान था, ओ संगदिल सनम।
राहे वफा से तेरे बहक जायेंगे कदम।
हम वो नहीं जो प्यार में, रो कर गुजार दें।
परछाई भी हो तेरी, तो ठोकर पे मार दे।
वाकिफ हैं हम भी खूब, हर इंतकाम से॥

इतने में मैं तीसरी कड़ी भी गुनगुनाने लगा।

ओ बेवफा तेरा भी यूँ ही टूट जाए दिल।
तू भी तड़प तड़प के पुकारे कि हाल दिल॥
तेरा भी सामना हो, कभी गम की शाम से॥

जब गुनगुना रहा था तो एकाग्रता से नहीं गुनगुना रहा था। मैं यदाकदा दो ही कड़ियाँ गा रहा था। अचानक 50 साल के बाद वो कड़ी याद आई। तीसरी कहाँ से आ गयी? फिर मैंने फ़ोन करके किसी से पूछा कि मैं कितनी कड़ियाँ गाता था इस गजल की? उसने कहा—दो। मैंने पूछा कि यह कड़ी भी है क्या? कहा—है।

यानी कई जन्मों की बातें आपके चित्त में, आपकी मिमोरी में फीड हैं, पर पता नहीं है आपको। वो फौरन सामने आ गयी।

कई जन्म-जन्म से मन आपको बाँधे हुए है। आप जकड़े हुए हैं। इतने मजबूत दायरे में आप जकड़े हुए हैं कि वो दायरा टूट नहीं पा रहा है।

अभी हाल में कुछ अफगानिस्तानी 400 मीटर सुरंग निकालकर भाग गये। यह कैसे किया होगा उन्होंने? जेल के चारों ओर पानी भी था।

पक्की दीवारें भी थीं। उन्होंने सुरंग चौड़ी नहीं बनाई होगी। एक ही आदमी रेंग कर निकल सके, उतनी बनाई होगी। फिर मिट्टी कहाँ गयी? इस मिशन में बहुत लोग लगे होंगे। कुछ ने बाहर से मदद की होगी। वो 4 लोग थे, जो अन्दर से वो सुरंग निकाल रहे थे। वो कहीं जेबों में भर-भर कर थोड़ी-थोड़ी मिट्टी निकालते रहे होंगे। किसी को शक भी नहीं हुआ होगा।

ऐसे ही निरंजन से सुरंग निकालकर निकलना है। काम ने, क्रोध ने घेर रखा है।

लक्ष अहेरी एक मृग, केतिक टारे बाण।

कह रहे हैं—

बहु बंधन ते बाँधिया, एक विचारा जीव।

जीव विचारा क्या करे, जो न छुड़ावे पीव॥

फिर कह रहे हैं—

कुंजी बताय दूँ मैं ताला खुलन की।

करो रे यतन सखी साईं मिलन की॥

बहुत बड़ी रूकावटें हैं। पर उनसे निकलने की कुंजी भी है। ऐसी ही सुरंग से पाण्डव निकल भागे थे।

....तो इस तरह खुदी को जगाने का प्रयास करते हैं तो बड़ी रूकावटें आती हैं। इसी प्वाइंट पर भटकता है। या तो याददाश्त के पास, या तो बुद्धि के पास अटक जाते हैं। इनसे आगे हम निकल नहीं पा रहे हैं। अपने प्रति परिचय है तो यही है कि फलाना हूँ, फलानी जगह का रहने वाला हूँ। इसी आधार पर तो अन्तःकरण बना है, उसी से परिचित हैं।

आखिर कहाँ बैठा है मन? किसी को भी निकलने नहीं देना चाह रहा है इसमें से। इसी में बाँधे रखना चाह रहा है। मन ने किसी पिंजड़े में नहीं बाँध रखा है। कोई रस्सी नहीं बाँधी है। जहाँ तक मन की कल्पनाएँ

हैं, वहाँ तक इसका दायरा है। इस दायरे से निकलने नहीं दे रहा है।

तीन लोक में मनहिं विराजी। ताहि न चीह्नत पंडित काजी॥

इसकी वृत्तियाँ ठीक नहीं हैं। जल की वृत्ति जैसे शीतलता है, इसकी वृत्तियाँ काम, क्रोध आदि हैं। इनसे बच नहीं सकता है। तभी कह रहे हैं—

बहु बंधन ते बाँधिया, एक विचारा जीव॥

इनसे बचने के लिए कोई सुरंग नहीं बनानी है। पर निकलने का रास्ता है। तभी तो कह रहे हैं—

कुं जी बताय दूँ मैं ताला खुलन की॥

...तो बड़ी शातिर ताकत के हाथ बँधे हैं। कोई-कोई कहता है कि बहुत बुरा हूँ। उसने बड़े बुरे कर्म किये हैं। पूरे कर्म सामने हैं। हमारी दौड़ यहाँ तक होती है। इसी के आधार पर पहचाने जाते हैं। सही में नहीं जानते हैं कि हम क्या हैं। हम सबकी मान्यता भी है, मानना भी है कि आत्मा है। हम यह भी मान रहे हैं कि आत्मा शरीर को चला रही है। आत्मा शरीर का संचालन कर रही है, हम यह मान रहे हैं। क्या हमारा सार्थक प्रयास हो रहा है कि आत्मा को जानें। नहीं।

जेल से कोई भी कैदी नहीं भाग सकता है। रिसकी है। शूट भी कर सकते हैं। बड़ा कठिन है। कोई ही भाग सकता है। पर भागा जा सकता है। इस तरह हमने मन से निकलने का सार्थक प्रयास नहीं किया। अगर प्रयास कर रहे हैं तो इंद्रियों द्वारा चेष्टा कर रहे हैं। हम आत्म प्रयास नहीं कर पा रहे हैं। ज्यादा-से-ज्यादा दिमाग तक सीमित हैं। हम कुछ बुद्धि से, कुछ चित्त से काम कर लेते हैं। इनसे अलग हमारे पास साधन नहीं है। इनके प्रयास से हम स्वर्ग लोक, ब्रह्म लोक आदि तक जा सकते हैं। लेकिन इनको तोड़कर आगे नहीं निकल सकते हैं।

मनहिं स्वरूपी देव निरंजन, तोहि रहा भरमाई।

हे हंसा तू अमर लोक का, पड़ा काल बस आई॥

मन ने आत्मा को भरमाया हुआ है। एक बात अच्छी है कि हम कह भी रहे हैं कि आत्मा उलझी है। क्या पितर लोक में बंधन रहित हो जाती है? वहाँ तो पितर श्राद्ध द्वारा रोटी पहुँचा रहे हैं। यानी वहाँ रोटी खा रहे हैं, शरीर है। फिर आत्मा रूप तो नहीं हुआ न। स्वर्ग में मुक्ति कैसे है! वहाँ तो सुंदर-सुंदर पेड़ लगे हैं, झरने बह रहे हैं। आत्मज्ञान वहाँ भी नहीं है। ब्रह्मादि लोकों में जाने के बाद भी वापिस आना होता है। ज्यादा-से-ज्यादा निरंजन के लोक में जाकर समा जाता है। फिर भी वापिस आना होता है। ऋषि, मुनि आदि ले देकर यहाँ तक पहुँचे। जिससे बचना है, उसी के घर में रहकर नहीं बच सकते हैं। तो जब एक भी जीव अमर लोक नहीं पहुँचा तो साहिब ने कहा—हे ज्ञानी! जा, लेकर आ।

मैं जो तथ्य बोल रहा हूँ, सूफी लोग भी नहीं बोले हैं। साहिब की बात अलग है। दुनिया कैसे यकीन करेगी!

एक था हंस का बच्चा। एक दिन उड़ते-उड़ते एक पेड़ पर बैठा। उस पेड़ पर उल्लू का बच्चा भी था। उसका घर था। हंस आपस में बात कर रहे थे तो उल्लू ने कहा कि कौन हो? रात हो गयी है, घर जाओ। हंस ने कहा कि दिन हो गया, सूर्य नारायण उगा है। उसने कहा कि तुम पागल हो गये हो, सूर्य उगने से अँधेरा हो जाता है, कहाँ है सूर्य नारायण! कोई नहीं है सूर्य नारायण। हंस ने परिश्रम किया। एक दिन थोड़ा अँधेरा था तो वहाँ गया। सूर्य उगने वाला था। उसे कहा कि थोड़ा देख ले। उसने धीरे-धीरे दिखाना शुरू किया। अब उसकी आँखों को एक आभास हो गया।

आपको मालूम है कि प्रकाश में क्यों नहीं देख पाता है उल्लू। हम भी रोशनी में नहीं देख पाते हैं। सूर्य की तरफ देखें तो अँधेरा छा जाता है आँखों के आगे। पर हम क्यों देख रहे हैं। उल्लू क्यों नहीं देख पाता है। हम अपनी आँखों संकीर्ण कर लेते हैं, उल्लू को यह करना नहीं आता है। वो कोई मामूली नहीं है। वो लक्ष्मी जी का वाहन है, पारस पत्थर का

ज्ञान रखता है। दुनिया किसी का भी मजाक उड़ाती है। कुछ कहते हैं—गधा। आपने गधे के लिए नहीं सोचा। वो बेचारा कहीं भी रह लेता है, कितना भी बोझा लादो, सह लेता है। बड़ा आज्ञाकारी जीव है। बड़ा शरीफ जानवर है। वो एक सस्ती सवारी है। खाने को जो दो, चुपचाप खा लेता है। पर हमने कितनी गलत धारणा बनाई है।

....तो अब उल्लू का बच्चा और हंस का बच्चा घूमने लगे। एक दिन उल्लू के बच्चे ने माँ-बाप से कहा कि ऐसे ही अँधेरे में घूमते रहते हो, बाहर निकलो, बड़ा मजा है। उन्होंने कहा कि इसे हंस के बच्चे ने बिगाड़ दिया है। इसे कहा भी था कि उसकी संगत मत कर। पागल कर दिया हमारे बच्चे को। छोड़ दे उसका साथ।

इसी तरह हमें भी लोग कह रहे हैं कि देवी-देवते छुड़ा रहा है, सब चीजें, सयाने बगैरह से भी दूर कर रहा है, धर्म बिगाड़ रहा है।

हम कह रहे हैं कि आगे बढ़ो।

...तो अब तो पूरे उल्लू उसके पीछे पड़ गये तू बड़ा आया इधर, हमारे पूरे खानदान ने सूर्य नारायण नहीं देखा, तू दिखाने चला। हमारे लड़के को भी पागल कर दिया।

इसी तरह दुनिया के लोग हैं, आप देख लेना। साहिब ने बड़ा प्यारा कहा—

कुं जड़ों की हाट में, हीरे का क्या मोल॥

सब्जी बेचने वाले की दुकान में हीरे की बात नहीं करना।

हीरा रत्न की पोटली, बार बार मत खोल॥

...तो वो उल्लू का बच्चा हताश हो गया। हंस ने कहा कि पहले तू भी नहीं मान रहा था। तू भी इनको धीरे-धीरे समझा।

ऐसे ही हमें भी लोग कह रहे हैं।

यह क्यों कह रहे हैं कि उल्लू की तरह क्या देख रहे हो? वो भावहीन देखता है, कोई क्रिया नहीं होती है। क्यों भावहीन? क्योंकि

लगता है कि कोई है, वो जोर देता है आँखों पर, पर देख नहीं पाता है, पहचान नहीं पाता है। इस तरह जब आदमी भी भावहीन देखता है तो कहते हैं कि क्या उल्लू की तरह देख रहे हो।

अब उल्लूओं की परम्परा चली आ रही है कि सूर्य नारायण के उदय होते ही अँधेरे में चले जाते हैं। इसी तरह दुनिया परम्परा में उलझी है। वो किसी भी नयी बात को आसानी से स्वीकार नहीं कर पाती है।

यही कारण है कि त्रिकाल में कोई भी निरंजन के दायरे से बाहर नहीं निकल पाया। सब परम्परा का पालन करते हुए निरंजन की ही भक्ति करते रहे। साहिब कह रहे हैं—

गण गंधर्व ऋषि मुनि अरु देवा।
सब मिल लाग निरंजन सेवा॥

बड़ी शातिर ताकत के हाथ में जीव बँधा है। कोई निकल नहीं पा रहा है। पृथ्वी अपनी कक्षा में जो भी है, धरती पर फेंक देती है। इसी तरह निरंजन का गुरुत्वाकर्षण है। निरंजन पटक देता है संसार में। वो रोक लेता है। ध्यान करो तो भी रोक लेता है।

बिन सतगुरु बाँचे नहीं, कोई कोटिन करे उपाय॥

तो साहिब ने बड़े सहज शब्दों में बोला। गाय, भैंस चराने वाला और पी.एच.डी. करने वाला भी उनके दोहे बोल रहा है। उन्होंने आम आदमी की भाषा में बोला। साहिब खुद ही थे।

सतगुरु आहे छुड़ावनहारा॥

जब साहिब की शरण में आ गये तो फिर चिंता नहीं करना। आप सुरक्षित हैं। कोई पुलिस वाला आपको डाँट भी देता है। आप हमला नहीं करते हैं। क्योंकि जानते हैं कि उसके पीछे सरकार की सुपोर्ट है। जब शरण में हैं तो मदद मिलेगी।

एक थी बकरी। वो जंगल में कहीं दूर निकल गयी। उसे तो डर है कि शेर, चीता, भेड़िया आदि कोई भी खा लेगा। उसने दिमाग लगाया

और सीधा शेर के पास पहुँची, कहा कि मैं आपकी शरण में हूँ, रास्ता भूल गयी हूँ, मुझे डर लगा रहा है। शेर ने कहा कि चिंता मत कर। उसने ऐलान कर दिया कि कोई भी इसे हाथ नहीं लगाना। वो मस्त घूमने लगी। उसमें ताकत नहीं थी। कुत्ता भी खा लेता। पर वो शरणागत हुई। साहिब भी कह रहे हैं कि शरणागत हो जाओ। मैंने आपको अपने शरणागत नहीं किया है, साहिब ने किया है। लोग कह रहे हैं कि खुद को साहिब कह रहा है। नहीं। हम यूँ कह रहे हैं—

गुरु साहिब तो एक है, दूजा सब आकार।

आपा तज के गुरु भजे, तब पावे दीदार।।

हम शास्त्र सहित बात कर रहे हैं। साहिब-बंदगी बोल रहे हैं, कोई मधु-बंदगी तो बोल नहीं रहे हैं।

...तो बकरी शरणागत थी।

जो जाके शरणागति, तिसको ताकी लाज।।

इसलिए दो विकल्प रखे। आप चुनें। तुम्हें जीते-जी चलना है तो सुनें। आप चाहते हैं कि दुनिया में भी रमना है तो भी विकल्प दिया। इस पर कह रहे हैं—

या तो कुछ करनी करे, या गुरु पार उतारनहार।।

करनी क्या। जो गुरु ने कहा, वो करता रहे। मेरी प्राथमिकता है कि छोड़ो दुनिया की चिंता। पर कोई छोड़ने वाला नहीं है। हमने छोड़ी है।

दिलां दा मरहमी कोई न मिलया, जो मिलया वो गरजी।।

कोई कहता है कि फलाना शादी नहीं करना चाहता है, आप कहें। मैं कहता हूँ कि मैं नहीं कहने वाला हूँ। पहले मैं समझाता था कि शादी मत करो, विषय-विकारों में क्या रखा है। गाँव वालों ने अपने बच्चों को भेजना ही बंद कर दिया। गुरुवर ने कहा कि ऐसे कोई तेरी बात सुनने नहीं आयेगा। तू यह मत बोल।

तो मैं किसी को मजबूर नहीं करता हूँ कि तू शादी कर या नहीं कर। उसकी मरजी है। यदि दुनिया में गुलाटी खा रहा है तो मैं कहता हूँ कि उधर ही रह। यदि वो आ जाए मैदान में, तो सब तुम्हारा है।

सहज जनि जानो साई की प्रीत॥

वेद भी कह रहा है कि हो सके तो बचो, पर यदि नहीं रह सकते तो करके देख लो। 25 से 50 साल तक गृहस्थ जीवन में रहकर देख लो। फिर 50 से 75 तक बानप्रस्थ हो जाओ और फिर उसके बाद सन्यासी।

साधु रमता भला, पानी चलता भला॥

वो अपने पास में संग्रह भी नहीं करे।

गाँठी दाम न बाँधई, नहीं नारी से नेह।

तुलसी ऐसे संत की, मैं चरणों की खेह॥

जब भी परम-तत्व की ओर चलते हैं तो रास्ते में दो की ही रूकावट आती है।

चलो चलो सब कोऊ कहे, पहुँचे बिरला कोय।

पहुँचे बिरला कोय, बीच में दुर्गम घाटी दोय।

एक कनक औ कामिनी, दुर्गम घाटी दोय।

चलो चलो सब कोऊ कहे, पहुँचे बिरला कोय॥

‘कनक’ सोने को कहते हैं। ‘कामिनी’ स्त्री को कहते हैं। ये दो चीजें ही अधिक आकर्षित करती हैं।

जब तलक विषयों से यह दिल दूर हो जाता नहीं।

तब तलक साधक विचारा, चैन सुख पाता नहीं।

कर नहीं सकता है जो एकाग्र अपनी वृत्तियाँ।

उसको सपने में भी परमात्म नजर आता नहीं॥

किसी महात्मा ने 1 हजार करोड़ रूपया अपने बच्चे के लिए इन्वेस्टमेंट में लगाया। एक अंग्रेज ने उसका पूरा विवरण दिया। उसने एक महात्मा के 7 लक्षण बताए, कहा कि आप देख लें कि सच्चा महात्मा कैसा

होता है। उसने हमारी अंग्रेजी की किताब से रेफरेंस दिये। उसने बेवसाइट पर पढ़ा होगा। उसने हमारी किताब का हवाला दिया।

आपका पंथ कोई मामूली नहीं है। इंग्लैंड से एक लड़की का फोन आया, कहा कि आपका जन्मदिन मना रहे हैं, दो शब्द बोलो, संगत को निहाल करो। मैंने कहा कि कितने लोग हैं। कहा कि 100-150 लोग हैं। ऐसे ही तो पंथ बढ़ता है।

उसने फिर अपना परिचय दिया, कहा कि कुछ को यहाँ से नाम दिलाकर ले गयी। फिर सबने साहिब-बंदगी बोला।

एक मलेशिया में योगा क्लास चला रही है। वो 200-250 आदमी को सिखाती है। वो कह रही है कि वहाँ आओ।

एक सत्य साई बाबा का शिष्य था। वो 10-12 लड़कों के साथ आया। उसका अपना आश्रम भी है। उसने कहा कि सत्य साई बाबा ने मुझसे कहा था कि इस दुनिया में जो कुछ चाहिए, दे दूँगा, पर पार नहीं कर पाऊँगा। जब तुम्हें सच्चा गुरु मिल जाए तो मुझे छोड़ देना। उसने पूरा आश्रम दान में दे दिया।

....तो जो भी ब्रह्माण्ड में देख रहे हैं, सब स्वप्न है। सपने की खूबी थी कि हमें जो कुछ दिखा, सब सच्चा लग रहा था। सपने में जो कुछ देख रहे थे, सब सत्य प्रतीत हो रहा था। आपने कभी सपने पर गहराई से चिंतन नहीं किया। यह कैसा भ्रम है? इस भ्रम में शिव-सनकादि, ऋषि-मुनि भी झूल रहे हैं। इसका मतलब है कि यह अवस्था का असर था। जैसे भांग खाने वाले को ज़मीन में खड्डे दिखते हैं। कभी लगता है कि उड़ रहा हूँ। सच यह है कि उड़ नहीं रहा है। सच यह है कि ज़मीन में खड्डे नहीं हैं। यह नशे के कारण हुआ। इस तरह जो स्वप्न है, भ्रमांक है। पर एक बात है कि यह अवस्था बदली कैसे? जाग्रत से कोई नींद में चला गया तो उसी की अनुभूति करने लगा। रात-भर स्वप्न देखता रहा। नींद खुली तो सब चीज़ें चली गयीं। उसे पता न चला कि कैसे गया और

कैसे आया। इस तरह तीन-लोक में जो भी है, भ्रम के झूले में झूल रहा है। सुषुप्ति, स्वप्न, जाग्रत और तुरीया—ये चार अवस्थाएँ हैं। कभी आप देखते हैं कि ऐसी अवस्था में चले गये कि कुछ भी पता नहीं चलता है। आप शून्यास्त हो गये। आपको किसी भी बात का पता नहीं चला। यहाँ तक कि जागने के बाद भी उस अवस्था का कुछ देर तक असर रहता है। जैसे कोई रात को नशा करता है तो दिन को उतर जाता है। लेकिन नहीं उतरा। कुछ असर रहा। इस तरह सपने से उठने पर भी कुछ देर चिंतन रहता है। वो कभी सोचता भी है कि कहाँ हूँ! खिड़की, दरवाजे भी देखता है, जानने की कोशिश करता है कि कहाँ हूँ। यह घटना सबके साथ में होती है। थोड़ी देर में पता चलता है कि फ़लानी जगह पर हूँ। यह क्या हुआ? आप भ्रम अवस्था में चले गये थे। घोर अज्ञान अवस्था में चले गये थे। तब आपकी एकाग्रता नाभि में सिमट गयी थी। वहाँ एकाग्र थे। फिर निद्रा में चेतना का सिमटाव कंठ की बाईं तरफ हो जाता है। जाग जाते हैं तो वो अवस्था गुम हो जाती है। पर थोड़ी देर असर रहता है। कभी कोई नींद से उठता है तो कहता है कि अभी बात मत करो, मूड ठीक नहीं है। क्योंकि वो भयानक चीज़ें देख रहा था। आदमी पागल सपने में होता है। कभी सपने में भी समस्याएँ आती हैं। सपने में भी आदमी को दुख-दर्द आते हैं और सपने में भी आदमी उनका हल ढूँढ़ता है। उदाहरण के लिए कोई सपने में मार रहा है तो आप दिमाग लगाते हैं कि यह आदमी मुझसे तगड़ा है। आप भागते हैं। यानी यहाँ भी दुश्मन मिल जाए तो सावधान हो जाते हैं। साँप मिल जाए तो बचना चाहते हैं। जब समाधान नहीं मिलता है तो उलझ जाते हैं। उस अवस्था में भी ब्रेन काम करता है। फिर डिस्टेंब होता है। जब समाधान नहीं मिल पाता है तो दिमाग पर असर पड़ता है। पर मेडिकल साइंस यहाँ तक नहीं पहुँची है। जब इंसान के सामने समस्याएँ आती हैं तो उन्हें याद करके सो जाता है। जाग्रत से स्वप्न में पहुँचकर भी उनका हल ढूँढ़ने लगता है। क्योंकि

सोचते-सोचते सो गया। कभी प्यास लगती है तो दिल करता है कि पानी पी लें। पर आलस्य के कारण उठते नहीं हैं। नींद में जाते हैं तो वहाँ भी प्यास लगती है। इसलिए एक बार बीच में पानी पी लेना चाहिए। नींद में प्यास अधिक सताती है। एक सवाल उठा कि नींद में प्यास क्यों लगती है? सुबह मुँह कड़वा होता है। स्वांस के कारण प्यास लगती है। नींद में स्वांस जोर से लेते हैं। कभी ऐसी स्थिति में सो जाते हैं कि स्वांस लेना मुश्किल हो जाता है। आमतौर पर जितनी स्वांस मिलनी चाहिए, जाग्रत में मिल जाती है। कड़ियों का मुँह खुला रहता है। क्यों रहता है? वो नासिका से पूरी स्वांस नहीं ले पा रहा होता है तो मुँह से भी लेता है। क्योंकि फेफड़े कमजोर हो गये, इसलिए मुँह का भी प्रयोग कर रहा है। पर यह खतरनाक है। वायुमण्डल में बड़े शुक्राणु हैं, वायरस हैं। नासिका में यह सिस्टम है कि आगे नहीं जाने देती है; पर यह सिस्टम मुँह में नहीं है। मुँह खुला है तो वो शुक्राणु मुँह में प्रवेश कर लेते हैं। तो वो बड़ी ताक़त से स्वांस लेता है। आदमी स्वांस लेने के लिए शक्ति लगाता है। इसलिए दिल के दौरे के चांस नींद में अधिक होते हैं। खराटे लेता है। कभी आप खराटों की बड़ी आवाज़ सुनते हैं। आमतौर पर यह आवाज़ बूढ़ों की होती है, बच्चों की नहीं। बच्चों के फेफड़े ताक़तवर हैं; जितनी स्वांस चाहिए खींच लेते हैं। पर कमजोर फेफड़े वाला स्वांस पूरी नहीं कर पाता है तो खराटे लेता है। यह आवाज़ क्यों निकली? नासिका से भी हवा ली, मुँह से भी ली। स्वांस नलनी के पास दोनों हवा टकराती हैं तो आवाज़ होती है। इसका असर हृदय पर होता है। इसलिए ऐसे लोगों को दिल की बीमारी के चांस अधिक होते हैं। वो सोते-सोते ही शरीर छोड़ देते हैं।

...तो नींद में बड़ी गहरी स्वांस लेता है और ताक़त लगाता है। इसका असर यह होता है कि बहुत प्यास से मुँह कड़वा हो जाता है। यदि उठकर बीच में पानी पी ले तो राहत मिलती है। उस अवस्था में दिमाग

इस तरह का हो गया कि होल्ड नहीं रहता है। कभी नींद में ऐसे अनर्थकारी काम कर बैठता है जो जाग्रत में नहीं कर सकता है। पर नींद की अवस्था एक स्वाभाविक अवस्था है। अगर आपने दारू पिया तो भी मेरे शब्द सामने आयेंगे। अगर माँस खाया तो भी सामने आयेंगे। नींद में भी दुखी हो जाओगे। पर सवाल उठा कि कैसे हुआ? क्यों? क्योंकि दिल से अभी भी आकर्षण था। मौत के समय भी अवस्था बनती है। जहाँ इच्छा करता है, वहीं पहुँच जाता है। वो वहीं पहुँचता है। मुझे एक आदमी ने कहा कि गुरुजी, जब नींद में होता हूँ तो प्रेतात्मा आती है, मुझे बहुत सताती है, मुझे बहुत मारती है। मैंने कहा कि नाम करो। कहा कि तब याद नहीं रहता है। फिर वो बहुत मारती है। बुरी गति होने पर आपका ध्यान आता है। जैसे ध्यान आता है, वो भाग जाती है।

अब उसकी समस्या यह है कि उसे पहले ध्यान क्यों नहीं आया? उसके लिए मैं कहता हूँ कि तुम बहुत गहराई से हमसे जुड़ जाओ, निरंतर ध्यान करते रहो, गहराई से दिल में बसाओ। आदमी को कष्ट होता है तो कहता है कि हाय माँ! अब तो जवान हो गया है और माँ तो बूढ़ी है, क्या मदद कर सकती है? पर अनायास यही पुकार निकलती है। क्यों? क्योंकि उसने बचपन में ही दिल में यह धारणा बना ली थी कि माँ उसकी सबसे बड़ी संरक्षक है। देखा, यह धारणा बनी थी तो स्वाभाविक पुकार निकल गयी। यह दिमाग से नहीं निकलती है। यह अन्दर से निकलती है। यह है अन्दर से। मैंने भी कहा कि भक्ति अन्दर से करना, दिल से करना ताकि किसी भी अवस्था में, कभी भी नहीं भूल पाओगे।

मुझे एक आदमी ने बड़ी प्यारी बात बोली, कहा कि हम नींद में अपना वजूद भूल जाते हैं, इसलिए कभी माई, बहन के साथ भी अनुचित कर्म कर बैठते हैं। हम सबका वजूद नींद में भूल जाते हैं, पर आपको नहीं भूलते हैं। सही बात है। जब मैं आपकी तरफ देखता हूँ तो आपमें चेतनता आ जाती है। इसलिए मेरी कोशिश होती है कि सत्संग में

सबसे निगाह मिला लूँ। उसमें मेरा ध्यान उनकी तरफ होता है जो मेरी बात को समझ रहे होते हैं। यह पता चल जाता है। मेरा विश्वास है कि जितनी भी देर आपको देखता हूँ, आप परम चेतन होते हैं। सच में बहुत चेतन होते हैं। यही बात बंदगी के समय होती है कि यदि निगाह नहीं मिले तो आप उदास हो जाते हैं, कुछ भी अच्छा नहीं लगता है। आप खिन्न हो जाते हैं। मेरा विश्वास है कि जिन चीजों पर महापुरुषों की नज़र पड़ती है वो चेतन हो जाती हैं। जिनकी तरफ रुझान है, उनका कहना ही क्या! दो लोगों की तरफ ध्यान बंट जाता है। एक, जो समर्पित होते हैं। यह स्वाभाविक है। दूसरे, जो विश्वासी हैं। नानक देव तो कह रहे हैं—

नानक जो गुरु सेवे अपना, हौं तिस बलिहारी जाऊँ ॥

... तो अवस्था का खेल है। माता-पिता, भाई-बंधु सब सच लग रहे हैं। वाणियों से पता चलता है कि कुछ भी सत्य नहीं है; पर कितना भी जोर लगाए, इस अवस्था से नहीं निकल पाता है। यह है रहस्य!

दुनिया मिथ्या है, सत्य अनुभव हो रही है। और यह मन है। जिस अवस्था में बैठकर आप दुनिया का भास कर रहे हैं, यह धोखा है। यह माँ है, यह बाप है, यह परिवार है, ये बच्चे हैं, यह सुख है, यह दुख है आदि जो भी अनुभूति हो रही है, यह चेतन अवस्था के कारण है। यह अवस्था भी धोखा है। यह भी मन का नशा है। जैसे आपने नींद में कुछ देखा। नींद में दिखने वाले पदार्थ नित्य लगे। अगर निद्रा में राज्य मिला तो सच्चा लगा। अगर फाँसी की सज़ा मिली तो वो भी सच लगी। राज्य मिलने पर जो सुख यहाँ चेतन अवस्था में मिलता है, वैसा ही वहाँ भी मिला। फाँसी की सज़ा मिलने पर जैसा दुख यहाँ मिलता है, वैसा ही वहाँ भी मिला। वहाँ भी सब कुछ सच अनुभव हुआ। जैसे जाग्रत में कर्म कर रहे हैं तो सच अनुभव हो रहे हैं, ऐसे ही नींद में भी सत्य आभास हुआ। नींद खुलने पर जाग गये तो सब मिथ्या है। पर जितनी देर सपना देख रहे होते हैं, सच लगता है। क्यों? यह अवस्था थी। यह अवस्था किसने

बनाई? मन ने। अभी भी भ्रम अवस्था है, पर सच-ही-सच लग रहा है। यह नहीं है कि 4-5 लोगों को सच लग रहा है। नहीं, सबको। पढ़े-लिखे, विद्वान, ऋषि-मुनि आदि सबको। क्यों? यह झूठ सच लग रहा है। यह अवस्था है। यह नशा है मन का। नशे के कारण सच लग रहा है।

भांग के नशे का अनुभव मैंने एक दिन कुंजवाणी में एक से पूछा तो उसने कहा कि एक बंदा पाँच-पाँच दिख रहे थे। खटिया पर सोऊँ तो लगता था कि आसमान में उड़कर जा रहा हूँ। उलटा सोऊँ तो लगता था कि पाताल में चला जा रहा हूँ। कहा कि पूरी रात पासे ही पलटता रहा। चल रहा था तो लगता था कि पेड़ टेढ़ा है, अभी गिर पड़ेगा। हँस रहा था तो हँसते ही जा रहा था। पता नहीं क्या हो गया था! तब एक ने मेरी हालत देखकर कहा कि इसने भाँग खा रखी है, इसे इमली का पानी पिलाओ। तो मैं होश में आया।

इस तरह गुरु भी एक बूटी देता है। यह नशा उतार देता है। जो खड़े दिख रहे थे, नशा था। क्यों मकान टेढ़ा लग रहा था? यह सब भांग का कमाल था। इस तरह जो सब सच लग रहा है, यह मन का स्वभाव है। जिस तरह भांग का कमाल था कि लग रहा था, उड़ रहा हूँ, इस तरह मन का नशा है कि सच लग रहा है। उसने कहा कि ऐसी गति हो गयी कि फिर कभी नहीं खाई भांग। बस, इसी तरह अवस्था के कारण सपना सच लग रहा था। नशे की अवस्था थी। जिस जाग्रत अवस्था में आप उठते-बैठते हो, यह भी धोखा है। पर जब तक इसके घेरे में हो, सब सच्चा ही लगेगा। साहिब कह रहे हैं—

जगत है रैन का सपना। समझ न कोई यहाँ अपना ॥

संसार स्वप्नवत है। यह है मन की अवस्था कि सच-सच लगे। अगर मन-माया का नशा न होता तो आत्मदेव ने कुछ भी काम नहीं करना था। भांग का नशा न होता तो कभी खटिया पर तो कभी नीचे नहीं होना था। यह नशे के कारण किया। इसी तरह पूरी जिंदगी इंसान कभी लड़के बच्चे, कभी धन, कभी अन्य चीजों में समय गँवा देता है।

जन्म तेरा बातों ही बीत गयो। तूने कबहुँ न नाम जपो ॥

साहिब ने संसार की असारता पर बड़े शब्द बोले, बहुत कुछ कहा। और कहा भी अनूठा।

रहना नहीं देश बीराना है ॥

नशे का देश है, बेगाना देश है।

यह संसार नाव कागज की, बूँद पड़े गलि जाना है ॥

पानी पड़ा तो गल जायेगा।

यह संसार फूल सेमर का, चोंच लगे पछताना है ॥

कभी सुगना (तोता) सेमर के लाल-लाल फूल को सुन्दर और रस वाला मानकर आता है, सोचता है कि अच्छा फल होगा, पर जब चोंच मारता है तो नीरस लगता है, रूई निकलती है।

चोंच लगे पछताना है ॥

जिन चीजों में सुख देख रहे हो, अंतकाल में पछतावा ही मिलेगा।

यह संसार झाड़ अरु झाखड़, उलझ पुलझ मर जाना है ॥

उलझ जाओगे इसमें।

यह संसार रैन का सपना।

समझ न कोई यहाँ अपना ॥

हे बंदे! इसकी ममता छोड़। यह रैन के सपने की तरह है।

हाथ कछु न आना है।

आपके हाथ कुछ नहीं लगेगा।

नाम गुरु का जप ले बंदे, फिर पीछे पछतायेगा ॥

तू कहता है मेरी काया, काया का गुमान क्या।

चाँद सा सुन्दर ये तन तेरा, मिट्टी में मिल जायेगा ॥

वहाँ से क्या तू लाया बंदे, यहाँ से क्या ले जायेगा।

मुट्ठी बाँधे जग में आया, हाथ पसारे जायेगा ॥

बालापन में खेला खाया, आई जवानी मस्त रहा।

बूढ़ापन में रोग सताये, खाट पड़ा पछतायेगा ॥
जपना है तो जप ले बन्दे, आखिर तो मिट जायेगा ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, करनी का फल पायेगा ॥

यह शरीर आखिर में मिट्टी में ही मिलना है, फिर इसका घमण्ड क्या करना ! इसका यदि ठीक-ठीक उपयोग करना हो तो इसको गुरु के नाम सुमिरन में लगा दो अन्यथा एक दिन बेकार में ही नष्ट हो जाना है और फिर हाथ में कुछ नहीं आना है । फिर कर्मानुसार नाना योनियों में भटकना है ।

रहना नहीं देश विराना है ।
यह संसार कागद की पुड़िया, बूँद परे घुल जाना है ॥
यह संसार काँटे की बाड़ी, उलझ-पुलझ मरि जाना है ॥
यह संसार झाड़ और झाँखड़, आग लगे बरि जाना है ॥
कहहि कबीर सुनो भाई साधो, सतगुरु नाम ठिकाना है ॥

यह संसार आपका देश नहीं है । यह संसार तो कागज की पुड़िया की तरह नष्ट हो जाएगा; यह संसार तो काँटों की बाड़ी की तरह दुखदायी है, जिसमें उलझ-उलझ कर मरना ही है; यह संसार तो झाड़ी की तरह है, जो आग लग जाने से जल जायेगा, इसलिए सद्गुरु की शरण में जाओ, सद्गुरु का नाम ही जीव का सही ठिकाना है, वही जीव को सही ठिकाने पहुँचाने वाला है ।

क्या स्वर्ग तो नहीं है आत्मा का देश ! कुछ स्वर्ग की कामना रखते हैं । नहीं, यह काल के देश में आता है । यह आपका देश नहीं है । बड़े कौतुक की बात है कि कोई पितरादि लोकों की कल्पना करता है, कोई तप लोक, कोई देव लोक, कोई ब्रह्म लोक की । तो क्या ये सब ठीक नहीं हैं । साहिब कह रहे हैं कि ये सब काल की लपेट में आते हैं ।

तीन लोक है आवागमणा ।

जो भी तीन लोक के दायरे में है, सब नाश का विषय है । इसकी पुष्टि ऋग्वेद में भी है । ब्रह्माण्ड का अर्थ ही है जो बढ़ता जा रहा है । वैज्ञानिक पुष्टि कर रहे हैं कि यह ब्रह्माण्ड फैलता जा रहा है । सिद्धांत भी

कह रहा है कि जो बढ़ता है, वो घटेगा भी, वो नष्ट भी हो जायेगा। पेड़ भी बढ़ता है, फिर घटता है। इंसान भी बढ़ता जाता है। 60 साल तक बढ़ता जाता है। फिर घटना शुरू हो जाता है। कमर टेढ़ी हो जाती है, आँखों से दिखना कम हो जाता है, दाँत टूटने लगते हैं, पाचन क्रिया के अंग कमजोर हो जाते हैं, चाल में अंतर आ जाता है और एक दिन आता है कि घटते-घटते मर जाता है। जो भी बढ़ रहा है, एक दिन नष्ट होगा। तो यह ब्रह्माण्ड भी नष्ट होगा। फिर यह आत्मा का देश कहाँ हुआ! यह संसार आपका देश नहीं है भाइयो। साहिब ने तुकेबाजी वाली बात नहीं की है। कभी कविताएँ देखते हैं तो तुकबंदी ज्यादा होती है, पर सत्यता कम होती है। लेकिन साहिब की वाणी में सत्यता है।

आज वैज्ञानिक इस डार्क मैटर (dark matter) पर शोध कर रहे हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार इस ब्रह्माण्ड में 80 प्रतिशत अँधेरा है और 20 प्रतिशत रोशनी। और वो कह रहे हैं कि अंधकार ही सृष्टि का आधार है। वो 40 साल से शोध कर रहे हैं, अरबों रुपये खर्च कर दिये, पर यह नहीं जान पाए कि यह (अंधकार तत्व) डार्क मैटर कहाँ से आया। यदि मेरे पास आते तो पाँच मिनट में समझा देना था डार्क मैटर के बारे में।

यह दुनिया पाँच तत्वों की बनी है। पाँच तत्व से भिन्न यहाँ कुछ भी नहीं है। यदि पाँच तत्वों को देखेंगे तो सभी में रमें हुए हैं। आप देखना, वैज्ञानिकों की खोजों में त्रुटियाँ लगेंगी, कई कमियाँ मिलती हैं। वो कहते हैं कि जल स्वाद हीन है, रंगहीन है, गंधहीन है। ये तीनों बातें गलत हैं। पानी में स्वाद भी है, पानी का रंग भी है, पानी में गंध भी है।

पूरी संरचना को देखते हैं। पूरी दुनिया का सृजन शून्य से है। हम पंच भौतिक तत्व की तरफ देखते हैं। इस ब्रह्माण्ड के विषय में सब कह रहे हैं कि नाशवान है। पानी के बुलबुले की तरह सब नाशवान है। दुनिया कैसी है? पंच-भौतिक तत्वों से बनी है। ये तत्व हैं—जल, अग्नि, वायु, पृथ्वी और आकाश। ये पाँच तत्व क्या कर रहे हैं? इस ब्रह्माण्ड के अंदर इन पाँच तत्वों के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। पृथ्वी की उत्पत्ति जल से

हुई। जल की उत्पत्ति अग्नि से हुई, आग की उत्पत्ति वायु से हुई और वायु की उत्पत्ति आकाश से हुई। जब महाप्रलय आती है तो इसी तरीके से विनाश भी होता है। जिस विधि से दुनिया बनी है, उसी विधि से विनाश हो जाता है। जब जल-प्रलय आती है तो पूरी पृथ्वी का विनाश हो जाता है। वास्तव में पूरी पृथ्वी है ही जल। वैज्ञानिक कहते हैं कि पृथ्वी सूर्य का अंश है, उसका कतरा है। सूर्य क्या है? गैसे ही तो है। इंसान के बच्चे की सूरत उससे मिल रही है। जो तत्व सूर्य में है, वो ही पृथ्वी में है। पृथ्वी जल से उत्पन्न हुई। कैसे हुई? आप बाल्टी में पानी रख दो। स्वाभाविक रूप से कुछ समय में पानी पर काई आ जायेगी। कभी नहरों में देखते हैं कि पानी नीला आता है। यह है काई। यह काई कहाँ से आई? जैसे आग का स्वभाव है—तपश और रोशनी, इसी तरह जल का स्वभाव है—काई। एक बाल्टी पानी रख दो, धीरे-धीरे काई आने लगेगी। जब काई आयेगी तो लंबे-लंबे रेशे हो जायेंगे। पर काई की उत्पत्ति तब होगी, तब पानी स्थिर रहेगा। बहते पानी में नहीं होगा। इसलिए नदियों का पानी नीला नहीं है। पर डैम का पानी नीला होता है।

डॉ० सैमूर भी कह रहे हैं कि धरती को बने साढ़े चार करोड़ साल हुए हैं। जैसे दूध पर मलाई आ जाती है, ऐसे काई जल पर होते-होते परिपक्व हो जाती है। इस सिद्धांत से पृथ्वी की उत्पत्ति जल से होती है। महाप्रलय में भी पृथ्वी को जल विलीन कर लेता है। बड़े झटके लगते हैं पृथ्वी को तब। बड़ी स्पीड में पृथ्वी सूर्य के गिर्द घूम रही है। उस समय ग्रह-नक्षत्र अपनी निर्धारित दिशा से भटक जायेंगे और आपस में टकरा-टकराकर नष्ट हो जायेंगे। अभी तो वैज्ञानिक भी कह रहे हैं कि 100 करोड़ साल बाद सूर्य ऑफ हो जायेगा और ग्रह भटककर आपस में टकरायेंगे, विनाश होगा।

...तो जल-ही-जल हो गया धरती पर। फिर सूर्य धरती के नज़दीक आ जायेगा। जब धरती पर 50 प्रतिशत तापमान हो जाता है तो क्या होता है? सोचो तो सही, फिर जब हज़ारों प्रतिशत तापमान हो जायेगा तो कैसा होगा!! तब सूर्य जल को शोषित कर लेगा। आप हम

देखते भी हैं कि आग में जल को शोषित करने की ताकत है और जल में आग का अंश है। आग में जल को मिटाने की ताकत है। तो इतना तापमान हो जायेगा कि धरती का सारा जल उबलकर वाष्प बन जायेगा। गैस-ही-गैस हो गयी, यानी हवा। हवा सूर्य को समाप्त कर देती है। आप देखें, दीपक जला है, फूँक मारो तो बुझ जाता है। वायु में आग को नष्ट करने की क्षमता है। इस तरह आग समाप्त होगी। यानी शेष कुछ न बचा। अब हवा रहेगी। उसे आकाश अपने में विलोम कर लेगा। अब पाँचवाँ तत्व आकाश रह जाता है। इसी को सब परमात्मा कह रहे हैं। यह पाँचवाँ तत्व है। तो ब्लैक मैटर या डार्क मैटर है, आकाश तत्व। यह हर जगह है। यह पूरी दुनिया अंधकूप है। जैसे कमरे में दीपक जलाते हैं तो प्रकाश हो जाता है। पर दूसरे कमरे में रोशनी नहीं पहुँचती है। यह है डार्क मैटर। सूर्य को हटाइए तो अंधकार ही अंधकार है। 40 साल से वैज्ञानिक शोध कर रहे हैं, पर समझ नहीं पा रहे हैं। वो केवल कह रहे हैं कि यह धरती का आधार है। साहिब ने वैज्ञानिक तरीके से समझाया, शून्य के पार महाशून्य के बारे में भी कहा। यह एक तर्कपूर्ण बात है। शून्य वो है, जहाँ आटिकॅलस हैं, पर जहाँ आटिकॅलस नहीं हैं, वो महाशून्य है। जैसे एक प्लॉट है, उसमें थोड़ी जगह पर मकान बनाया, बाकी खाली है। इस तरह शून्य में जहाँ तक आटिकॅलस हैं, वो शून्य कहलाती है। पर एक जगह जहाँ आटिकॅलस नहीं हैं, महाशून्य कहलाती है। शून्य के अंदर 14 लोक हैं, 3 लोक के अंदर 14 लोक हैं। शून्य से परे सोहं का स्थान है। इस शून्य का स्वामी निरंजन है। इसी का ज्ञान हमारे पूर्वजों ने लिया। इस शून्य के अंदर जो भी है, वो सुरक्षित नहीं है।

आप विश्वास करें, यह देश आपका नहीं है।

रहना नहीं देश विराना है ॥

यह बेगाना देश है।



देह धरे का दंड है

संसार की ओर रुझे हुए लोगों के दिल में परमात्म प्राप्ति की महत्ता जाग्रत करना सत्संग का पहला लक्ष्य है। सांसारिक आकर्षणों में फँसे हुए लोग मोक्ष की महत्ता नहीं जानते हैं, क्योंकि उन्हें संसार सुखद प्रतीत होता है। जब तक संसार सुखद प्रतीत होता रहेगा, तब तक परमात्म प्राप्ति का शौक पैदा नहीं हो सकता। इसलिए दुनिया के महादुखों से अवगत कराना ही सत्संग का प्रथम लक्ष्य है।

सच में यह संसार विशाल दुखों का घर है। बहुत कष्ट हैं यहाँ। इसमें सुख को खोजने वाले मंदबुद्धि उस हिरण की तरह हैं, जो रेगिस्तान में पानी को खोजता फिरता है। दूर से चमचमाती हुई रेत उसे पानी का भ्रम देती है और हिरण भागता हुआ जाता है, पर नहीं मिल पाता है उस प्यासे को पानी। कहाँ से मिले। उस रेगिस्तान में पानी है ही नहीं। इसी तरह इस संसार में सुख है ही नहीं, केवल इच्छाओं में नजर आता है, कहीं दू...र। इसलिए इसे दुखों का सागर कहा। इसमें बड़ा दुख है। जन्म से ही कष्ट है। महा कष्ट है। आओ देखते हैं, क्या कष्ट है। सबसे पहले उदर कष्ट। माँ के पेट में बड़ा कष्ट मिला। तीन ताप सहने पड़े। एक तो जठर में ताप है, शरीर पकता है। दूसरा बालक का मुख मल-मूत्र की थैलियों के आसपास था, महा दुर्गंध थी। तीसरा, संकरे मार्ग में वो फँसा हुआ था, जहाँ हिलने-डुलने की गुंजाइश भी नहीं थी। यह कोई छोटा कष्ट नहीं है। सप्त कुंभी नरकों से भी अधिक असहनीय कष्ट है। सप्त-कुंभी नरकों का वर्णन करते हुए कबीर साहिब ने बताया है कि नरकों में बड़े

बड़े विशाल सात घड़े हैं, करीब करीब 12 लाख माइल ऊँचे तथा इतने ही चौड़े हैं। आधे भरे हुए, आधे खाली हैं। किसी में मवाद, किसी में विष्ठा, किसी में मूत्र, किसी में रक्त और किसी में कीचड़ आदि भरा हुआ है। पापियों को वहाँ अनेक यात्राएँ मिलती हैं। वे वहाँ से बाहर आने के लिए आकुल होते हैं, अपने पापों के लिए क्षमा माँगते हैं। पर वहाँ उन्हें क्षमा नहीं मिलती। जब जब वे बाहर आकर थोड़ी देर राहत पाने का प्रयत्न करते हैं, तब तब यम के विकराल निर्दयी दूत उन्हें भालों की नोक से मल-मूत्र आदि में धकेलते हुए निरंतर कष्ट सहने को बाध्य करते हैं, क्योंकि उनका यही काम है।

अनेक पाप करने पर नरक में स्थान मिलता है ताकि पापियों को अपने किये की सजा मिल सके। पर कबीर साहिब कहते हैं कि वहाँ पर भी जीव को इतना कष्ट नहीं मिलता है, जितना कि माँ के पेट में मिलता है।

...फिर जन्म के साथ ही दुखों की एक नयी कहानी शुरू हुई। माँ के पेट में मिला हुआ कष्ट भूल गया। यदि याद रहता तो मोक्ष की महत्ता का ज्ञान उसी समय हो जाता। शुकदेव माँ के पेट से ही ज्ञान लेकर आया था, इसलिए तो बाहर ही नहीं आ रहा था। साढ़े सात साल का होकर बाहर आया था। सब ऋषियों ने मिलकर उससे कहा कि बाहर आ, नहीं तो तेरी माँ मर जायेगी, तुझे पाप लगेगा। पर शुकदेव संसार के कष्टों से घबराकर बोला था कि दुनिया झूठी है, मैं नहीं आता बाहर, मैं यहीं बैठकर प्रभु का भजन करूँगा। ऋषियों द्वारा बहुत विनती करने पर ही वो बाहर आया था।

...माँ के पेट में जो कष्ट मिला, उसे बंदा भूल गया। संसार के आकर्षणों में खो गया। यदि मोक्ष की राह नहीं पकड़ी तो फिर फिर महानरक में आना पड़ेगा-

कबीर वा दिन याद कर, पग ऊपर तल शीश।

मिरत लोक में आय के, बिसर गया जगदीश॥

हम भूल जाते हैं। निरंतर पीड़ा सहन कहते हुए जब कुछ पल के लिए राहत मिलती है तो हम पिछली पीड़ा को भूल जाते हैं। ऐसा सबके साथ होता है। बचपन में खायी हुई मार को बड़े होकर सब भूल जाते हैं। इस तरह हम युगों युगों से यम की मार खाते आ रहे हैं, अनेकानेक दुख भोगते आ रहे हैं, चौरासी के चक्कर काटते आ रहे हैं। कभी चींटी बन रहे हैं, कभी मच्छर बन रहे हैं, कभी गधा बन रहे हैं...बन नहीं रहे हैं, बना दिये जा रहे हैं।

जैसे बाजीगर बंदर से जो नाच चाहता है, नचा लेता है, इसी तरह कोई है जो आत्मा से मनचाहा नाच नचा रहा है।

आदमी शादी करता है, फिर बच्चे होते हैं, उनके लालन-पालन में लग जाता है, कई झंझटों में फँस जाता है। यह सब मन करवाता है। जैसे मदारी बंदर को घर घर नचाता है, इसी तरह मन आत्मा को नाना योनियों में भरमा रहा है। पर विडंबना यह है कि हम भूल जाते हैं। नाना योनियाँ इसीलिए बनाई गयी हैं ताकि जीव भूला रहे।

हम भूल रहे हैं। जरूर भूल रहे हैं। इसका सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि जब हम नींद में चले जाते हैं तो अपने स्थूल शरीर को भूल जाते हैं। उस समय इस स्थूल शरीर से हमारा कोई संबंध नहीं रहता और नींद के दृश्यों-परिदृश्यों में ही हम खो जाते हैं। वहाँ यदि पीड़ा होती है तो हम उतने ही कष्ट का अनुभव करते हैं, जितना कि इस शरीर में कोई पीड़ा होने पर। यदि वहाँ सुख मिलता है तो भी उतने ही सुख का अनुभव होता है। जागने पर सब समाप्त हो जाता है। यह तो इसी जीवन में, इसी शरीर में हमारे साथ होता है कि 10-15 मिनट में ही जब हम जाग्रत से स्वप्न की दुनिया में प्रवेश करते हैं तो जाग्रत वाले शरीर की सुधि पूरी तरह भूल जाते हैं और स्वप्न में मिले सूक्ष्म शरीर में रम जाते हैं, अतः पिछले जन्मों की सुधि हमें कैसे रह सकती है। नहीं रह सकती।

मृत्यु के समय भी हमारी आत्मा को दूसरे शरीर में डाला जाता है। उस समय हमें वहाँ कुछ भी याद नहीं रहता, क्योंकि काल हमें तब स्वप्नावस्था में कर देता है और हम भूल जाते हैं।

मृत्यु के समय जो कष्ट होता है, उसे मृत्यु शैय्या पर लेटा व्यक्ति ही जान सकता है। कहते हैं कि हजार बिच्छुओं के एक साथ ढंक मारने की पीड़ा और भयानक मानसिक पीड़ा दोनों एक साथ मिलती हैं। यदि जीवन में किसी का कुछ छिन जाए तो आकुलता हो जाती है। किसी की स्त्री चली जाए तो दुख हो जाता है। बेटा चला जाए तो कष्ट हो जाता है। मनुष्य बेबस हो जाता है। अतः वो दुख कैसा होगा, जब मौत आकर सबकुछ एक साथ छीन लेती होगी।

फिर जीवन भी तो अनेक समस्याओं, झंझटों, परेशानियों, दुखों, बीमारियों आदि से गुजरा हुआ होता है। वहाँ भी तो मनुष्य ने दुख ही दुख झेले होते हैं, क्योंकि वास्तव में संसार है ही दुखों का घर। बचपन से ही बड़ा कष्ट है।

एक साल तक की अवस्था अत्यंत दुखदायी थी। तब करवट लेने की भी क्षमता नहीं थी। अगर कष्ट हुआ तो बोल भी नहीं सका। एक वर्ष की यह अवधि होते हुए ही बीती। फिर थोड़े समय बाद जब बैठना सीखा तो भी अज्ञानता रही, कभी खतरनाक वस्तुओं को छुआ, कभी गिरने का भय रहा। यह समय जानवरों की सी चाल चलते हुए कष्ट में ही बीता। दो तीन साल में जब चलना-फिरना भी सीख लिया तो भी परम अज्ञान रहा, कई भूलें की, चोटें लगी, मारें खायीं। चार पाँच साल का हुआ तो विद्यालय में पढ़ने भेजा गया। पढ़ना-लिखना तो बहुत ही असाध्य लगा। यही कारण है कि बालक लोग स्कूल नहीं जाना चाहते हैं। बालक को पढ़ना लिखना जितना असाध्य लगता है, आम आदमी को भक्ति करना भी उतना ही असाध्य लगता है। ...फिर स्कूल में भी अच्छी खासी पिटाई हुई।

अनेक दुखों को झेलने के बाद जब बड़ा हुआ तो सुख की तलाश करने लगा। पहले तो सुख नौकरी पेशे में प्रतीत हुआ, सोचा कि नौकरी मिल जाएगी तो सुखी हो जाऊँगा। लेकिन जब नौकरी में सुख नहीं मिला तो फिर स्त्री में सुख दिखाई देने लगा, सोचा कि शादी होने पर सारा सुख मिल जायेगा। लेकिन नहीं। नहीं मिला सुख वहाँ भी। यह था जल मृग-मरीचिका का। दाम्पत्य जीवन तो दुखों से भरा हुआ था। सच है, यदि इसमें आनन्द होता तो मानव सन्यास ग्रहण कर आनन्द की तलाश में नहीं निकलता। अतः जब शादी होने पर भी सुख नहीं मिला तो बच्चों में सुख की प्रतीति होने लगी। सुख कहीं नहीं था, केवल प्रतीत हुआ। यदि कुछ मिला तो दुख ही मिला। मृग मरीचिका के जल की तरह सुख केवल प्रतीत होता रहा।...वाह, वाह, बच्चा भी आ गया। 'पुत्र समान को है बैरी'। बेटे से बड़ा दुश्मन कोई नहीं होता। क्योंकि 'जन्मत ही धारा हर लेई'। जन्मते ही पत्नी को छीन लेता है। क्योंकि बच्चा आने पर स्त्री का आधा प्रेम उसमें चला जाता है, जिससे पति पत्नी का आपसी प्रगाढ़ प्रेम आधा रह जाता है।

...उसके बाद जब वही बच्चा बड़ा हुआ तो अनेक प्रकार की मुसीबतें खड़ी कर दीं, कई समस्याओं में उलझाए रखा, बड़ा तंग किया। शादी हो जाने पर पराया हो गया। जीवन में अनेक परेशानियाँ आती रहीं। एक खत्म हुई तो दूसरी दो और आ गयीं, सुख नहीं मिला। आशा की कुछ किरणें पोते-पोतियों में दिखाई देने लगीं। मृग-मरीचिका का जल फिर नजर आने लगा। देखते ही देखते बुढ़ापा आ गया और शरीर में अनेक रोग हो गये, मृत्यु शैय्या पर पड़ गया।

कहत कबीर सुनो भाई साधो, यह रुई लपेटी आग है ॥

यहाँ सुख नहीं है। बस आभास हो रहा है। माँ के पेट में दुख है, यह तो दिख रहा है। कुछ सोचते हैं कि छोटा बच्चा सुखी है। नहीं, यह कहना बेवकूफी होगी। बहुत दुखी। अपना दुख बोल भी नहीं सकता है।

बिस्तर पर पेशाब करना, चोटें लगना। पूछना चाहता हूँ कि यह है सुख ! कैसा सुख है यह ! इतना अज्ञान है वहाँ। सुख है क्या ! अज्ञानावस्था में सुख कैसा ! तो कभी स्कूल पढ़ने वाली स्थिति आती है तो सोचता है कि पढ़-लिखकर कुछ बनूँगा तो सुख मिलेगा, नौकरी करूँगा तो सुख होगा। नौकरी के बाद शादी, शादी के बाद बच्चे, बच्चों के बाद उनके बच्चे और फिर आखिरकार मृत्यु में सुख की तलाश इंसान करता है। सच है, जब संसार के किसी भी पदार्थ में सुख नहीं मिलता तो आखिर में बूढ़ा होकर जब कई रोगों का शिकार होता है, मृत्युशय्या पर होता है तो कहता है कि हे भगवान ! अब किसलिए रखा है, उठा लो। यानी मरकर सुख प्राप्त करना चाहता है आखिर में। क्योंकि संसार में कुछ सुख नहीं मिला। जीवन में आगे-2 दलदल में फँसता जाता है और सोचता है कि आगे सुख मिलेगा। पर कहीं भी सुख न पाकर आखिर मरने के बाद सुख की कल्पना करता है।

जो तस्वीर मैंने जीवन की रखी, क्या इसे समझने के लिए किसी पी.एच.डी. की ज़रूरत है ! सहजो बाई अपनी वाणी में जीवन के दुखों का वर्णन करती हुई कह रही हैं—

पापी जीव गर्भ जब आवै। भवन अँधेरे बहु दुख पावै ॥
तल मूड़ी ऊपर को पाऊँ। मुख लिंगी (पेशाब) और बिष्टा ठाऊँ ॥
जठर अगिन इक रस जहाँ लागी। अधिकत पै जहाँ पतित अभागी ॥
खट्टा मिट्टा माता खावै। लागि छुरी सी बहु दुख पावै ॥
आप दुखी माता दुख पाया। दसें महीने जग में आया ॥
जग जंजाल देख कर रोया। नर नारी मिलि सभी बिगोया ॥
माया मोह पवन लगि भूला। सहजो गोद पालने झूला ॥
नाते सभी लगे उठि झूले। पड़ा बंध में कै से छूटे ॥

सहजो बाई कह रही हैं कि जब पापी जीव माता के गर्भ में आता है तो उस अँधेरे घर में बड़ा दुख पाता है। उसका सिर नीचे और पाँव

ऊपर की ओर होते हैं और उसका मुख मल-मूत्र के स्थान के पास होता है। वो अभागा वहाँ जठराग्नि को सहता है। माँ जो भी खट्टी-मीठी वस्तुएँ खाती है, उसे सब छुरी के समान दुखदायी लगती हैं। खुद भी दुखी होता है और माता को भी दुखी ही करता है। फिर दसवें महीने में संसार में आता है। तब संसार के झंझट को देखकर रोता है। सब आकर तंग करते हैं। जब माया, मोह की हवा लग जाती है तो सब भूल जाता है और कभी पालने में तो कभी गोदी में झूलने लगता है। अब कई रिश्तों में बँध जाता है। इस बंधन से अब कैसे निकल सकता है !

कोई कहै मैं इस की माई। कोई कहै लाला की दाई ॥
 कोई कहै यह सुन्दर हीरा। गोद खेलाऊँ अपना बीरा ॥
 कोई कहै मैं या का बापू। बालक पाया पुत्र प्रतापू ॥
 कोई कहै मैं या की बूवा। चाचा कहैं भतीजा हूवा ॥
 कोई कहै यह पोता बाला। कोई कहै यह मेरा साला ॥
 कोई कहै यह मेरा भाई। कोई कहै मैं दादी आई ॥
 कोई कहै मैं या की बहिनी। कोई कहै मैं या की नानी ॥
 कोई कहै मैं इसका मामा। लाया खाँड़ खडूले जामा ॥
 कहै मैं या का नाना। मामी ने भांजा करि जाना ॥

कोई कहता है कि मैं इसकी माँ हूँ; कोई कहता है कि मैं इसकी दाई हूँ; कोई कहता है कि यह मेरा हीरे की तरह भाई है, मैं इसे गोद में खिलाऊँगी; कोई कहने लगता है कि मैं इसका बाप हूँ, मैंने अपने पुण्यों के प्रताप से इसे पाया है; कोई कहने लगता है कि मैं इसकी बुआ हूँ; कोई कहने लगता है कि मैं इसका चाचा हूँ, मेरा भतीजा आया है; कोई कहने लगता है कि यह मेरा भाई है; कोई कहने लगता है कि मैं इसकी दादी हूँ; कोई कहने लगता है कि मैं इसकी मासी हूँ; कोई कहने लगता है कि मैं इसकी नानी हूँ; कोई कहने लगता है कि मैं इसका मामा हूँ; कोई कहने लगता है कि मैं इसका नाना हूँ और मामी आकर कहने लगती है कि मेरा

भांजा हुआ है। कोई कहने लगा कि यह मेरा पोता है; कोई कहने लगा कि यह मेरा साला है।

सब नाते उठि उठि लगे, रोम रोम लिया बंध।

सहजो यह भी रलि मिला, फिर फिर भूला अंध॥

कह रही हैं कि सब रिश्तेदार मिलकर उसके रोम-रोम को मानो बाँध लेते। फिर यह भी सबके साथ मिलकर भूल जाता। यह भी उन्हें अपना मानने लग जाता है।

गूंगा घी कहना जब सीखा। सेढू नाम मदारी भीखा॥

माय बाप ले नाम पुकारें। जब किलकै तब तन मन वारें॥

मुख चूमैं और कंठ लगावैं। देवी देवा बहुत मनावैं॥

रोग होय तो बहु दुख पावै। ले ले जहाँ तहां पग धावै॥

कबहूँ झरि पिंजर है जावै। कबहूँ खाँसी बहुत सतावै॥

चलै पेट कबहूँ बहु रोवै। खीजै बहुत नेक नहिं सोवै॥

ज्वर कबहूँ दुखें दोउ नैना। पुनः पुनः दुख लहै न चैना॥

निकसै दाँत दाढ़ दुख भैया। जब सँ जन्म सदा दुख पैया॥

दुक्ख सुक्ख बढ़ने लगा, पाँच बरस भइ देह॥

जब पढ़ने बैठाइया, अपनी विद्या लेह॥

जब बोलना सीख लेता है तो माता पिता का नाम लेकर पुकारने लगता है। माता पिता उसकी किलकारियाँ सुनकर तन-मन उसपर वारते हैं। वे कभी उसका मुख चूमते हैं तो कभी गले से लगाते हैं। देवी-देवताओं को मनाने का सिलसिला भी शुरू हो जाता है कि हमारा बच्चा ठीक-ठाक रहे। जब-जब रोग होता है तो बहुत दुख मिलता है, कभी कहीं तो कभी कहीं लेकर जाना पड़ता। कभी तो सूखकर काँटा हो जाता है तो कभी खाँसी तंग करती है। कभी पेट-दर्द सताता है, सोने भी नहीं देता, रोता ही रहता है। कभी बुखार आता है तो भी दुख ही मिलता है। बार-बार दुख ही मिलता है। चैन से बचपन गुज़रता ही नहीं। दाँत और

दाढ़ निकलने का दुख भी मिलता।

इस तरह जन्म से ही दुख-ही-दुख मिलते हैं। इन्हीं दुखों को सहते-सहते बड़ा होता है। पाँच साल का हो जाता है तो स्कूल में पढ़ने भेजा जाता है।

बालक का चित खेल मँझारे। ज्यों ज्यों पाधा छड़ियन मारै ॥
बैठि रहै तौ पकड़ बुलावै। बाँधि बाँधि दुख देत पढ़ावै ॥
मन ही मन सोचै दुख भारी। दुर्जन भये बाप महतारी ॥
दुख दे दे कर बहुत पढ़ाया। खोट कपट में धना गँवाया ॥
ऐसे भया बरस द्वादस का। रहा नहीं उनहूँ के बस का ॥
मन में आवै सो पुनि करई। मात पिता सँ नेक न डरई ॥
खेलै खेल बहुत परकारा। सबही विधि लड़का पन हारा ॥
बालपना हँस खेल गँवाया। गुरु की टहल सरन नहिं आया ॥
पाप पुत्र कूँ ना पहिचाना। सहजो कर्त्ता राम न जाना ॥

अब आचार्य की सोटियाँ पड़ती हैं। तब खेल याद आता है। यदि बैठा रहता तो पकड़कर बुला लिया जाता है और बाँध कर जबरन पढ़ाया जाता है। तब मन में सोचने लगता है कि यह तो बड़ा दुख है। तब माता-पिता दुर्जन लगने लगते हैं। दुख दे देकर पढ़ाया जाता है। अब खोट-कपट आदि भी आ जाते हैं। जब 12 साल का होता है तो माता के बस में नहीं रहता, उनका डर नहीं रहता; जो मन में आता है, वही करता है, बहुत खेल खेलने लगता है और इस तरह बचपन ऐसे ही बीत जाता है, खेल में ही गँवा देता, गुरु की शरण में नहीं आता, इसलिए पाप-पुण्य की पहचान नहीं होती और न ही परमात्मा की पहचान होती है।

तरुनापा भया सकल सरीरा। अँधा भया बिसरि हरि हीरा ॥
विषय वासना के मद मातो। अहं आपदा के रंग रातो ॥
मूँछ मरोड़ अकड़ता डोलै। काहू तें मुख मीठ न बौलै ॥
कहै बराबर मेरे नाहीं। बुद्धिवान कोई न जग माहीं ॥

मैं बलवान सबन पर भारी। द्रव्य कमाऊँ नरन अगारी ॥
 महा दुखी सुख मान लियो है। मोह अमल अज्ञान पियो है ॥
 भया कुटम्बी जब सुख कैसा। सहजो बन्ध पड़ै कोई जैसा ॥
 सुत पुत्री उपजै मरि जावै। सोच सोच तन मन दुख पावै ॥

जवान हो जाता है। प्रभु को भूलकर अब विषय-वासनाओं और अहंकार में खो जाता है। मीठी वाणी तो भूल ही जाती है, सबसे अकड़कर बोलने लगता है, सोचने लगता है कि मेरे समान बलवान तो कोई भी नहीं है, मेरे समान बुद्धिमान भी कोई नहीं है, मैं सबसे अधिक पैसा कमाऊँगा। महा दुखी होकर भी अपने को सुखी मानता है, जानता नहीं कि मोह-माया और अज्ञान का नशा आ गया है। अब विवाह के बाद अपना परिवार हो जाता। अब कैसा सुख! अब तो जैसे कोई कैद हो जाता है, ऐसे ही बंधन में पड़ जाता है। पुत्र-पुत्रियाँ होते हैं और यदि जल्दी ही मर जाते हैं तो सोच-सोच कर दुख ही पाता है।

कहै हवेली एक बनाऊँ। अपने कुल में इज्जत पाऊँ ॥
 कलपै बहुत सीस धुनि माथा। सहजो दुखी कुटम्ब के साथ ॥
 आवै ना सतसंगति माहीं। कुटम्ब जाल धन छुटकारा नाहीं ॥
 हरि की भक्ति नहीं लाई। दारा सुत धन की गुमराई ॥
 दुख धन्धा करि जन्म गँवाया। सहज बूढ़ापन आया ॥

अपने कुल में इज्जत पाने के लिए एक बढिया कोठी बनाने की सोचने लगता है। इसमें भी बड़ी माथा पिच्ची करनी पड़ती है, कुटुम्ब के कारण दुख ही पाता है। कुटुम्ब जाल से छूटकर सत्संग में नहीं पहुँच पाता है। स्त्री, धन, पुत्र आदि के अहंकार में खोकर प्रभु की भक्ति नहीं करता है। संसार के दुख देने वाले धन्धे में ही लगा रहता है और देखते-ही-देखते बुढ़ापा आ जाता है।

डबडबाय आँखन में पानी। बूढ़े तन की यही निसानी ॥
 नैनन में जल भरि भरि आवै। दाँत हिलें दारुन दुख पावै ॥

गोड़े थके दरद बाई का। कफ खाँसी हिये दुख वाही का॥
 खों खों करै नींद नहिं आवै। आप जगै और लोग जगावै॥
 बेबस इन्द्री सिथल भई हैं। अब क्या जीतै सहज गई हैं॥
 पूत बहु लख नाक चढ़ावैं। बहुत पुकारै निकट न आवैं॥
 निहुरि चलै लकड़ी लै हाथा। स्वजन कुटम्ब नहिं दुख के साथ॥
 असी बरस लग बीते साठी। सहजो कहै बहक बुधि नाठी॥

आँखों में अब पानी भरा रहने लगता है। यही तो बुढ़ापे की निशानी है। अब दाँत हिलने लगते हैं तो बहुत दुख पाने लगता है। अब घुटने काम नहीं करते, जल्दी थक जाने लगते हैं। कफ और खाँसी का दुख भी सताने लगता है। रात भर खों-खों करके खुद तो परेशान होने लगता है, साथ ही दूसरों को भी जगाने लगता है। अब तो बेबस हो जाता है, क्योंकि इन्द्रियाँ शिथिल पड़ जाती हैं। बेटे-बहु आदि हालत देखकर नाक चढ़ाने लगते हैं। उन्हें पुकारता है, पर सब दूर-दूर रहने लगते हैं। अब तो सोटी का सहारा लेकर चलने लगता है, भला कुटुम्बी लोग दुख में क्योंकर साथ देंगे! 80 साल का हो जाता है, अब सठिया जाता है, बुद्धि काम करना बंद कर देती है।

लागी बिरध अवस्था चौथी। सहजो आगे मौत हि मौत॥
 हाथ पैर सिर काँपन लागे। नैन भये बिनु जोति अभागे॥
 सर्वन तें कछु सुनियत नाहीं। दाँत दाढ़ नहिं मुख के माहीं॥
 कंठ रुके कफ बाई घेरे। हाड़ हाड़ सब दुख में पेरे॥
 बात कहै घर बाहर हाँसा। कुटम्ब दियौ मिल पौरी बासा॥
 मन चालै सब रम कूँ तरसै। नर नारी कोई हितू न दरसै॥
 आप आप कूँ इत उत डोलै। बिन पौरुष कोई मुखहुँ न बोलै॥
 जिन कारन पचिया दिन रातो। बात करैं नहिं कुटम्ब संगीति॥
 सुत पोते दुर्गध घिनावैं। टहल करैं तब नाक चढ़ावैं॥
 तिन के मोह तजे जगदीसा। अब मन में कलपै धुनि सीसा॥

अब तो चौथी अवस्था आ जाती है; अब तो आगे मौत ही खड़ी है। हाथ-पैर काँपने लगे, आँखों से दिखाई देना भी बहुत कम हो जाता है; कानों से सुनाई पड़ना भी बंद हो जाता है; दाँत भी चले जाते हैं, कंठ से आवाज़ निकालना भी मुश्किल हो जाता है। कफ, पित्त और वायु घेर लेते हैं। अब तो सब मज़ाक लेने लगते हैं; द्वार में पास ही खटिया बिछा दी जाती है। अब कोई भी अपना दिखाई नहीं देता है। जिनके कारण रात-दिन मेहनत की, वे बात करना भी छोड़ देते हैं। अब तो उन्हें दुर्गंध आती है उससे। यह सब देख अब मन-ही-मन पछताने लगता है कि जिनके मोह में प्रभु को भुला दिया, वे ही पराए हो गये।

कफ सरका गल रोक लिया है। कंठ रुके के कोई नहीं जिया है ॥
घुटरघुटर जब करने लगा। चेतनता सब तन का भागा ॥
नाते घिर घिर सब ही आये। थोथे अपने नेह जनाये ॥
आँखन सूँ जल भरि भरि लावैं। आपस में सब मोह दिखावैं ॥
हाय हाय कर कोई बोलै। कोई ढूँढ़त औषध डोलै ॥
कोई कहै कछु द्रव्य बतावो। घरा ढका कछु करि जदिखावे ॥
वाकूँ सुधि नहीं अपने तन की। जम किंकर मारत हैं घन की ॥

कफ गले में रुक जाता है। ऐसे में मौत से कौन बचा है! तन की चेतनता सब समाप्त हो जाती है, मुँह से घुटर-घुटर करने लगता है, सब रिश्ते-नाते दिखावा करने के लिए पहुँच जाते हैं, आँखों में आँसू भरकर अपना थोथा प्रेम दिखाने लगते हैं। कोई हाय-हाय करने लगता है तो कोई दवा ढूँढ़ने लगता है। पर उसे तो अपने शरीर की कोई सुधि ही नहीं रहती, यम के दूत हथौड़े मारकर प्राण निकालते हैं।

कोई कहै भज रामहि रामा। सहजो कहै कौन अब कामा ॥
आगू सूँ हरि सुमरे नाहीं। पचि पचि मुआ कुटम्ब के माहीं ॥
हिरदे रखता राम सँगाती। तौ रच्छा अब सब बनि आती ॥
आगू सूँ अभ्यास जो रहता। तौ अब मुख सूँ हरि हरि कहता ॥

तन की पीड़ा सब मिट जाती। यम की तो पै कहा बसाती ॥
 राम राम मरते तू कहता। जो आगू सूँ कहता रहता ॥
 तैं मन दिया कुटुम्ब का साथ। हो बैठा घर बाहर नाथा ॥
 अपना किया भुगत रे जीया। जौ गुरु पूरा ढूँढ़ न कीया ॥

अब कुछ कहने लगते हैं कि राम का नाम जपो। पर अब क्या लाभ! पहले तो प्रभु का भजन किया नहीं, कुटुम्ब के जाल में ही लगा रहा। यदि पहले प्रभु का भजन किया होता, तो प्रभु सहायक होते। पहले प्रभु का भजन किया होता तो अंत समय भी उसका नाम मुँह से निकल पाता और शरीर की सारी पीड़ा समाप्त हो जाती, यम का इतना कष्ट न सहता। पूरे गुरु को खोज कर नहीं किया, इसलिए अब तो अपना किया हुआ ही भुगतना पड़ता है।

पकरि बाँधि यम ले चले, धर्म राय के पास।

कई बार आग गये, छप्पन जहाँ तिरास ॥

कई भांति के दंड हैं, सहजो नाना त्रास।

नरक कुण्ड दुख भुगत करि, फिर चौरासी बास ॥

अब तो यम के दूत बाँध कर धर्मराय के दरबार में ले जाते हैं। अब नरक में भेज दिया जाता है। वहाँ अनेक तरह की सज़ा भुगतने लगता है और ये सब दुखों को भुगतकर फिर चौरासी में आ पहुँचता है।

इस तरह सारा जीवन कष्टों में ही बीता। सुख मिला ही नहीं। सुख प्राप्ति की सारी तमन्नाएँ दिल में ही रह गयीं। फिर यमराज के दूतों से मुलाकात का समय आ गया। जन्म की तरह यह कष्ट भी असहनीय था। जिन जिन चीजों से प्यार किया, वो सब एक साथ, एक ही झटके में छीन ली गयीं। यह दुख कल्पना से भी परे था। किसी कवि ने कितना सटीक कहा है—

बचपन बीता आई जवानी, फही बुढ़ापे नै पाया फेरा।
कप्फ जुकाम ते तापा ने घेरा, बीमारियां लाइ लेआ डेरा।

बिस्तरे थमां उट्ठने दी रेही नी ताकत, अक्खियाँ लज्जी गेइयाँ ताड़े ।
दिलां दी दिलै च रेही गई, बज्जी गे कूच्चा दे नगाड़े ॥

यही है जीवन की सच्चाई। कहाँ से इसमें सुख। सुख केवल प्रतीत ही होता है, पर वास्तव में जन्म भी दुख है, जीवन भी दुख है और मृत्यु भी दुख है। सुख इसमें कहीं नहीं है। मृग-मरीचिका के जल की तरह संसार में सुख आगे आगे नजर आता है और मानव इसी धोखे में सारा जीवन बेकार में गँवा देता है, पर नहीं... नहीं मिल पाता है सुख। यदि संसार में सुख होता तो बड़े बड़े योगी, सन्यासी आदि संसार त्याग कर जंगल में नहीं घूमते। जरूर उन्हें संसार में दुख ही दुख दिखाई दिया होगा, संसार के दुख का उन्हें वास्तविक ज्ञान हो गया होगा, इसी कारण वे संसार के झूठे और क्षणभंगुर सुख को सुख न समझ कर वास्तविक और सच्चे सुख की ओर बढ़े होंगे।

देह धरे का दंड है, भुगतत हैं सब कोय।

ज्ञानी भुगतत ज्ञान से, मूरख भुगतत रोय ॥

‘नानक दुखिया सब संसार’ भी इसी सच्चाई की ओर इंगित करता है कि संसार में रहने वाला कोई भी सुखी नहीं है। कोई न कहे कि वो सुखी है, उसे कोई दुख नहीं है। यदि कोई ऐसा कह रहा है तो पूर्ण अज्ञान की बात कर रहा है, मूर्खता की बात कर रहा है। हरेक किसी न किसी दुख में डूबा हुआ है।

इसलिए यह तो प्रमाणित है कि यह संसार दुखों का विशाल घर है। यहाँ पर रहने वाला कोई भी जीव सुखी नहीं है। जब नर-नारायणी देही वाला कोई सुखी नहीं है तो फिर अन्य योनियों में किसे सुख होगा। शरीर मिला ही दंड के लिए है।

सुर नर मुनि औ देवता, सात दीप नव खंड।

कहैं कबीर सब भोगिया, देह धरे का दंड ॥

मृत्यु के समय भी हमारी आत्मा को उस शरीर से निकल कर

दूसरे शरीर में प्रविष्ट किया जात है और वहाँ जाकर आत्मा अपने पिछले शरीर की सुध भूल जाती है और जो नया शरीर मिलता है, उसी को अपना और नित्य समझने लगती है। जन्म मृत्यु का यह क्रम इसी तरह चलता रहता है और यह निर्मल आत्मा चौरासी के चक्कर काटती हुई परम दुख को प्राप्त होती है।

इसलिए मोक्ष नितान्त आवश्यक है। मोक्ष से तात्पर्य ही सच्चे और अटूट आनन्द की प्राप्ति है। हम सब आनन्द की खोज में हैं, सच्चे सुख की तलाश में हैं, और दुखों के सागर से छूटने के लिए यह नितान्त आवश्यक भी है। आवश्यकता ही खोज की जननी है। इसलिए हमें वही उपाय करना चाहिए, जिससे हमारी आत्मा इन दुखों से, कष्टों से भरे संसार से छूटकर आनन्द के सागर में पहुँच सके।

तो भाईयो पूर्ण संत सतगुरु ही वो सेतू है जिसके माध्यम से वो आनन्द पाया जा सकता है पूर्ण सतगुरु ही वो दर्पण है जिसमें झाँक कर, जिसमें खोकर, जिसमें समा कर वो आनन्द पाया जा सकता है और कोई सूत्र है ही नहीं है। इसलिए सतगुरु करना अती जरूरी है।

साहिब अमर लोक पहुँचा दो

साहिब मुझे आप समझा दो,
सत्य मारग मुझे दिखा दो।
पाँचों के वश में हूँ मैं,
इन सबसे आप मुझे छुड़ा दो।
देकर अपनी सुरति का दान,
भक्ति करना मुझे सिखा दो।
मन जो जपता मैं की माला,

इस से सत्य नाम जपा दो।
देके अपने चरणों की धूल,
जीवन मेरा सफल बना दो।
बार-बार अब जन्म नहीं हो,
मुक्ति ऐसी मुझे दिला दो।
नश्वर लोक युगों युग देखे,
अब तो अमर धाम पहुँचा दो॥

यह यम देश कठिन बहुताइ

अस्पताल में चले जाओ। एमरजेंसी में चले जाना। चारों ओर चीखें ही सुनाई पड़ेंगी। अरे, इतनी निर्मल आत्मा को इतने कष्ट! विचार नहीं करोगे! आपसे कोई भूल हो जाए तो क्या चाहते हैं? यही न कि माफ़ी मिल जाए, सज़ा न मिले। पर यदि कोई बिना भूल के भी सज़ा मिले तो क्या मंजूर करते हो। जो बिना भूल के सज़ा दिलवाने वाला है, उसका क्या हाल करना चाहते हैं! जो बिना भूल के सज़ा देने वाला है, उस प्रति कैसे भाव आता है!

पर संसार में तो उलटी ही रीत चल रही है। साहिब कह रहे हैं—
जो रक्षक तहँ चीहृत नाहिं, जो भक्षक तहँ ध्यान लगाहीं॥

ये सब कष्ट देने वाला तीन लोक का राजा है। वो ही निरंजन देव है; वही मन है। इसी निरंजन की संसार में लोग पूजा कर रहे हैं। कष्ट देने वाले की पूजा कभी सुनी है। क्या कष्ट देने वाले की पूजा करना चाहते हो! और फिर जो बिना कारण के कष्ट दे रहा है, उसकी पूजा! पर परम-सत्य है कि ऐसा ही हो रहा है।

भ्रम में आत्मा को डालने के लिए शरीर दिया गया। अब जो कष्ट शरीर को मिला, वो आत्मा को भी मिला, क्योंकि यह उसमें रम गयी है; अपने को शरीर मान रही है वो। इस भ्रम में डालने वाला है मन। इस शरीर को कष्ट देने वाले की ही तो पूजा हो रही है न! सभी तो कह रहे हैं कि भगवान ने शरीर दिया है। पर किस भगवान ने शरीर दिया है। यह तो विचार करो। क्या भगवान हमें कष्ट देना चाहता है! तभी तो शरीर दिया न। इसी कारण से तो हम इस शरीर के कष्ट से छूटकर मुक्त होना

चाहते हैं; भगवान के घर जाना चाहते हैं। वाह, कितनी उलझनों में फँसे हैं सब जीव। पर विचार कोई नहीं कर रहा है।

यहाँ एक धर्म के लोग दूसरे धर्म के लोगों को मिटाने में लगे हैं। कोई किसी को जिंदा जला रहा है, कोई किसी को तलवार से काट रहा है, कोई किसी को बंदूक से छलनी कर रहा है। आग से जल जाना कितना कष्टकारक! पर कोई विचार करता ही कहाँ है।

बच्चे का कष्ट कोई समझता ही कहाँ है। बच्चा एक कपड़े की गुड़िया के कारण रो-रोकर बुरा हाल कर लेता है। कितनी अज्ञानता! जैसे बच्चे के इस मूर्खता को बड़े समझते हैं, ऐसे ही महापुरुष संसार को लोगों की मूर्खता जानते हैं। उनकी नज़र में सारा संसार मूर्खों वाले काम कर रहा है। हर मनुष्य अज्ञान में है। अज्ञानता में सुख कहाँ! दुख-ही-दुख है। कहीं चोट लग जाए तो कष्ट, हार्ट में दर्द हो जाए तो कष्ट, पेट में मरोड़ हो जाए तो कष्ट, गुर्दे में पथरी हो जाए तो असहनीय कष्ट, आँखें खराब हो जाएँ तो कष्ट, सिर में दर्द हो जाए तो कष्ट, रक्त चाप ही बिगड़ जाए तो मुसीबत। सुख कहाँ है!

बच्चा मर जाए तो कष्ट, उसे चोट लग जाए तो कष्ट, उसे खून बहने लगे तो कष्ट, उसे कहीं टाँके लगाने पड़ जाएँ तो देखना भी कष्टकारक, उसकी दर्द भरी कराहट सुनना भी कष्टकारक। कहाँ तक बात की जाए! इस शरीर में रहकर सुख की आशा ही मूर्खता है। बड़ी मूर्खता है। इस शरीर को धारण करके किसे सुख मिला है!

तन धर सुखिया कोई न देखा, जो देखा सो दुखिया ॥

वास्तव में जिसे भगवान मानकर संसार के लोग पूज रहे हैं, वो ही तो कष्ट देने वाला मन है। अपने सच्चे परमात्मा (साहिब) को सब भूल गये। वो नहीं देता कष्ट। वो किसी को नहीं देता कष्ट। फिर अपनी ही अंश इतनी निर्मल आत्मा को कष्ट कैसे देगा! अपने ही अंश को कष्ट देने का मतलब है अपने को कष्ट देना। बच्चे को कष्ट मिले तो माता-पिता भी तो दुखी ही होते हैं। विचार ही तो नहीं कर रहा है कोई। किसी इस

सच्चाई के बारे में बताया जाए। कोई ज्ञानी हो तो उससे इस सत्य के बारे में बात की जा सकती है। बाकी सारा संसार तो ऐसी बात सुनकर बैरी हो जाता है। साहिब भी कह रहे हैं—

साँच कहैं जग मारन धावै, झूठे जग पतियाय।

सब झूठ में ही लगे हैं, सच्ची बात को मानना तो दूर, सुनकर ही लोग मारने आ जाते हैं। तभी तो कह रहे हैं—

जासो कहिये भेद को, सो फिर बैरी होय॥

जिस किसी को यह भेद सुनाता हूँ, वही दुश्मन हो जाता है। परम-पुरुष की बात कोई समझता नहीं है। इस संसार के कष्टों को कोई समझता नहीं है।

ज्ञानी सो ज्ञानी मिले, होवे ज्ञान की बात।

मूरख सों मूरख मिले, खावें दो दो लात॥

बस, यही हाल है। एक भी ज्ञानी नहीं मिलता, जो इस सत्य को समझ सके। जो कुछ संतों की शरण में आते भी हैं तो केवल अपने स्वार्थों को लेकर। किसी को इस सत्य को जानने की इच्छा नहीं होती। कोई भी कष्टों को देने वाले को नहीं जानना चाहता है। बस, कष्टों से छूटना चाहता है, इसलिए संसार-सागर से मुक्ति चाहता है। कोई बिरले हंस ही होते हैं, जो कष्ट देने वाले मन को समझते हैं; जो अपने सच्चे परमात्मा (साहिब) को जानना चाहते हैं। बड़े ही अंकूरी जीव होते हैं, जो अपने सच्चे साहिब की बात सुनकर दौड़े हुए संतों की शरण में चले आते हैं। बाकी मारने की ही तैयारी करते हैं। वाह, कष्ट देने वाले की पूजा का ही संसार में रिवाज है। कष्ट देने वाले को कोई नहीं समझ पा रहा है।

जो यहाँ पर कष्ट दे रहा है, वही नरकों में भी कष्ट दे रहा है। क्योंकि तीन-लोक उसके शिकंजे में है।

सिंगलद्वीप के अमरपुर में अमरसिंह नामक राजा रहता था। परम-पुरुष की इच्छा से साहिब उसे चेताने संसार में आए। धर्मदास को राजा की सारी कथा सुनाते हुए साहिब कह रहे हैं—

अमरपुर एक नगर रहाई। सिंगलद्वीप के माहिं बसाई॥
 अमरसिंह राय को नामा। लागी कचहरी बहु विधि धामा॥
 तहाँ आकर हम कीन्ह पसारा। पहुँचे राय के महल मँझारा॥
 षोडश रवि की ज्योति पसारा। महलन माहिं भयो उजियारा॥
 देख प्रकाश उठे तब राई। धाये पहुँचे महलन में आई॥
 आये महल में सद्गुरु पासा। सतगुरु चरण गहे विश्वासा॥

साहिब जब उसके महल में पहुँचे को महल 16 सूर्यो के प्रकाश से जगमगा उठा। उस समय राजा का दरबार लगा हुआ था। महल को इतना प्रकाशमय देख राजा दौड़ता हुआ महल में आया। वहाँ साहिब को देख राजा ने उनके चरण पकड़ लिये और बोला—

अरे साधु एक विनती करिहों। पूछत वचन क्रोध जनि धरिहों॥
 कै तुम तीन देवन में कोई। कै परब्रह्म तुम आये सोई॥

आश्चर्य चकित होकर राजा ने पूछा कि क्या आप त्रिदेव में से कोई हैं या फिर स्वयं परमात्मा हैं।

साहिब ने कहा—

मैं आया सतलोक से, जीवन करन उबार।

काल फाँस निवार के, ले जाऊँ लोक मँझार॥

कहा कि मैं सतलोक से आया हूँ, जीवों को काल से छुड़ाकर वहाँ ले जाने के लिए आया हूँ।

इतना कहि गुप्त भये प्रभुराई। राव परे धरनी मुरझाई॥
 भये विकल मुख आवे न बानी। तलफत मीन जैसे बिन पानी॥

इतना कह साहिब गुप्त हो गये और राजा मूर्छित होकर धरती पर गिर पड़े। जैसे पानी के बिना मछली तड़फती है, वैसे ही राजा भी तड़फने लगे। फिर राजा ने प्रण किया कि जब तक साहिब दर्शन नहीं देते, तब तक जलपान ग्रहण नहीं करेंगे।

पाँच दिन ऐसे ही बीत गये। राजा के दिल में जब बिरह अधिक हुआ तो साहिब वहाँ आए। राजा दौड़कर आए और साहिब के चरणों

में गिर पड़े, कहा कि आज आपने मुझे सनाथ कर दिया। साहिब ने उन्हें अपने हाथों से उठाया और कहा कि अब मैं तुम्हें काल के जाल से बचा लूँगा। राजा ने कहा कि अब आप मुझे छोड़कर कहीं गये तो मैं अपने प्राण दे दूँगा।

अबके साहब जाहु दुराई। हमकूँ नाहिं जीवत पाई॥

साहिब ने कहा—

कहैं साहिब सुनो हो राई। प्रेम भक्ति बस कतहुँ न जाई॥

कहा—मैं प्रेम के बस में रहता हूँ, कहीं दूर नहीं जाता।

राजा ने साहिब को फिर महल के भीतर ले जाकर पलंग पर बिठाया और रानी को बुलाकर उनके चरण धोकर चरणामृत लिया। फिर राजा को साहिब ने कान में शब्द सुनाया और उसे लेकर चले।

जाय पहुँचे सुमेर पहारा। वैकुण्ठ लोक रच्यो जेहि ठारा॥

तहाँ ते हम चले रिगाई। पहुँचे चित्रगुप्त के ठाई॥

लग्यो दरबार चित्र को जहँवा। पाप पुण्य को निबेरो तहँवा॥

देखि साहेब को ठाडे भयऊ। डारि सिंहासन बैठक दियऊ॥

आये गुप्त साहेब के पासा। विनती करत बहु भये उदासा॥

हे साहिब हम पूछत तुमसे। किम लाये यह भूपन हमपै॥

यह तो हमरो चोर कहाई। अधम पापि राजा यह आई॥

तब साहेब गुप्त से कहेऊ। लीखनी तुमारी देहिं चुकोई॥

साहिब उसे लेकर पहले बैकुण्ठ धाम गये, फिर वहाँ से चित्रगुप्त के पास आए। चित्रगुप्त का दरबार लगा था, जहाँ पाप पुण्य का हिसाब रखा जाता है। साहिब को देख चित्रगुप्त खड़े हो गये, उन्हें बैठने के लिए सिंहासन दिया और कहा कि इस राजा को यहाँ क्यों लाए हैं, यह तो हमारे चोर हैं, महापापी जीव हैं।

साहिब ने गुप्त से कहा—

तब साहिब एक जुगति बनाई। पारसपथरी तहाँ दिखाई॥

अनेक कर्म से लोहा भरिया। पारस भेटत कंचन करिया॥

साहिब गुप्त से कहे समुझाई। इनकू लोहा करो रे भाई॥
 इतनी सुनि यम भये अधीना। फेर न तिनसे बोलन कीना॥
 लोहा से जो कंचन कियेऊ। यहि विधि हंसा निरमल भयऊ॥
 तब यमराज हुकुम करि दीयऊ। दूत दोय राय संग गयऊ॥
 राजा कू ले जाओ भाई। इनकू यमपुरी लाओ दिखाई॥
 दूत राय को चले लिवाई। पहुँचे जाय यमपुरी माहिं॥
 त्रास जीव को देत हैं जहाँवा। देखत राजा मन पछितावा॥
 त्रास जीव को देत हैं जहाँवा। देखत राजा मन पछितावा॥

साहिब ने तब एक युक्ति रची, उन्हें पारस पत्थर दिखाया, उसमें लोहा भर दिया। पारस का स्पर्श देकर उस लोहे को सोना कर दिया और गुप्त से कहा कि अब इस सोने को लोहा बना दो। यह सुन गुप्त चुप हो गया। तब साहिब ने उसे कहा कि जिस तरह मैंने लोहे को कंचन कर दिया, जो दुबारा लोहा नहीं हो सकता, ऐसे ही मैंने राजा को कौवे से हंस कर दिया है। यह सुन यमराज अधीन हुआ, दूतों को कहा कि राजा को यमपुरी दिखा लाओ। राजा को लेकर दूत यमपुरी में वहाँ गये, जहाँ जीवों को अनेक कष्ट दिये जा रहे थे। राजा यह देख मन में दुखी हुआ।

एक को कोल्हू माहीं पिराई। ऊँधे मस्तक एक झुलाई॥
 एक को बाँध खंभ सू ताते। चीसे देत बहुत ही भाँते॥
 एक जीव को खात चबाई। भागत फिरे बचत नहीं भाई॥
 एक जीव को कुण्ड महिं डारा। मोगरी शिरपै मारे अपारा॥

एक को वहाँ कोल्हू में पिराया जा रहा था, एक को उलटा लटकाया हुआ था, एक को खंभे से बाँधकर कष्ट दिया जा रहा था, एक को खाया जा रहा था, वो भागने की कोशिश कर रहा था, पर भाग नहीं पा रहा था। एक को कुण्ड में डाल कर ऊपर से डण्डे मारे जा रहे थे। कुण्ड अनेक बने तहाँ भाई। भांति भांति के त्रास दिखाई॥
 ऐसे त्रास जीवन को दियऊ। देखत राजा व्याकुल भयऊ॥
 एक कुण्ड तो रुधिर भराई। दूजा कुण्ड तो पीब कहाई॥

त्रीजो कुण्ड मूत्र भराई। योजन एक ताकी गहराई॥
 योजन चार की है चकराई। योजन चार लागि गँध उड़ाई॥
 परे जीव ता माहिं अपारा। चौथा कुण्ड नरक की धारा॥
 पाँचवें कुण्ड सो अग्नि कहाई। बहुत जीव तहँ जरहीं भाई॥
 करत पुकार तहँ जीव अपारा। यहि अवसर कोउ हमहिं उबारा॥

अनेक कुण्ड बने थे। एक में खून भरा हुआ था, एक में पाक भरी थी, एक में मूत्र भरा था। एक-एक योजन गहरे थे, चार योजन चौड़े थे और चार योजन तक उसकी बदबू जा रही थी। उन्में अनेक जीव पड़े हुए थे। ऐसे ही फिर चौथे में मल, पाँचवें में आग थी, जिसमें कई जीव जल रहे थे। सब जीव बचाओ-बचाओ की पुकार कर रहे थे।

साहिब धर्मदास से कहते हैं—

धर्मराय अस खेल बनाया। पाप पुण्य दोउ कीन उपाया॥
 पाप पुण्य रचि जीव फँसाया। जो जस करै सो तस फल पाया॥
 करै पाप तेहि नरक भुगतावैं। करै पुण्य तेहि स्वर्ग पठावैं॥
 कर्महिं भुगति गर्भ में जावैं। यहि विधि काल जीव फँदावैं॥

निरंजन ने पाप पुण्य का खेल रचकर जीवों को अपने जाल में फँसा लिया है। जो जैसा कर्म करता है, उसे वैसा ही फल मिलता है। जो पाप करता है, उसे नरक मिलता है, जो पुण्य कर्म करता है, उसे स्वर्ग मिलता है। कर्म का फल भोगकर जीव पुनः गर्भ में आता है। इसी तरह काल जीव को फँसाता है।

झूठ बचन कहत है जोई। जीभ्या काटि लेत पुनि सोई॥
 झूठी साख भरे जो भाई। विषधर ताके जीभ लगाई॥
 बिन अपराध मारे जो कोई। बहुत मार तेहि ऊपर होई॥
 स्वपुरुष तजि पर पुरुष संग जावे। अग्नि पुरुष तेहि संग मिलावे॥
 पुरुष होय नारी कहँ त्यागे। नारी और सो मन जो लागे॥
 अग्नि नारी तेहि संग मिलावैं। यहि विधि जीवन त्रास दिखावैं॥
 एक एक को त्रास दिखावैं। हाथ छूरी ले कंठ चलावैं॥
 एक जीव को ठाडे कीना। काग गीध को हुकुम करि दीना॥

काग गीध नोचत हैं भाई । भागत फिरे त्रास अधिकाई ॥
 जे नर नारी मदिरा पीवें । तप्त तेल पुनि ताहि पिलावें ॥
 संत साधु की निंदा करई । अंग अंग माहिं कुष्ठ भरोई ॥

जो कोई झूठ बोलने वाला है, उसकी जीभ काट ली जाती है । जो झूठी गवाही देता है, उसकी जीभ को जहरीले साँप लगा दिए जाते हैं । जो किसी को बिना किसी अपराध के मारता है, उसे वहाँ बहुत मार पड़ती है । जो स्त्री अपने पति को त्याग कर दूसरे पति के साथ मेल रखती है, उसे आग से बने पुरुष के साथ मिलाया जाता है । इसी तरह जो पराई नारी की तरफ जाता है, उसे आग की स्त्री के साथ मिलाया जाता है । इसी तरह जीवों को कष्ट दिए जाते हैं । एक एक जीव को वहाँ कष्ट दिया जाता है, छूरी लेकर उनके गले पर चलायी जाती है । एक जीव को खड़े कर उसपर चीलों को छोड़ दिया जाता है । चीलें उसे नोचती हैं, वो डर के मारे भागता फिरता है । फिर जो नर-नारी शराब पीते हैं, उन्हें गर्म तेल पिलाया जाता है । जो साधु पुरुष की निंदा करते हैं, उनके सब अंगों में कोढ़ हो जाता है ।

जो तिय मारै गर्भ गिरावै । तेल यंत्र तन तासु पिरावै ॥
 बाल बृद्ध के हरै जो प्राणा । तप्त तेल महँ पचत अयाना ॥
 जे नर हरत दीन के प्रानन । मित्रहि मारत दाहत कानन ॥
 तिनहिं अँगारन माँझ सुतावैं । यमगण दारुण त्रास दिखावैं ॥
 तेल चुराय जो जग महँ लेते । यमगण तेहि बहुत दुख देते ॥
 तेल चोर कहँ तेल कराही । घृत चोरहिं घृत माँझ गिराहीं ॥
 जे पर दूध मधु दधि हरहीं । ते गण रक्त कुण्ड महँ परहीं ॥
 ऐसी यमपुरी देख बनाई । देखत राजा मन पछताई ॥

इसी तरह जो नारी गर्भपात कराती है, उसे तेल निकालने वाले यंत्र में से पिरोया जाता है । जो बच्चे और बूढ़े को मारता है, उसे गर्म तेल में डाला जाता है । जो दीन को या मित्र को मारता है, जंगल में आग लगाता है, उसे अँगारों पर सुलाया जाता है । जो कोई किसी का तेल चुराता है, उसे गर्म तेल की कड़ाही में डाला जाता है, जो किसी का घी

चुराता है, उसे घी की कड़ाही में डाला जाता है, जो किसी का दूध, शहद या दही चुराता है, उसे खून की कड़ाही में डाला जाता है। ऐसी भयानक यमपुरी को देख राजा मन में बहुत पछताता है।

नृप अरु दूत पहुँचे तहवाँ। चित्रगुप्त को दरबार रहै जहवाँ॥
जहाँ बिराजे ज्ञानी सिंहासन। गहे चरण तहाँ नृपति ततक्षण॥
यह यम देश कठिन बहुताई। अबकी साहिब लेहु बचाई॥

यमपुरी देखने के बाद राजा और दूत वहाँ पहुँचे, जहाँ चित्रगुप्त का दरबार था, जहाँ साहिब भी विराजमान थे। राजा दौड़कर साहिब के चरणों में गिर पड़े, कहने लगे कि यह काल का देश तो बड़ा ही कठिन है, मुझे यहाँ से बचा लो।

साहिब ने राजा से कहा कि जिसके पास नाम होता है, उसे कोई भय नहीं है। फिर साहिब राजा को घुमाकर फिर उसे वापिस उसके शरीर में लाए। राजा ने कहा कि मुझे इस संसार से तारो। तब साहिब ने कहा कि आरती का सामान लाओ। इस तरह साहिब ने राजा को नाम देकर कृतार्थ किया। फिर राजा ने रानी को भी साहिब से नाम दिलाया। फिर राजा रानी ने सारी प्रजा को भी अपनी शरण में लेने की विनती की। साहिब ने सबको नाम देकर कृतार्थ किया।

साहिब धर्मदास को समझाते हुए कहते हैं—

कहा जीव करनी करै, कहा चलेगा चाल।
सतगुरु नाम प्रताप ते, कबहुँ न खावे काल॥
कहन सुनन की है नहीं, देखा देखी नाय।
सार शब्द जो चीन्ही, सोई मिलेगा आय॥

इस तरह काल के देश में क्रूर दंड जीव को मिल रहे हैं। शरीर का नाश तो होना है, पर जो जीव सद्गुरु का सत्य नाम पा लेते हैं, सद्गुरु उन्हें काल द्वारा मिलने वाला असहनीय कष्टों से बचा लेते हैं।



गर्भ त्रास तब छूटै भाई । जब सतगुरु कहँ बाँह थमाई ॥

एक समय धर्मदास जी ने साहिब से पूछा—

धर्मदास कह सुनहू स्वामी । कहो गरभ की अंतर्यामी ॥
कैसे जीव गरभ में आवे । कैसे जीव जठर दुख पावे ॥
कैसे जीव परवशे भयऊ । कैसे इंद्री देह बनयऊ ॥
कैसे जीव अपने पद परसे । कैसे जीव समरथ पद परसे ॥
कैसे जीव कौल बँधावे । कैसे साहिब दर्शन पावे ॥
सो सब भेद कहो गुरु ज्ञानी । घट भीतर का भेद बखानी ॥

कहा कि मुझे गर्भ का भेद बताओ । जीव गर्भ में कैसे आता है ?
कैसे वो जठर अग्नि का दुख पाता है ? कैसे वहाँ सब इंद्रियाँ बनती हैं ?
कैसे जीव अपने चरण स्पर्श करता है ? कैसे प्रभु के चरण स्पर्श करता
है ? कैसे वो प्रतिज्ञा करता है ? कैसे साहिब के दर्शन पाता है ? हे प्रभु !
घट के भीतर का वो सारा भेद मुझे समझाकर कहिये ।

साहिब ने कहा—

कहैं कबीर सुनो धर्मदासा । घट भीतर का भेद परकासा ॥
सबही जीव गर्भ में जावैं । कौल बाँध कै बाहर धावैं ॥
चूके कौल गरभ का भाई । बारंबार गरभ में जाई ॥
नौ नाथ सिद्धि चौरासी भारी । उनहूँ देह गरभ में धारी ॥
नौ अवतार विष्णु जो लीन्हा । उनहूँ गरभ वसेरा कीन्हा ॥
तैतीस कोटि देव कहाये । गरभ वास महँ देह बनाये ॥

जोगी जंगम औ तप धारी। गर्भवास में देह सँवारी॥

गर्भ वास तब छूटे भाई। जब समरथ गुरु बाहँ गहाई॥

साहिब ने कहा कि सब जीव गर्भ में आते हैं और प्रतिज्ञा करके बाहर आते हैं। जो गर्भ की प्रतिज्ञा नहीं निभाता, उसे बार बार गर्भ में आना पड़ता है। नौ नाथ, चौरासी सिद्ध, अवतार, देवता, जोगी जंगम, तपस्वी आदि सबकी देह गर्भ में बनी। यह गर्भ तभी छूट सकता है, जब समरथ गुरु की शरण में आकर उसे अपनी बाँह पकड़ा दो।

गर्भ की उत्पत्ति के विषय में साहिब कहते हैं—

नारि पुरुष बाँधे संयोगा। कामबाण लगि देह सुख भोगा॥

सप्त धातु का अंग बनाया। जिह्वा दाँत मुख कान उपाया॥

हाथ पाँव रु शीश निर्माया। सुंदर रूप बनी बहु काया॥

दश द्वार नौ नाड़ी बनायी। ऐसे सब पर बँध लगायी॥

दीन्हा ठेक बहत्तर भारी। नाड़ी बँधन बहुत अपारी॥

साहिब कह रहे हैं कि नारी पुरुष सबपर काम बान लगा हुआ है, सब देह सुख को भोग रहे हैं। सात धातुओं से शरीर की रचना है। जिह्वा, दाँत, मुख, कान, हाथ, पाँव और शीश का निर्माण किया गया। इस तरह सुंदर काया का निर्माण किया गया। इसमें दस द्वार हैं, नौ नाड़ियाँ हैं। इस प्रकार सबको इस शरीर में बाँधा गया है। फिर अन्य 72 प्रमुख नाड़ियाँ हैं।

नाद बिन्दु सों काया निरमायी। तामें प्रकृति आन समायी॥

हृद् कारिगर हुनर कीन्हा। जैसे दूध में जामन दीन्हा॥

अजब महल बहु खूब बनाया। छठे महल हंस चितवन लाया॥

छठे मास में सुरति आयी। दुख सुख की तब पारख पायी॥

छै मास को भयो जब प्राणी। दुख सुख की मति सबै पहिचानी॥

रज-वीर्य से काया का निर्माण हुआ। फिर उसमें 25 प्रकृति का वास हुआ। इसकी रचना करने वाले काल रूपी कारीगर ने हृद कर दी। जैसे दूध में जामन देकर उसे जमाया जाता है, ऐसे ही इस काया का

निर्माण हुआ। आत्मा को छठे चक्र पर वास मिला। छठे मास में सुरति आयी और तब जीव को सुख-दुख का आभास हुआ।

औंधे मुख झूले लटकंता। मैल बहुत तहँ कीच रहंता॥
जठर अग्नि तहँ बहुत सतावै। संकट गर्भ तहँ अंत न आवै॥
बहुत साँकरी पिंजार पाई। तड़फै बहुत निकसे नहिं जाई॥
मुख सों बोल निकसि नहिं आवै। करुना करि मन में पछितावै॥
अरुझै श्वास रोवै मन माहीं। कौन करमगति लागी आहीं॥
ता दुख की गति कासु कहीजै। करम उनमान तहँ दुख सहीजै॥
यहि आलोच करै मनमाही। संगी मित्र कोई दीखत नाही॥
पिछला जनम जब सूझा भाई। तब जिव दिलमा चिंता आई॥
स्त्री मित्र कुटुंब परिवारा। सुत नाती औ सैन पियारा॥
संगी सुजन बंधु औ भाई। गरभ कि चीन्ह परी नहिं ताई॥

साहिब कहते हैं कि जीव औंधे मुँह गंदगी में लटकता रहता है। फिर वहाँ जठर अग्नि का ताप भी सहन करता है। गर्भ के कष्ट का अंत नहीं है, बहुत कष्ट मिलता है। बहुत ही सँकरे पिंजरे में जीव फँसा होता है, जहाँ वो तड़फता रहता है। उसके मुख से कुछ भी बोल नहीं निकलता है। उस दुख का वर्णन किससे करे, क्योंकि वहाँ कोई संगी मित्र भी नहीं होता है। यदि उसे पिछला जन्म याद आ जाता है, स्त्री, कुटुंब, परिवार आदि को याद कर दुख होता है। वहाँ उसे कोई नहीं दिखता।

महा दुख सो गरभ में पावे। बहुत वैराग हिया में आवे॥
जिव अपने दिल माहि विचारे। तब समरथ को कीन पुकारे॥

महादुख जीव गर्भ में पाता है। उसके दिल में उस समय बहुत वैराग आ जाता है और साथ में महा दुख भी होता है। इसलिए वहाँ वो प्रतिज्ञा करता है कि अब मैं प्रभु का भजन करूँगा, सद्गुरु की शरण ग्रहण करूँगा। जीव अपने दिल में यह विचार कर प्रभु को पुकारता है।

राजा जगजीवन की कथा सुनाते हुए साहिब धर्मदास से कहते हैं—

सुनु धर्मनि यक कथा सुनाऊँ । यक राजा को जस बने बनाऊँ ॥
 राय जगजीवन ताहिकर नामा । जब वह पहुँच्यो एही ठामा ॥
 करन विनती लागु अधीरू । सतगुरु कहँ तब कीन्ही टेरू ॥

साहिब धर्मदास को कहते हैं कि तुम्हें राजा जगजीवन की कथा सुनाता हूँ । जब वो इस दशा को प्राप्त हुआ तो उसने सद्गुरु सो पुकार की, वह—

साहिब संकट दूर निवारो । मैं निज खानाजाद तुम्हारो ॥
 अबकी कृपा करो हो स्वामी । कौल करूँ प्रभु अंतरयामी ॥
 बाहर निकारो आदि सनेही । बहु दुख पावै मेरी देही ॥

राजा जगजीवन ने गर्भ में पुकार की, कहा—हे सद्गुरु ! मेरा संकट दूर करो, मैं तुम्हारा दास हूँ । मैं प्रतिज्ञा कर रहा हूँ, अब तो मेरा दुख दूर करो, मुझे बाहर निकालो, मेरी देही बड़ा कष्ट पा रही है । मैं जन प्रभु को दास कहाऊँ । आन देव के निकट न जाऊँ ॥ सतगुरु का होय रहों चेरा । दम दम नाम उचारूँ तेरा ॥ नित उठि गुरु चरणामृत लेऊँ । तन मन धन निछावर देऊँ ॥ जो मैं तन सों करूँ कमाई । अर्धमाल मैं गुरुहि चढ़ाई ॥ कुबुद्धि सीख काहू नहिं मानूँ । हराम माल जहर करिजानूँ ॥ कुल की त्यागूँ मान बड़ाई । निर्मल ज्ञान एक संत सगाई ॥ दुख सुख परे सो तन से सहूँ । भक्ति दृढ़ै गुरु चरणौ रहूँ ॥ पर त्रिया ताकूँ न कोई । जननी बहन करि देखूँ सोई ॥ दुष्ट बैन कबहूँ नहिं खोलूँ । शीतल बैन सदा मुख बोलूँ ॥ सतगुरु कहैं सोई अब करिहौ । आज्ञा लोप पाओं नहिं धरिहौ ॥ और सकल बैरी कर जानूँ । सतगुरु कहँ मित्र कर मानूँ ॥ यहि गर्भवास में कौल बधाऊँ । बाहर निकारो धुर निर्बाऊँ ॥

हे सद्गुरु ! बाहर आकर मैं आपका दास ही कहाऊँगा, किसी और देवता के निकट नहीं जाऊँगा । सद्गुरु का दास बनकर रहूँगा, स्वाँस स्वाँस में उनके नाम का जाप करूँगा । रोज़ उठकर गुरु का

चरणामृत लूँगा; तन, मन, धन सब उनपर अर्पण कर दूँगा। मैं जो भी कमाई करूँगा, उसका आधा गुरु को भेंट कर दूँगा। किसी की बुरी सीख नहीं मानूँगा, हराम के माल को ज़हर समान समझूँगा, कुल की मान-बड़ाई को त्यागकर संत के संग में निर्मल ज्ञान प्राप्त करूँगा। रात-दिन भक्ति में लगा रहूँगा। जो भी सुख दुख आयेगा, उसे सहन करते हुए गुरु भक्ति में दृढ़ रहूँगा। पराई स्त्री की तरफ बुरी नज़र से नहीं देखूँगा, उन्हें माता और बहन समान समझूँगा। किसी को भी बुरे शब्द नहीं कहूँगा, सदा शीतल बचन ही कहूँगा। जो भी सद्गुरु कहेंगे, वही करूँगा, उनकी आज्ञा का उल्लंघन नहीं करूँगा। अन्य सभी को मैं अपना शत्रु समझूँगा, केवल गुरु को ही अपना सच्चा मित्र मानूँगा। मैं गर्भवास में यह प्रतिज्ञा करता हूँ, मुझे बाहर निकालो, मैं अपनी प्रतिज्ञा को निभाऊँगा।

अब तो ख़बर परी यहि ठाहीं। और काहू का चालै नाहीं॥
 देवी देव का कछू न चालै। गुरु बिन कौन करै प्रतिपालै॥
 पिछली बात मैं हृदय में जानी। कोई काहू का नहीं रे प्राणी॥
 अपने साथ चलेगा सोई। जो कछु सुकृत करे सो होई॥
 मद माया में जीव भरमाया। सो तो कोई काम न आया॥
 बहुत विचार किया मैं सोई। अंतकाल अपनो नहिं कोई॥
 ऐसी करुणा करै विचारा। दया करो दुख भंजन हारा॥

राजा आगे कहता है कि यहाँ आकर यह पता चला है कि किसी का कुछ नहीं चल सकता है, बिना गुरु के कोई रक्षा नहीं कर सकता है। दूसरी बात मैंने यह जानी है कि कोई किसी का नहीं है, कोई साथ में नहीं चलेगा, जो कोई अच्छा कर्म करेंगे, वही साथ जायेगा। मन-माया में जीव भ्रमित रहा, पर यहाँ वो सब काम नहीं आया। मैंने बहुत विचार किया कि कोई भी अपना नहीं है। इसलिए हे प्रभु! दया करो, मेरा दुख दूर करो, बाहर निकालो।

उसकी विनती सुन साहिब ने कहा—

तब साहिब यों कहै पुकारा। कहि समझाया तोहिं बारंबारा॥

कई बार तैं कौल बँधाया। कई बार तैं गर्भ में आया॥
 गर्भ में ज्ञान उपजा है तोही। संकट में सुमिरे सब कोही॥
 बाहर निकसि नहिं उपजै ज्ञाना। अँधकार अहंकार समाना॥
 बार अनेक भुलाना भाई। नहिं सतगुरु की दीक्षा पाई॥
 गरभ त्रास तब छूटै भाई। जब सतगुरु कहँ बाँह थमाई॥
 गरभ वास में कौल बँधावा। सो कैसे तैं न बाहर निर्बावा॥
 बहु संकट तोहि उपजे ज्ञाना। बाहर निकसत सब विसराना॥
 जोई जीव कौल निर्वाहै। सोई नहिं गरभ वास महँ आवै॥

साहिब ने कहा कि तुम्हें बार बार समझाता आया हूँ। तू अनेक बार गर्भ में आया है, कई बार तूने प्रतिज्ञा की है। गर्भ में ही ज्ञान हुआ है, संकट के समय तो पुकार करते हैं। जब तू बाहर आया तू तुझे ज्ञान नहीं हुआ, तेरे अंदर तब अज्ञान समा गया। बार-बार तू भूलता आया है, तूने कभी सद्गुरु से दीक्षा नहीं ली। गर्भ का कष्ट तब छूटेगा, जब तू सद्गुरु को बाँह थमाएगा। गर्भवास में तू प्रतिज्ञा करता है, पर बाहर आकर निभाता क्यों नहीं। जब संकट पड़ता है, तभी ज्ञान होता है, बाहर निकल कर सब भूल जाता है। जो जीव गर्भ की प्रतिज्ञा निभाता है, वो फिर गर्भवास में नहीं आता।

राजा ने कहा—

अब नाहीं भूलूँ गुरुदेवा। तन मन लाय करूँ गुरु सेवा॥
 मोकूँ बाहिर काढ़ो स्वामी। कौल न चूकूँ अंतर्दामी॥

कहा—हे गुरुदेव! अब मैं नहीं भूलूँगा, तन, मन से गुरु की सेवा करूँगा। मुझे बाहर निकालो, मैं अपनी प्रतिज्ञा नहीं भूलूँगा।

साहिब ने तब उसकी प्रतिज्ञा के बोल पर ध्यान दिया और उसे बाहर निकाला।

कौल बोल सब चौकस कीना। तबहीं गर्भ सों बाहर लीना॥
 नौवें मास जो बाहर आया। लोग कुटुंब सबही सुख पाया॥
 सबही हरष करैं मन माई। पुत्र हेतु सब करैं बधाई॥

नगर लोक सब करें बधाई। घर घर साजे देइ लुगाई॥
 घर राजा के जनम सो पड़या। कौल किया सो सब बिसरैया॥
 पीसुन मिले सबहिं धुतारा। सबहीं ज्ञान भुलावन हारा॥
 ताका नाम सुनो रे भाई। महा जाल के फँद फँदाई॥
 झूठे झूठ मिले संसारा। नरक कुण्ड में नाखनहारा॥

तो साहिब ने राजा को गर्भ से बाहर किया, नौवें महीने में राजा बाहर आया। उसे देख परिवार के लोग बड़ा खुश हुए, सब एक दूसरे को बधाईयाँ देने लगे। बाजे बजने लगे, गीत होने लगे, सारे शहर में बधाईयाँ होने लगी, स्त्रियाँ मंगल गीत गाने लगीं। गुड़ बाँटे जाने लगे। राजा के घर में जन्म लेकर वो किया हुआ वादा भूल गया। उसके पिता ने कर्मकांडियों को बुलाकर उसे काल के जाल में फँसा दिया। झूठे पाखंडियों ने कर्मकाण्ड करके उसे नरक में धकेल दिया।

माता, पिता, दादा, दादी, पड़ौसी, पंडित, ज्योतिषी, पुरोहित, आदि सबने अपना अपना राग अलापा।

माता मन में करै बखाना। यह भल उग्यो आजु को भाना॥
 बालक जन्मा मोरे कोखा। जन्म भरे की भागी धोखा॥
 पिता के मन में ऐसी आवैं। उमगे हरष हिय नाहिं समावैं॥
 बाटे पान मिठाई बहूता। धन्य धन्य मोर जनम्यो पूता॥
 काका कहै मैं उतरूँ पारा। बालक खेलै घर के द्वारा॥
 कर्म जोर मोरे बड़ कीन्हा। क्षेत्रपाल मोहिं बालक दीन्हा॥
 दादा सुनिकै दौरे आये। पोता देख बहुत सुख पाये॥
 दासी हाथे कुँवर मँगाया। हे तु प्रीति से कण्ठ लगाया॥
 दादी के मन हर्ष अपारा। लेत बलाई बारंबारा॥
 मैं करी बहुत सतियन की सेवा। भये प्रसन्न मोर कुलदेवा॥
 नानी आवत वेगि उठाया। मुख चुंमा है कण्ठ लगाया॥
 लून ले शिर ऊपर वारा। द्रव्य माल पुनि बहुत उतारा॥
 अब नाना मुख देखन आया। दौहित्रा देखि अधिक सुख पाया॥

उमँगें हरष हिये न अमायी। कंचन चूरा दिया बधायी॥
 बहुत करै हरष बुआ बाई। दिन दिन अधिकी करै बधाई॥
 मुख चुंबा दै कण्ठ लगावे। हिये हर्ष उमँग नहिं मावे॥
 मौसी मन बहु हर्ष उठावै। धन्य बहिन को कोख तरावै॥
 मुख चूमे अरु कंठ लगावै। अतिशय उमँग हिये नहिं समावै॥

माता कहने लगी कि मेरी कोख से आज वंश के सूर्य का जन्म हुआ है। पिता कहने लगा कि मेरा तो बहुत भाग्य है। वो मिठाईयाँ बाँटने में लग गया। काका कहने लगा कि मेरे कर्मों के लेखे से यह बालक मालिक ने मुझे दिया है। दादा ने तो पोते को गले से ही लगा लिया, बड़े खुश हुए। दादी कहने लगी कि मैंने सतियों की बड़ी सेवा की थी, इसी कारण मेरे कुलदेवता ने प्रसन्न होकर यह बालक दिया है। नानी ने भी बालक को गले से लगा लिया, उसके सिर के ऊपर से नमक, और पैसे वार दिये। नाना भी बालक का मुख देखने आया, उसे सोने का चूड़ा पहना दिया। बुआ ने भी आकर बालक को गले से लगा लिया। मौसी के मन में भी बड़ी प्रसन्नता हुई, कहा कि मेरी बहन की गोद भर गयी।

इसी तरह फिर आस पड़ौस के लोग आने शुरू हुए।

बुढ़िया एक जो बोले आयी। तिन यक बात कही समझायी॥
 बालक तैल लौन सों लीजै। लौना नाम कहे धरि दीजै॥
 दूजी कहै सुनो रे बाई। बालक डारो छीतर माई॥
 साँचो टोना यही कहावों। इनको छीतर कहि बतलावो॥
 तिया तीसरी बोले सयानी। मैं जान्यों सो काहु न जानी॥
 कोदरा बरोबर तौल के लीजै। याकर नाम कोदरसिंह कीजै॥
 जेती नारि आयीं तेहि बारा। सबहिन आपन मता उचारा॥
 कोई कोहू कोई काहु बतावैं। स्यानप आपन सबहिं जतावैं॥

एक बुढ़िया ने आकर कहा कि बालक ने तेल और नमक लिया है, इसलिए इसका नाम लौना रख दो। दूसरी कहने लगी कि इसके गले में जूती पहना दो, यही सच्चा टोना है। तीसरी कहने लगी कि जो मैं

जानती हूँ, कोई नहीं जानता; बालक के बराबर के तौल का कोदरा लेकर इसका नाम कोदरसिंह रख दो। जो भी आता, अपना अपना मत देता, अपने को ही सबसे सयाना बताता।

इस तरह फिर कहीं सयाने आये तो कहीं पंडित, कहीं फकीर, कहीं पुरोहित।

बुडवै एक जो सीस धुनावैं। वाके शिर पर भैरों आवैं ॥
 सो कह हमको बैल बधाओ। भैरोंसिंह कही बतलाओ ॥
 देवी पूजक एक तब आया। देवीसिंह तब नाम बताया ॥
 गाजी मुर्गी कोई चढ़ावै। गाजीदीन तब नाम बतावै ॥
 दर्वेश एक कहै समुझाई। नाम फकीरा कहो रे भाई ॥
 बाँधि गाँठ गले में दीजै। सब पीरों का चारण लीजै ॥
 जोगी एक तहाँ चलि आया। मेरी भभूत का परचा पाया ॥
 कहा हमारा सुनिकै लीजै। याका नाम सदाशिव दीजै ॥
 यंत्र मंत्र यतीकर लाये। करि तावीज् गले पहराये ॥
 ब्राह्मण सबही नगर के आये। पत्रा पोथी साथहिं लाये ॥
 पीपल केरे पान मँगाया। लगन साधि के नाम सुनाया ॥
 जगजीवन नाम जनम का सही। याका मरण होय न कबही ॥
 द्रव्य माल दक्षिणा दीना। जनम पत्रिका लिखाय सो लीना ॥
 बहु विधि सो संस्कार कराया। मोह फाँस में पकरि दबाया ॥

इतने में एक सिर घुमाने वाला सयाना आया, जिसे भैरो की चौकी आती थी। उसने कहा कि एक बैल मुझे दो, मैं भैरोसिंह को बलि देकर खुश करूँगा। फिर एक देवी का भक्त आया, कहा कि मेरा नाम देवीसिंह है, एक तगड़ी सी मुर्गी माता को चढ़ाओ, बलि दो और इसका नाम गाजीदीन रख दो। फिर एक दर्वेश आया। उसने कहा कि सब पीरों के चरणों की धूल लेकर इसके गले में गाँठ बाँध दो। योगी ने आकर कहा कि मेरी भभूत इसे दो और मेरा कहना मानकर इसका नाम सदाशिव रख दो। यंत्र-मंत्र करने वाले आये और उसके गले में तावीज्

पहना गये। फिर पंडित लोग आये और पोथी खोलकर लग्न सोधकर नाम धरा, कहा कि इसका नाम जगजीवन होगा, जो कभी न मरेगा। जन्म पत्रिका लिखने के उन्हें पैसे दिये गये। इस तरह बहुत भाँति से उसका संस्कार कराया गया, मोह फाँस में पकड़कर उसे दबा दिया गया।

गर्भ कौल तो सब विसराना। अमर रहन का जतन बहु ठाना॥
 एक सो बात गुप्त ना होई। सयाना लोग कहैं सब कोई॥
 फँदा अनेकन में फँदाई। कौल किया सब गया भुलाई॥
 झूठे झूठ मिलै सब कोई। इनते काज एको नहिं होई॥
 पिछली कौल सबै बिसरानी। महा जाल में बँधे प्राणी॥
 यह सब झूठै पाखण्ड साजू। इनसूँ सरै न एको काजू॥

साहिब कहते हैं कि जो उसने गर्भ में वादा किया था, वो तो भूल गया और अमर रहने का यतन किया जाने लगा। अनेक फँदों में उसे फँसा दिया गया। झूठों से झूठे ही मिले। साहिब कहते हैं कि इनसे कोई भी काम बनता नहीं है। पिछला वादा मनुष्य भूल जाता है और महा जाल में फँस जाता है। यह सब पाखंड का सामान है, इनसे कोई भी काम ठीक नहीं हो सकता।

साहिब समझाते हुए कहते हैं—

देखो दिलै करि ज्ञान विचारा। किहि विधि उतरो भवजल पारा॥
 रे कुबुद्धि सुख में मत झूलै। पिछला कौल बोल मति भूलै॥
 इक दिन फेरि परैगा गाढ़ा। मुशुक बाँधि यम करिहैं ठाढ़ा॥
 तुम मति जानो अमर है काया। यह दीसै सुपने की माया॥
 यहि चकचौंध भुलो मति कोई। सेंबल फूल जैसा तन होई॥
 जैसे नींद में सुपना आवै। जागि परै तब कछू न पावै॥
 यह तन ऐसे देखो भाई। झूठै झूठ मिलैं सब आई॥

दिल में विचार करके देखो कि किस प्रकार भवसागर के पार उतरा जाए। हे बुद्धिहीन प्राणी! तू सुख में इतना खुश होकर गर्भ में किया हुआ वादा मत भूल। याद रख कि एक दिन यम तेरी मुशकें बाँध कर ले

जायेगा। तुम यह मत समझो कि यह काया अमर है, यह तो सपने की तरह है। यह संसार की चकाचौंध देखकर मत भूल, यह सेंबल के फूल वाली बात है, जो कुछ दिन ही रहेगी। जैसे नींद में सपना आता है तो जागने पर कुछ नहीं होता है। इस तरह यह शरीर भी है। यहाँ सब झूठ का मेला है। कुछ भी यहाँ सत्य नहीं है।

दिना चार चटक दिखलावै। अंतकाल ग्रासन कूँ धावै॥
काल जंजाल सों छूटा चाई। गुरु से प्रीति करो रे भाई॥
सतगुरु ऐसी युक्ति लखावै। जासे जीव परम पद पावै॥

काल चार दिन की चमक-दमक दिखाकर फिर अंत में जीव को खा लेता है। अगर काल के जाल से छूटना चाहते हो तो गुरु से प्रेम करो। सद्गुरु ऐसी युक्ति बताते हैं, जिससे जीव परम पद मोक्ष पा जाता है।

पर नहीं, यह जीव सारा जन्म बेकार में गँवा देता है।

एक वर्ष लगि डोल डोलावै। पशु रूप में जनम गँवावै॥
उखली जीभ तोतला बोलै। मातु पिता सब हर्षित डोलै॥
कंचन घूँघुर बेगि गढ़ाई। रेशम केरी डोर पोवाई॥
परी करै औ ऊभा धावै। बाहर भीतर दौड़ा आवै॥
बालक संग में खेलन जावै। नाच कूद के घरही आवै॥
मन में आनन्द करै चँचलाई। सोच फिकर कछु व्यापे नाई॥
करै कुतूहल मन में सोई। दिन दिन तेज सवाया होई॥
आकुल बोलै सोच न आनै। कूर कपट कर बहु मुख गानै॥
संकट का दिन चित्त न आवै। करै अनीति जोई मन भावै॥
चित में दुर्मति रहै अति घनी। महा दुष्ट पापी सनी॥
द्वादश वर्ष की भयी है देही। अनन्त उपाय करै नर केही॥
प्रगट काम काया के भीतर। सोच फिकर नहिं व्यापे अंतर॥
अंध करै बहुत अहंकारा। निरखै तिरिया घर घर द्वारा॥
गुरु चरचा के निकट न जावै। हँसी मसखरी सों मन भावै॥
झूठी बात करै लबराई। तासों हेतु करै मितराई॥

एक साल का होता है, तो झूले में झूलता रहता है, पशुओं की तरह जन्म गँवा देता है। फिर धीरे धीरे बोलना शुरू होता है तो उसकी तोतली बोली सुन सब खुश होते हैं। अब उसके पाँव में घुँघरू डाल दिये जाते हैं, इधर उधर भागता फिरता है। थोड़ा बढ़ा होता है तो बालकों के सँग में खेलने जाता है। फिर दिनों दिन बढ़ना शुरू होता है। अब छल कपट भी सीखता है, बड़ा मज़ा आता है, कोई चिंता नहीं होती। कष्ट का दिन भूल जाता है, मन पाप की तरफ मुड़ता है। 12 साल का हो जाता है तो काम भी उत्पन्न हो जाता है, कोई सोच फिकर तो होती नहीं, मन में अहंकार करता फिरता है, घर घर में पराई स्त्री को देखता फिरता है। जहाँ गुरु चरचा होती है, वहाँ तो जाता नहीं, केवल हँसी-मजाक में झूठ बोलने में ही उसे मज़ा आता है।

ईगुण प्रगटा अंतर माहीं। कामातुर होय करी विवाही॥
 पहले विवाही एक लुगाई। बहुत प्रेम सँग ताहि लिवाई॥
 विषय विवेक फिर उपजा भारी। पीछे व्याही सुंदरी नारी॥
 अँगस्वरूप कामिनि अधिकाई। कामातुर सों रहे लपटाई॥
 महा अनन्द भये मन माहीं। एक पलक सँग छाड़ें नाहीं॥
 करै खवासी कहत है दासी। बँधा मोह जाल की फाँसी॥
 नव नव खंड के महल बनाये। सोना करे कलस चढ़ाये॥
 करी बिछावन तहँ बड़ भारी। गादी तकिया बहुत अपारी॥
 बहुत मोल को अतर मँगावै। फूलन केरी सेज बिछावै॥
 नित नित तिरिया नई संयोगा। खान पान औ षट रस भोगा॥
 मता विषय रह कछू न सूझै। भैरों भूत शीतला पूजै॥
 भूले कौल गर्भ की बाँधी। अब चकाचौंध आई आँधी॥
 सबही जीव कौल करि आवै। बाहर निकसि सब विसरावै॥

फिर कामातुर होकर विवाह करता है। पहले जब विवाह होता है तो बड़े प्रेम से उसे लाता है। फिर बाद में जब विषय विकार अधिक बढ़ता है तो सुंदर-सी नारी देख दूसरा विवाह करता है, उसी में दिन रात

खोया रहता है, उसकी चाकरी करता है, पर उसे दासी कहता है। बड़े बड़े महल बनाता है, बड़े सुख के साधन जुटाता है। जीभ के स्वाद से अँधा हो जाता है। नित्य नयी स्त्री के साथ संबंध जोड़ता है। विषयों में खो जाता है। गर्भ की कौल भूल जाती है, संसार की चकाचौंध में मस्त हो जाता है। यह एक की कहानी नहीं, सब जीव कौल करके आते हैं और बाहर आकर भूल जाते हैं।

ऐसे जीव भूल रहे सारे। तब सतगुरु आई पगु धारे ॥
जीव चितावन सतगुरु आये। अलीदास धोबी समझाये ॥
और हंस बहुत चेताये। फिरत फिरत पाटनपुर आये ॥

तो जब राजा जगजीवन भी ऐसे ही गर्भ में की हुई कौल को भूलकर विषयों में खो गया तो साहिब आए। पहले अलीदास धोबी को समझाया, और भी कई हंसों को समझाया। फिर चलते चलते पाटनपुर आए।

साहिब आये पाटनपुर ठाऊँ। जगजीवन राय बसै तेहि गाऊँ ॥
राय न मानै भक्ति विचारा। हँसे भक्त को बारंबारा ॥
भक्त रूप सब शहर निहारा। कोऊ न मानै कहा हमारा ॥
जाइ बाग में आसन कीन्हा। गुप्त रहे काहू नहिं चीन्हा ॥

साहिब वहाँ पहुँचे, जहाँ राजा जगजीवन रहता था। राजा के मन भक्ति भावना बिलकुल भी नहीं थी; वो भक्तों की हँसी उड़ाया करता था। साहिब ने भक्त रूप धारण कर सारा शहर देखा, सबको समझाने का प्रयास किया, पर कोई नहीं समझा। फिर साहिब राजा के एक बाग में जाकर गुप्त रूप से बैठ गये।

द्वादश वर्ष भये बाग सुखाने। सुलगे काष्ठ होय पुराने ॥
चार कोस तेहि बाग लंबाई। तीन कोस की है चकलाई ॥
तहवाँ हम कौतुक अस कीया। सूखे बाग हरा कर दीया ॥
विकसे पुहुप जीव सब जागे। सबने हरियर देखा बागे ॥
माली जाय कै दीन बधाई। जागा भाग तुम्हारा भाई ॥

वो बाग 12 साल से सूखा था, चार कोस वो लंबा और तीन कोस चौड़ा था। साहिब ने कौतुक किया, उस बाग को हरा कर दिया, भाँति भाँति के फल और मेवे वहाँ लग गये। जब लोगों की नज़र बाग पर पड़ी तो देखकर चकित हुए, जाकर माली को बधाई दी।

देखा बाग जाय तेह वारा। फल फूलन का अंत न पारा॥
हर्षा माली बाहर आया। देखा बाग बहुत सुख पाया॥
फूलन छाब भरी दुई चारी। नाना विधि के फूल अपारी॥
नाना विधि के मेवा लाया। लै माली दरबारे आया॥
माली सब लै धरी रसाला। राजा पूछ करे ततकाला॥

माली आया, देखकर बड़ा खुश हुआ; उसने दो-चार टोकरियाँ फल-फूलों की भरीं और राजा के दरबार में चला। जाकर उनके आगे टोकरियाँ खोलकर रख दीं। बड़े प्यारे प्यारे फल-फूल देख राजा भी चकित हुआ, उसने माली से पूछा—

कौन देश तैं माली आया। फूल अनूप कहाँ से लाया॥
कौन बाग के फलन विशेका। कानो सुनी न आँख न देखा॥

राजा ने माली से पूछा कि तुम किस देश से आए हो और यह अनोखे फल-फूल कहाँ से लाए हो! ऐसे फल तो न कभी सुने और न देखे हैं।

माली ने कहा—

नौ लखा बाग हरा होय आया। फल प्रसून सब नये बनाया॥
कहा कि आपका नौ लखा बाग, जो सूख चुका था, हरा हो गया है।

यह सुन राजा बड़ा खुश हुआ, मंत्री से पूछा कि यह कैसे हो सकता है! तब पंडित बुलाए गये, उनसे पूछा गया कि यह सूखा बाग अचानक हरा कैसे हो गया है!

लगन सोधि सब ऐसी कही। कोई पुरुष यहाँ आये सही॥
पंडितों ने कहा कि कोई सच्चा पुरुष यहाँ आया लगता है।

यह सुन राजा बाग में गया।

हेरे राय बाग के माहीं। बैठे संत यक ध्यान लगाहीं॥
 राजा जाय धरा तब पाई। नगर भरे की परजा आई॥
 कहे राजा धन मेरो भागा। दर्शन पाय अमर होय लागा॥

राजा ने बाग में जाकर देखा तो साहिब ध्यान लगाकर बैठे थे।
 राजा ने साहिब के चरण पकड़ लिये, कहा कि मेरा बड़ा भाग्य है कि
 आपने मुझे आज दर्शन दिये। मुझे ऐसा लग रहा है कि मैं मुक्त हो रहा
 हूँ।

तब साहिब ने राजा से कहा—

तब राजा सों कही पुकारी। सुन राजा एक बात हमारी॥
 हम जनि भार चढ़ाओ भाई। काहे को तुम देहु बड़ाई॥
 अच्छा बाग विमल हम चीन्हा। तासो आये आसन कीन्हा॥

साहिब ने कहा कि मुझे बड़ाई नहीं दो, मैंने तो यहाँ सुंदर बाग
 देखा और आसन लगा लिया।

राजा ने फिर शीश नवाया और कहा—

फिर कै राजा शीस नवाया। द्वादश वर्ष भये बाग सुखाया॥
 छाड़ी फल फूलन की आसा। कोई न आवै बाग के पासा॥
 तुम समर्थ पग धारे आई। हरा हुआ बाग सब ठाई॥
 राजा कहै दया अब कीजै। मोकूँ मुक्तिदान फल दीजै॥
 मेरे मस्तक धरहू हाथा। मैं रहूँ सतगुरु तुम्हारे साथ॥

राजा ने फिर से साहिब को शीश नवाया और कहा कि यह बाग
 तो 12 साल से सूखा पड़ा था, कोई यहाँ आता नहीं था, फूल और फल
 की आशा ही छोड़ दी थी। आपने यहाँ अपने चरण रखे और बाग हरा
 भरा हो गया। हे प्रभु! मुझे मुक्ति का दान दो। मेरे माथे पर अपना हाथ
 रखें। मैं आपके साथ रहना चाहता हूँ।

साहिब ने कहा—

तुमको कौल भुलाना भाई। किया सो कौल गया बिलराई॥

संकट गरभ में बाचा दीन्हा। बाहर निकसि करम बहु कीन्हा॥
 किया कौल जब गये भुलाई। तब हम आइ के चरित दिखाई॥
 बहु विधि बात कही चेताई। बाहर निकसि बुद्धि पलटाई॥
 तुमको तो कुछ सूझत नहीं। फँदा मोह जाल के माहीं॥
 आवै यम दश द्वारे मूँदी। तबहीं बाँधि करेगा कूँदी॥
 सोच बूझ देख मन माहीं। इतने में तेरा कौन सहाही॥
 पिसुन मिलैं सब वार न पारा। नरक बास में नाखन हारा॥
 घर घर हम सब कही पुकारी। कोई न मानै कही हमारी॥

कहा कि तुम अपना वादा भूल गये, जो गर्भ में किया था। संकट के समय वहाँ तुम्हारी रक्षा की थी, पर बाहर आकर तुम फिर कर्म काण्ड में उलझ गये। तुम गर्भ का वादा भूल गये, इसलिए मैंने आकर यह खेल दिखाया, बहुत प्रकार से आकर तुम्हें चिताया, पर तुम्हारी बुद्धि पलट गयी थी, तुम्हें वो कुछ भी याद नहीं रहा, तुम मोह माया के जाल में फँस गये। जब यम आकर तुम्हारे दसों द्वार बंद करके तुम्हें बाँध कर ले जायेगा तो सोच, तब तेरा कौन सहायक होगा! हे मूर्ख! गर्भ में मैंने तुम्हें बहुत समझाया था, पर तू सब भूल गया। मैंने घर घर में जाकर समझाया, पर मेरा कहना किसी ने नहीं माना।

राजा ने कहा—

अब तो साहब होहु सहाई। मोको यम से लेहु छुड़ाई॥
 सबही करम बख्स कै दीजै। डूबत मोहिं उबार के लीजै॥

राजा ने साहिब से कहा कि अब तो कृपा करो, मुझे यम से छुड़ा लो। मेरे सब कर्म माफ कर दो, मुझ डूबते हुए को बचा लो।
 सैन करी पालकी मँगाई। लै सतगुरु को माहिं बिठाई॥
 पाँव उधार काँध धर लीन्हा। तबही महल पयाना कीन्हा॥
 सतगुरु पग धर महल के माहीं। सब रानिन को राय बुलाहीं॥
 समरथ दरशन दीन्हा आनी। धन धन भाग्य तुम्हारो रानी॥
 सतगुरु को पलँग बाँठाई। सब मिलि पाँव पखारो आई॥

राजा भाखे शीश नवाई । मोको राखो गुरु शरनाई ॥

तब राजा ने पालकी मँगायी और साहिब को उसपर बिठाया; खुद जूती उतार कर पालकी को कँधे पर उठाया और महल की ओर प्रस्थान किया। साहिब को महल में लाकर सब रानियों को बुलाया, कहा कि प्रभु ने खुद आकर दर्शन दिये हैं, आप सबका बड़ा भाग्य है। साहिब को पलँग पर बिठाकर रानियों से कहा कि गुरु जी के पाँव पखारो। तब राजा ने साहिब को शीश नवाकर कहा कि मुझे अपनी शरण में रख लीजिए।

साहिब ने कहा—

तब कहे सतगुरु लेहु सँभारी । राजा सुनहु बात हमारी ॥
 कस चले राजा लोक हमारे । मैं नहिं देखूँ लगन तुम्हारे ॥
 जो कोई बूझे भक्ति हमारी । ताको चाहिये लगन सँचारी ॥
 जैसे लगन चकोर की होई । चंद्र सनेह अँगार चुगोई ॥
 ऐसे लगन गुरु से होई । धर्मराय शिर पग धर सोई ॥
 तुम तो हो मोटे महाराजा । कैसे छोड़िहौ कुल मर्यादा ॥
 कैसे छोड़ेहौ मान बड़ाई । कैसे छोड़िहौ मुख चतुराई ॥
 कैसे छोड़िहौ हाथी असवारा । कैसे छोड़िहौ ग्रंथ भँडारा ॥
 कैसे छोड़िहौ काम तरंगा । कैसे राज से करो मन भंगा ॥
 कैसे छोड़िहौ कनक जवाहिर । कैसे छोड़िहौ कुल परिवारा ॥
 तुम तो उनकी बाँधी आसा । हम तो राजा कथैं निरासा ॥
 जो तुम तजो अंदर की बाथा । तबहीं चलो हमारे साथ ॥
 भक्ति कठिन करी न जाई । काहे को हिरस करत हो भाई ॥

कहा कि मैं तुम्हें शरण में तो ले लूँ, पर एक बात सुनो, तुम मेरे लोक में कैसे जा पाओगे! तुममें तो लगन दिखाई नहीं दे रही, प्रेम नहीं दिख रहा, जो कोई हमारी भक्ति पाना चाहता है, उसे चाहिए कि प्रेम उत्पन्न करे। जैसे चकोर की लगन है। वो अँगार को चाँद समझ मुँह में डालता है, ऐसी ही लगन, ऐसा ही प्रेम गुरु से होना चाहिए। वो ही जीव

काल के सिर पर पाँव रखकर पार हो सकता है। तुम तो अभिमानी राजा हो, तुम कुल की मर्यादा कैसे छोड़ोगे, मान बड़ाई कैसे छोड़ोगे, चालाकी कैसे छोड़ोगे, हाथी की सवारी कैसे छोड़ोगे, पाखण्ड के काम कैसे छोड़ोगे, पोथियों को कैसे छोड़ोगे, काम वासना कैसे छोड़ोगे, मन को कैसे मारोगे, सोना चाँदी कैसे छोड़ोगे, घर-परिवार कैसे छोड़ोगे!! तुमने इन सबकी आशा दिल में रखी हुई है, इन्हें कैसे त्याग पाओगे! यदि तुम यह सब त्याग सको तो ही मेरे साथ अमर लोक चल सकते हो। भक्ति करना बड़ा कठिन है, तुम इसका लालच क्यों कर रहे हो।

राजा ने कहा—

राजा कहे दोऊ कर जोरी। सुनिये साहिब विनती मोरी॥
नगर के सब षटबरन बुलाऊ। यहि अवसर सब माल लुटाऊँ॥
नगर कोट की छोड़ी आसा। निश दिन रहूँ तुम्हारे पास॥
कसनी कसो सों सहूँ शरीरा। तबहूँ प्रीत न छोड़ूँ तीरा॥
जो तुम कहो सो भक्ति कराऊँ। दया करो तो शीश चढ़ाऊँ॥

राजा ने दोनों हाथ जौड़कर कहा कि मेरी एक विनती सुनिये। यदि आप चाहें तो मैं अभी नगर के सभी जाति के लोगों को बुलाकर सारा खजाना दान कर दूँ। मैं सबकी आशा छोड़कर आपके पास ही रहूँगा। यदि आप मेरी परीक्षा भी लेंगे तो शरीर से सब सहन कर लूँगा, पर प्रेम नहीं छोड़ूँगा। आप जैसा कहेंगे, मैं वैसे ही भक्ति करूँगा। आप मुझ पर दया करो, मैं शीश अर्पित करने को तैयार हूँ।

यह सुन साहिब ने कहा—

तब समरथ अस शब्द उचारा। अब आरति का करो विस्तारा॥
चार गुरु को चौक पुराओ। तिनका तोराय के जल अरपाओ॥
राजा गर्भ निवारों तोरा। भाव भक्ति से करो निहोरा॥
भाव भक्ति हम चाहें राजा। धन सम्पति से न कछु काजा॥

साहिब ने कहा कि अब तुम आरती की तैयारी करो। भाव भक्ति सब काम करो, तुम्हारा बार बार गर्भ में आने का कष्ट मिटा दूँ। मैं तो

केवल भाव का भूखा हूँ, धन सम्पत्ति से मुझे कुछ भी लेना देना नहीं है।

राजा ने कहा—

दया करो सो साज मँगाऊँ। कौन वस्तु ले आगे आऊँ ॥
साहब कहौ मैं आनूँ सोही। चौका जुगति बताओ मोही ॥

कहा कि कौन सा सामान लाऊँ? किस तरह से आपकी आरती करूँ?

साहिब ने उसे आरती का सामान बताया। राजा ने सब मँगवाकर आगे रख दिया और विनती की, कहा—

मैं हूँ जीव करम बहु कीना। कैसे यम सों करिहो भीना ॥
गिनत गिनत नहिं आवे चीना। बारंबार मैं औगुन कीना ॥
एक बात गुरु कहौ विचारी। मोसम पतित आगे कोइ तारी ॥

राजा ने कहा कि मैंने बहुत गंदे कर्म किये हैं, आप मुझे यम से कैसे छुड़ायेंगे! मैं बार बार अवगुण किये हैं, यदि गिनूँगा तो याद नहीं आयेंगे। एक बात बताओ कि क्या आपने मेरे जैसे पापी का कभी पहले उद्धार किया है?

साहिब राजा की बात सुनकर हँसे, कहा कि मैं तो युग युग में यहाँ आता हूँ, जो मेरी बात को समझता है, उसे नाम देकर अपने देश ले जाता हूँ।

युगन युगन भवसागर आऊँ। जो समझे तेहि लोक पठाऊँ ॥
शब्द हमारा मानै कोई। तौ नहिं जाय यमपुरी सोई ॥
इतनी बात कही समझायी। दिल राजा के प्रतीति समायी ॥

यह सुन राजा को विश्वास हो गया, कहा—

धन्य भाग मेरा कुल कर्मा। कोटिन यज्ञ कियो तप धर्मा ॥
सत्यगुरु आय दरस मोहि दीन्हा। बूड़त हंस उबार कै लीन्हा ॥
कहु सँदेश नगर में भाई। जग जीवन राय लोक को जाई ॥
नेगी जोगी सबहिं बुलायी। और नगर की परजा आई ॥
सब रानी को बेगि बुलायी। करि दण्डवत् गुरु चरणा आयी ॥

कहा कि करोड़ों यज्ञ, तप का फल मुझे आज मिला, मैं धन्य हो

गया, जो सद्गुरु ने आकर मुझे दर्शन दिये, मुझ डूबते हुए को बचा लिया। राजा ने कहा कि सारे नगर में सँदेश दे दो कि राजा अब अमर लोक में जा रहा है। सब योगी, नेगी आए। राजा ने सब रानियों को भी बुलाया, कहा कि गुरु चरणों में आकर दण्डवत् करो। राजा ने सब राजकुमारों को भी बुलवाया।

जब सभी आ गये तो साहिब ने सबको ज्ञान दिया। साहिब ने राजा से कहा—

तुमरी राय भली बनि आही। तुम गरभवास की कौल निबाही॥
जोई कौल गरभ का पालै। ताको सतगुरु होहिं दयालै॥
गरभ कौल कोई चूके भाई। असंख्य जन्म चौरासी जाई॥

साहिब ने कहा कि तुमने अपनी कौल पूरी की है। जो भी अपनी कौल पूरी करता है, सद्गुरु उसपर दयाल होते हैं। जो गर्भ में किया हुआ वादा भूल जाता है, उसे असंख्य जन्म तक चौरासी में घूमना पड़ता है।

राजा ने साहिब से पूछा—

राजा कहै दोऊ कर जोरी। सुनु समरथ यह विनती मोरी॥
महाकुकर्मी जो होय प्रानी। करमन से कैसे होय छुडानी॥

कहा कि जो महापापी मनुष्य हैं, वो कैसे छूट सकते हैं ?

साहिब ने कहा—

तब समरथ गुरु शब्द उचारा। करमन काटि करूँ निरवारा॥
असंख्य जन्म कर्म किये आयी। पान पान में करम कटायी॥
लगन जैमुनि आवै हाथा। धर्मराय तेहि नावै माथा॥
बिना पान नहिं कर्म कटाई। कोटिन ज्ञान करै जो भाई॥

कहा कि मैं जब नाम देता हूँ तो असंख्य जन्मों के कर्म काट देता हूँ। जब कोई जीव जैमुनि लगन लगाता है, तो धर्मराज भी उसे रोक नहीं सकता, उसे माथ नवा देता है। बिना नाम के चाहे कितना भी ज्ञान अर्जित कर ले, कर्म नहीं कट सकते।

राजा ने कहा—

लगन जैमुनि कैसे पावै। कैसे सतगुरु सों लौ लावै॥

कौन जुगति चरनामृत लेही। कैसे करै जो बनै विदेही॥
लोक लोक गुरु कहो समझायी। कहौ हंस कहँ जाय समायी॥
कैसे पावै लोक निवासा। कौन कौन घर करिहै वासा॥

कहा कि मुझे बताओ कि यह जैमुनि लग्न क्या होती है, कैसे सद्गुरु से लौ लगानी है, कैसे गुरुचरणामृत लेना है, कैसे विदेही बनना है ? कहा कि मुझे वहाँ के सब लोकों के बारे में बताओ। हंस किस लोक में जाकर रहता है, कैसे वो उस लोक में जाता है ?

साहिब ने कहा—

तब सतगुरु अस उचारा। शिष्य होय सौँपूँ भंडारा॥
शिष्य होय गुरु वश कर लीजै। तन मन धन सब दे दीजै॥
तन मन धन को नेह न आवै। तब जिव लगन जैमुनि पावै॥

कहा कि जो जीव सद्गुरु का शिष्य होकर सब कुछ सौँप देता है, शिष्य होकर तन, मन, धन सब अर्पिक करके गुरु को वश में कर लेता है, तन, मन, धन से प्रेम नहीं रखता, वो जैमुनि लग्न पाता है।

तब रानियों ने साहिब से कहा—

तन मन से करिहैं गुरु सेवा। हमको शिष्य करहु गुरु देवा॥
अंतर बात सब देहु बनायी। जैसे सीप मोती कूँ भायी॥

कहा कि अब हमें शिष्य कर लो, हम आपकी तन, मन से सेवा करेंगी। जैसे स्वाती की बूँद से सीपी में मोती बन जाता है, ऐसे ही नाम देकर हमारे अंदर ज्ञान कर दो, प्रभु को प्रगट कर दो।

साहिब ने कहा—

करनी कठिन सत्य करि जानो। कहनि करनि बहु भेद बखानो॥
कठिन करनी टले जो भाई। ताकर जीव बहुत दुख पाई॥
शिष्य होय जब कौल बँधावे। तन मन धन सब आनि चढ़ावे॥
कियो कौल निबाहे पूरा। करे गुरु सेवा शिष्य सोइ सूरा॥
पूरा होय के शूर कहावै। सतगुरु वचन सदा लौ लावै॥
करी कौल निर्बाहे नाहीं। ऐसो शिष्य सो यम मुख जाहीं॥
होय दुखी दुख देह समावै। ताकी देह रोग हूँ आवै॥

गुरु को दोष देहु जन कोई। आज्ञा मेटे सज़ा तेहि होई॥
 सो जिव कभी न उतरे पारा। करन द्वेष जो गुरु से धारा॥
 तन मन चढ़ावे वही सुख पावे। आखिर धन यौवन बहि जावे॥
 सहज भक्ति राजा तुम करहू। शिष्य होइ भक्ति पद तरहू॥
 सहज भक्ति सबही सुखदाई। कठिन कमाई दुस्तर भाई॥
 कठिन कमाई खाँडे की धारा। सहज भक्ति से उतरो पारा॥

साहिब ने कहा कि कहने और करने में बहुत अंतर होता है, करना बड़ा मुश्किल होता है। कठिन करनी से जो पीछे हट जाए तो फिर वो जीव बड़ा दुख पाता है। शिष्य होकर जब वादा करता है, तन, मन, धन सब चढ़ा देता है, वादा करके फिर उसे निभाता है, गुरु की सेवा करता है, वो शिष्य ही सच्चा शूरवीर है। पूरा गुरु ही शूरवीर कहलाता है, जो सद्गुरु के बच्चों को निभाता है। जो वादा करके नहीं निभाता, वो काल के मुख में ही जाता है। जो तन, मन, धन अर्पित कर देता है, वही सुख पाता है। जो किया हुआ वादा तोड़ देता है, वो फिर बहुत संकट पाता है। उसे रोग भी आ घेरते हैं। जो शिष्य गुरु को दोष देता है, उनकी आज्ञा का उल्लंघन करता है, उसको सज़ा मिलती है, वो कभी पार नहीं हो पाता। हे राजा! तुम सहज भक्ति करो, सहज भक्ति ही सुखदायी है, कमाई करना बड़ा कठिन है। कमाई करना तो तलवार की धार पर चलना है, पर सहज भक्ति से ही जीव पार हो सकता है, अपनी कमाई से नहीं।

राजा ने कहा—

सब कर्म कठिन सहज कर जानू। तन मन धन कर लोभ न आनू॥
 हमको सीख अब देउ गुसाई। कौल करूँ सो चूकूँ नाई॥
 जो कहूँ चूक कौल हम जावें। अपनी करनी हम भरि पावें॥
 रंक के हाथ रतन जो आवे। कौड़ी बदले काह गँवावे॥
 अब सतगुरु दाया मोहि कीजै। चूके कौल का फलहि कहीजै॥
 फिर कैसे सो सुख पावे। कैसे वह फिर कौल में आवे॥
 कैसे निर्धन धनै बहोरे। कैसे रोगी रोग सो छोरे॥

अब करु शिष्य शब्द मुहि दीजै। नहिं तो देह त्याग हम कीजै॥

कहा कि सब कठिन कर्मों को आसान समझूँगा, तन, मन, धन लोभ त्याग दूँगा। मुझे अब सीख दो कि मैं गर्भ का वादा कभी न भूलूँ। यदि मैं गर्भ की कौल भूल जाऊँ तो अपनी करनी का फल भी पाऊँ। रंक के हाथ रतन आ जाए तो फिर वो कौड़ी के बदले में उसे कैसे गँवा सकता है! अब सद्गुरु मुझ पर दया करो और वादा भूलने का फल कहिए, बताइए कि फिर वो नर कैसे सुख पा सकता है, फिर वो दुबारा कौल में कैसे आता है, वो निर्धन से अमीर कैसे होता है, रोगी से निरोगी कैसे होता है? अब मुझे अपना शिष्य करके नाम दो अन्यथा मैं अपना शरीर त्याग दूँगा।

तब साहिब ने कहा कि ऐसा मत करो, आरती का सामान लाओ और नाम पाकर परम सुख को प्राप्त करो।

तुम तौ दिये नर कपट किंवारी॥
वहि दिन कै सुधि भूलि गयो हौ, कियो जो कौल करारी॥
जाते भजन करौं दिन राती, गहिहौं सरन तुम्हारी॥
बार बार तुम अरज कियो है, कष्ट निवारु हमारी॥
यहाँ आइ कै भूलि पर्यो है, कीयो बहुत लबारी॥
आपु भुलायो जगत भुलायो, सब को कियो सँधारी॥
नाम भजे बिनु कौन बचावै, बहुत कियो मतवारी॥
बार बार जंगल में धावै, आगि दियो पचकारी॥
बहुत जीव तुम परलय कीन्हा, कस होय हाल तुम्हारी॥
तुम्हरे बेद तो नरक बना है, अगिन कुण्ड में डारी॥
मार पीटि के जम लै डारै, तब को करत गोहारी॥
बिन गुरु भक्ति के माता कैसी, जैसी बाँझिन नारी॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, भक्ति करो करारी॥



शब्द

संतों लेहु बिचारी

बाबा हमका खेलैदा नैहरवा दिन चारी॥
पहिलि बुलाव तीन जन आये, नाऊ बाह्यन बारी।
जाय के कह दो मोर बाबा को, अब की सुदिन दई टारी॥
दूसर बुलाव आप पिय आये, लैके डोलिया कहारी।
धै बहियाँ डोलिया बैठाये, कोऊ न लागे गोहारी॥
आधी डगरि जब चली दुलहनिया, पीछे दिहिस निहारी।
यह देसवा में आग लगी बा, कोई न लागे गोहारी॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, संतों लेहु बिचारी।
यह पद का जो अर्थ लगावै, सो ज्ञानी मैं अनारी॥

जीव ने मौत के डर से घबराकर यमराज से प्रार्थना की कि उसे संसार रूपी नैहर में कुछ दिन और खेलने-कूदने, मज़ा लेने दो। पहले तो जीव को लेने के लिए तीन लोग आए; बाल पकने लगे, सुनाई कम देने लगा और शरीर भी शिथिल पड़ गया, पर जीव ने कहा कि अभी कुछ समय के लिए टाल दो, बाद में ले चलना। फिर दूसरी बार यमराज स्वयं आ गये और जबरन बाँह पकड़कर डोली में बिठा लिया, ले चले। उसे बचाने कोई नहीं आया, सभी देखते ही रह गये। जब जीव रूपी दुलहनिया आधे रास्ते तक पहुँची तो उसने पीछे मुड़कर देखा, संसार में

आग लगी थी, कोई किसी को बचा नहीं पा रहा था, सब उस आग में जलकर मर रहे थे। साहिब कह रहे हैं कि मेरी बात को सुनकर उसपर विचार तो करो, जो भी इस पद का अर्थ लगाएगा, वही ज्ञानी है और मैं अनाड़ी हूँ।

रतन जनम खोयो

सुभागे केहि कारन लोभ लागे। रतन जनम खोयो ॥
 पूरब जनम भूमि कारन। बीज काहे को बोयो ॥
 बूंद से जिन्ह पिंड संजोयो। अगिनी कुंड रहाया ॥
 जब दस मास मातु के गरभे। बहरिहिं लागलि माया ॥
 बारहु ते फुनि बिद्ध हुआ। होनहार सो हूवा ॥
 जब जम ऐहैं बांधि चलइहैं। नैन भरी-भरि रोया ॥
 जीवन की जनि आसा राखो। काल धरे हैं सांसा ॥
 बाजी है संसार कबीरा। चित चेति डारो पासा ॥

हे सौभाग्यशाली नर! तू किस कारण से माया के लोभ में फँसकर अपने अमोलक मानव-तन को बेकार में खो रहा है? पूर्व जन्म के वासना के बीज के कारण ही यह जन्म मिला। अब फिर वही बीज क्यों बो रहे हो? इन्हीं वासना के बीजों ने जीव को माता के गर्भ में जाकर स्थित किया और वहाँ रज-वीर्य से देही का निर्माण हुआ। वहाँ माता के जठर की अग्नि में तपता रहा। 10 महीने बाद जब बाहर आया तो फिर माया में फँस गया। फिर बालक, जवान और बूढ़ा हुआ। यह तो होना ही था, सो हो गया। पर याद रखो, जब मौत आयेगी तो बाँधकर ले चलेगी। तब तू आँखों में आँसू भर-भरकर रोयेगा। इसलिए जीवन की आशा मत रखो; काल निरंतर तुम्हारी साँसों की डोरी को खींच रहा है। तुम्हें जो जीवन मिला है, इसे जुए का खेल समझो और सावधान होकर पासा फेंको अर्थात् इसे विषय-वासनाओं में न लगाकर कल्याण के लिए

लगाओ।

यह काया तोरे संग न जैहै

गाफिल मन काहे बिसारत धनी ॥
 पानी के बुन्द से काया प्रगट कियो, काया सुघर बनी।
 यह काया तोरे संग न जैहै, कीरति रहे बनी ॥
 रामनगर में बाजन बाजत, चादर लाल तनी।
 मारि मारि मुगदर प्रान निकासत, माथ में भाल हनी ॥
 धीरे धीरे पग धरो मुसाफिर, सीढ़ी है अधबनी।
 मन में चिंता क्या करै बौरे, ना साहिब से बनी ॥
 कहै कबीर सुनो भाई साधो, अब जो समुझ बड़ी।
 या घर से जब वा घर जैहौ, लिखनी सूझि पड़ी ॥

सुगवा पिंजरवा छोड़ि भागा

सुगवा पिंजरवा छोड़ि भागा ॥
 इस पिंजरे में दस दरवाजा, दस दरवाजे किंवरवा लागा ॥
 आँखियन सेती नीर बहन लाग्यो, अब कस नहिं तू बोलत अभागा ॥
 कहत कबीर सुनो भाई साधो, उड़िगा हंस टूटि गयो तागा ॥

जीव रूपी तोता शरीर रूपी पिंजड़े को छोड़ कर भाग खड़ा हुआ। इस पिंजरे में 10 दरवाजे हैं, जिनमें किवाड़ लगे हुए हैं। जब मौत आ गयी तो आँखों से आँसू बहने लगे। कुटुम्बी रोते हुए कहने लगे कि हे अभागे! तू अब क्यों नहीं बोलता! साहिब कहते हैं कि जब हंस इस पिंजरे से निकलकर उड़ गया तो शरीर के सब तार टूट गये।

यहि तन केर बहुत हैं साझी

मानुस जनम चुके अपराधी। यहि तन केर बहुत हैं साझी ॥
 तात जननि कहैं पूत हमारा। स्वारथ लागि कीन्ह प्रतिपाला ॥

कामिनी कहै मोर पिउ आही। बाधिनि रूप गरासन चाही॥
 सुतहु कलत्र रहैं लौ लाई। जम की नाई रहैं मुख बाई॥
 काग गीध दोउ मरन विचारै। सीकर स्वान दोउ पंथ निहारै॥
 अगिनि कहै मैं ई तन जारों। पानी कहै मैं जरत उबारों॥
 धरती कहै मोहिं मिलि जाई। पौन कहै संग लेउं उड़ाई॥
 गगन कहे सभ हमरे माहीं। नभ के बिना जगत कछु नाहीं॥
 तेहि घर को घर कहै गँवारा। सो बैरी होय गले तुम्हारा॥
 सो तन तुम आपन कै जानी। विखै सरूप भूलै अग्यानी॥

हे मनुष्य! यदि तुम मानव-तन पाकर भी इसे बेकार में गँवा रहे हो, अपनी आत्मा के कल्याण में नहीं लगा रहे हो तो यह तुम्हारा बहुत बड़ा अपराध है, क्योंकि इस शरीर के बड़े हिस्सेदार हैं। माता-पिता तो कहते हैं कि यह हमारा पुत्र है। अपने स्वार्थ के कारण ही वे तुम्हारे शरीर का पालन-पोषण करते हैं। तुम्हारी प्रेमिका तुम्हारे शरीर को अपना पति मानती है, पर वो तो सिंहनी बनकर तुम्हें खा जाना चाहती है। पुत्र, पत्नी आदि सब तुम्हारे शरीर से स्वार्थ के कारण प्रेम करते हैं और यम की तरह मुख फैलाए हुए तुम्हारा सब कुछ खा जाना चाहते हैं। कौवे, गिद्ध, सियार, कुत्ते आदि सब तुम्हारे मरने की राह देख रहे हैं। वो तुम्हारे मृत शरीर को खा जाना चाहते हैं। आग कहती है कि मैं इस तन को जलाकर इसमें जो मेरा अंश (तत्व) है, उसे अपने में मिला लूँ। पानी कहता है कि मैं इसे जलने से बचाकर अपने अंश को अपने में मिला लूँ। धरती भी यही कामना करती है कि यदि यह मुझे मिल जाए अर्थात् यदि मुझमें गाड़ दिया जाए तो मैं अपने अंश को अपने में मिला लूँ। पवन कहती है कि मैं इसमें से अपने अंश को उड़ाकर ले चलूँ। हे मूर्ख! ऐसे साझे घर को तू अपना घर कहता है! यह तो बैरी की तरह तुम्हारे गले पड़ा हुआ है और तुम हो कि इसे अपना दोस्त समझकर प्यार कर रहे हो। हे अज्ञानी! तुम इस विषय स्वरूप शरीर को अपना मानकर इसमें मत भूलो।

भक्ति से प्रभु तुम्हारी जो मुँह छिपा रहा है

भक्ति से प्रभु तुम्हारी जो मुँह छिपा रहा है ।
 अपने किये के फल को, आपी वो पा रहा है ॥
 आपी वो पा रहा है, संकट उठा रहा है ।
 हर इक तरे से रो रो, आँसू बहा रहा है ॥
 आते ही मात गर्भ में, जैसा कि दूख सहा है ।
 वैसा बयान मुझसे, जाता नहीं कहा है ॥
 पैरों के बीच शिर किये, उलटा टँगा रहा है ।
 बिलकुल नजीक नर्क का, नाला जहाँ बहा है ॥
 जठराग्नि की गरमी, जो कुछ सुना रहा है ।
 दावाअग्नि को शीतल, उससे बता रहा है ॥
 उससे बता रहा है, फिर भी तो जा रहा है ।
 पड़ने को उसी आफत में, आँसू बहा रहा है ॥
 जन्मा तो बालपन में, बलहीन हो आया है ।
 हर बात में तकने लगा मुँह माका पराया है ॥
 कुछ कह नहीं सकता था, भूखा कि अघाया है ।
 रone के सिवा और, न हिकमत कोई पाया है ॥
 होकर जवान अब तो, दौलत कमा रहा है ।
 अपनी प्रवीणताई, सबको दिखा रहा है ॥
 सबको दिखा रहा है, बातें बना रहा है ।
 नारी के प्रेम में फँस, आँसू बहा रहा है ॥
 वह चार दिन की चाँदनी, रहकर चली गई ।
 ज्वानी के बाद देखिये, कैसी दशा भई ॥
 शक्ति जो घट गई तो, फिर आई नहीं नई ।
 करने लगे चलने में, हँसी देख के कई ॥

आकर बुढ़ापा घेर लिया, शिर हिला रहा है ।
 लकड़ी पकड़ के आगू, पग को उठा रहा है ॥
 पग को उठा रहा है, तन थरथरा रहा है ।
 अगले दिनों को याद कर, आँसू बहा रहा है ॥
 अब तो पड़ी है आय, बीच धार में नैया ।
 तुम बिन दयाल और कौन पार करैया ॥
 वायू बहै विषय की, प्रबल हाथ रे दैया ।
 तृष्णा तरंग मोह जाल भँवर डुबैया ॥
 घबरा के चने नाथ वो, नाकों चबा रहा है ।
 मरने के डर से अपने, जी को बचा रहा है ॥
 जी को बचा रहा है, हा हा मचा रहा है ।
 यम के चरित्र सुनके, आँसू बहा रहा है ॥
 साहिब कबीर धीर, बीर पीर मिटावो ।
 निजदास धर्मदास, को विश्वास बँधावो ॥
 मस्तक पै हाथ धरके, सत्यनाम सुनावो ।
 यह जन्म मरण आधि व्याधि, फँद नशावो ॥
 चौरासी के चक्कर में, फिर फिर के आ रहा है ।
 भव सिंधु की धारा में, गोते लगा रहा है ॥
 गोते लगा रहा है, मस्तक झुका रहा है ।
 चरणों में अब तुम्हारे आँसू बहा रहा है ॥

—धर्मदास जी

धर्मदास जी कह रहे हैं—हे साहिब! जो आपकी भक्ति से मुँह छिपा रहा है, वो अपने किये का फल स्वयं ही पा रहा है और उसे बड़े संकट उठाने पड़ रहे हैं, जिसके कारण वो रो-रोकर आँसू बहा रहा है ।

जबसे यह मनुष्य माता के गर्भ में आ रहा है, तभी से तो उसे महा दुख सहने पड़ रहे हैं । वो दुख बताने में नहीं आ रहे हैं । वहाँ आकर यह

मनुष्य पैरों के बीच सिर किए उलटा टँगा रहा है। वहाँ नरक का नाला बिलकुल पास ही बहता है यानी मल-मूत्र की थैलियों के पास ही उसे बास मिल रहा है। फिर वहाँ जठराग्नि की गर्मी भी है। जंगल की आग को भी उस गर्मी से शीतल बता रहा है, पर फिर भी बार-बार वहीं जा रहा है। बार-बार उसी मुसीबत में जाने की तैयारी कर रहा है और प्रभु की भक्ति के बिना आँसू ही बहा रहा है। जन्म से तो बलहीन होकर ही आया है। तब तो हर बात में माँ का ही मुँह ताक़ रहा था। भूख लगी हो या प्यास, कुछ भी बोल नहीं पा रहा था। रोने के सिवा कुछ नहीं कर सकता था। पर अब जवान होकर दौलत कमाने लग गया है। फिर अपनी चतुरता सबको दिखाने लगा है। बड़ी-बड़ी बातें करके सबको अपनी चतुरता दिखाने लगा है और नारी के प्रेम में फँसकर अंत में आँसू ही बहा रहा है। जवानी में चार दिन की चाँदनी थी, जो आकर चली गयी। अब तो बुरी दशा हो रही है। जब सारी शक्ति घट गयी तो फिर जवानी वाली वो ताक़त वापिस नहीं आई। अब तो लोग भी हँसी करने लग गये। जब बुढ़ापा आया तो सिर हिलाने लगा कि यह क्या हो गया! अब तो लाठी के सहारे चल रहा है। सारा शरीर काँपने लगा है। अब पुराने दिनों की बातें याद करके रो रहा है। अब तो जीवन की नैया मझधार में पड़ी है। अब सोचने लगा कि हे प्रभु! आपके सिवा अब मुझे कौन पार उतारेगा! विषयों की प्रबल हवा चल रही है और अब दया की भीख माँग रहा है। तृष्णा और मोह-जाल के भँवर में अब जीवन की नैया डूब रही है। अब तो घबराकर नाकों चने चबा रहा है। अब मरने के डर से अपने जीव को बचाने की कोशिश कर रहा है और यम के चरित्र को सुनकर, उसके द्वारा दिये जाने वाले कष्टों को सुनकर आँसू बहा रहा है। धर्मदास जी विनती करते हुए कह रहे हैं—हे साहिब! मेरी पीड़ा का हरण करो और मुझे विश्वास दो। मेरे मस्तक पर हाथ रखकर सत्यनाम सुनाओ और जन्म-मरण से मुझे छुड़ा लो। यह जीव तो चौरासी के चक्कर में बार-बार आ

रहा है और भवसागर की धारा में गोते लगा रहा है। पर अब आपकी शरण में आकर आँसू बहा रहा है।

जगत में खबर नहीं पल की

सुकिरत करि ले नाम सुमिर ले, को जानै कल की।
 जगत में खबर नहीं पल की॥
 झूठ कपट करि माया जोरिन, बात करें छल की।
 पाप की पोट धरें सिर ऊपर, किस विधि हैं हलकी॥
 यह मन तो है हस्ती मस्ती, काया मिट्टी की।
 साँस साँस में नाम सुमिर ले, अवधि घटै तन की॥
 काया अंदर हंसा बोलै, खुसियाँ कर दिल की।
 जब यह हंसा निकरि जाहिंगे, मट्टी जंगल की॥
 काम क्रोध मत लोभ निवारो, याही बात असल की।
 ज्ञान वैराग दया मन राखो, कहै कबीरा दिल की॥

—कबीरसाहिब

कह रहे हैं कि अच्छे काम करते हुए अभी नाम का सुमिरन कर लो, कल का किसी को पता नहीं है। यहाँ तो पल की भी खबर नहीं है। तू तो छल से झूठी माया को जोड़ रहा है, अपने सिर पर पाप का बोझ लाद रहा है। यह कैसे हल्का होगा! यह मन तो हाथी की तरह मोटा और मस्त है, पर यह काया मिट्टी की बनी है, जो नाश हो जायेगी, इसलिए तू नाम का सुमिरन कर ले; तेरा समय बीतता जा रहा है। इस शरीर में जो हंस बोल रहा है, जब वो इसमें से निकल जायेगा तो यह शरीर जो मिट्टी से बना है, कहीं जंगल की मिट्टी में जाकर मिल जायेगा। सार बात तो यह है कि काम, क्रोध आदि को दूर करके ज्ञान और वैराग्य को धारण करो।

पानी बीच बतासा साधो

पानी बीच बतासा साधो, तन का यही तमासा है ॥
 मुट्ठी बाँधे आया बंदा, हाथ पसारे जाता है ।
 ना कुछ आया न ले जायगा, नाहक क्यों पछिताता है ॥
 जोरू कौन खसम है किसका, कैसा तेरा नाता है ।
 पड़ा बेहोस होस कर बंदे, विषय लहर में माता है ॥
 ज्यों ज्यों बंदे तेरी पलक परत है, त्यों त्यों दिन नगिचाता है ।
 नेकी बदी तेरे संग चलेगी, और सब झूठी बाता है ॥
 प्राण तुम्हारे पाहुन बंदे, क्यों रिस किये कुँ हाता है ।
 पलटूदास बंदगी चूके, बन्दा ठोकर खाता है ॥

—पलटूदास जी

पलटू साहिब कह रहे हैं कि पानी में पड़े हुए बताशे की तरह ही यह शरीर का खेल है। इस संसार में तो बंदा मुट्ठी बाँधकर आता है और जब जाता है तो हाथ पसारे ही जाता है, कुछ साथ लेकर नहीं जाता। ना तो संसार में कुछ लेकर आता है और ना यहाँ से कुछ लेकर ही जाता है। फिर नाहक में ही किसी के चले जाने पर कोई पश्चाताप करता है। ना तो कोई किसी की पत्नी है और न ही कोई किसी का पति है। हे बंदे! तू विषय की लहर में खोया हुआ है, तेरे जीवन का समय बीतता जा रहा है, कुछ नेकी का काम भी कर ले, क्योंकि एक यही तेरे साथ जायेगी, बाकी सब झूठी बातें हैं, और कुछ साथ नहीं जायेगा। तुम्हारे प्राण तो इस शरीर में मेहमान की तरह हैं, जिन्हें एक दिन तो जाना ही होगा। फिर क्यों नाहक में ही गुस्सा करता है, क्यों रूठता है! पलटूदास कहते हैं कि सद्गुरु की बंदगी के बिना तो हे बंदे! तू नाहक में ही संसार की ठोकरें खाता फिरता है।

मुवा सकल जग देखिया

मुवा सकल जग देखिया, मैं तो जियत न देखा कोय हो ॥
 मुवा मुई को व्याहता रे, मुवा व्याह करि देय ।
 मुए बराते जात हैं, एक मुवा बधाई लेय हो ॥
 मुवा मुए से लड़न को, मुवा जोर लै जाय ।
 मुरदे मुरदे लड़ि मरे, एक मुरदा मन पछिताय हो ॥
 अंत एक दिन मरौगे रे, गलि गुलि जैहै चाम ।
 ऐसी झूठी देह तें, कहें लेव न साँचा नाम हो ॥
 मरने मरना भांति है रे, जो मरि जानै कोय ।
 राम दुवारे जो मरै, फिर बहुरि न मरना होय हो ॥
 इनकी यह गति जानि के, मैं जहँ तहँ फिरौं उदास ।
 अजर अमर प्रभु पाइया, कहत मलूकदास हो ॥

—मलूकदास जी

कह रहे हैं कि मैं सारे संसार को मरा हुआ ही देखता हूँ; जीवित कोई भी दिखाई नहीं देता है। यदि एक दिन मरना ही है तो क्यों न इस झूठी मरी हुई देह से सच्चे नाम का सुमिरन किया जाए! मरते तो सभी हैं, पर जो प्रभु की खोज में नाम-भजन में बैठकर जीवित मर जाए, उसे फिर बार-बार संसार में आकर मरना नहीं पड़ता। वो फिर अजर अमर घर को पा लेता है।

यह जग जैसे सुपन है

यह जग जैसे सुपन है, सुनहु बचन परमान ॥
 यह माया डाइनी, हरहि लेति है प्रान ॥
 पल पल छिन छिन व्यापई, है यम दूत समान ॥
 इत की आसा छोड़िये, भजि लीजे गुरु नाम ॥
 उबरे कोई संत जन, जिन्ह सुमिर्यो है नाम ॥

जन बुल्ला सरनहिं तेरी, सतगुरु काटो बेरी तमाम॥

भव सागर तें उबारिये, दीजे अपनो धाम॥

—बुल्लेशाह जी

कह रहे हैं कि यह संसार तो सपने के समान है; हर पल यम के दूत बैठे हुए हैं; कभी भी तुझे ले जा सकते हैं। इसलिए इसकी आशा छोड़कर गुरु के नाम का सुमिरन कर लो। सद्गुरु के विनती करते हुए कह रहे हैं कि मैं आपकी शरण में हूँ; काल के बंधन को काटकर मुझे अपने धाम ले चलो।

मुसाफिर जैहो कौनी ओर

मुसाफिर जैहो कौनी ओर ॥

काया सहर कहर है न्यारा, दुइ फाटक घनघोर।

काम क्रोध जहँ मन है राजा, बसत पच्चीसो चोर ॥

संसय नदी बहैं जल धारा, विषय लहर उठै जोर।

अब का गाफिल सोवै बौरा, इहाँ नहीं कोई तोर ॥

उतर दिसा इक पुरुष बिदेही, उन पै करो निहोर।

दाया लागै तब लै जैहैं, तब पावो निज ठौर ॥

पाछल पैँड़ा समुझो भाई, ह्वै रहो नाम कि ओर।

कहै कबीर सुनो हो साधो, नाहीं तौ पैहौ झकझोर ॥

—कबीर साहिब

कह रहे हैं, हे जीव रूपी मुसाफिर! तुम किस दिशा में जा रहे हो! काया रूपी नगरी में बड़ा दुख है। इसमें काम और क्रोध के दो बड़े भयानक फाटक हैं। इस नगरी का राजा मन है और इसमें पच्चीस प्रकृतियाँ रूपी पच्चीस चोर भी रहते हैं। इसमें संशय रूपी नदी बहती है, जिसमें बड़ी भयानक लहरें उठती हैं। हे मुसाफिर! तुम बेख़बर होकर क्या सो रहे हो; यहाँ कोई भी तुम्हारा नहीं है। तुम नाम का सहारा पकड़

लेना अन्यथा काल तुम्हें छीनकर ले जायेगा।

इक दिन परलै होइ है हंसा

इक दिन परलै होइ है हंसा, अबहिं सम्हारो हो ॥
 ब्रह्मा विष्णु जब ना रहै, नहिं सिव कैलासा हो ॥
 चाँद सूरज जब ना रहै, नहिं धरनि अकासा हो ॥
 जोत निरंजन ना रहै, नहिं भोग भगवाना हो ॥
 सत विस्नू मन मूल है, परलय तर आई हो ॥
 सोरह संख जुग ना रहै, नहिं चौदह लोका हो ॥
 अंड पिंड जब ना रहै, नहिं यह ब्रह्मण्डा हो ॥
 कबीर हंसा पुरुष मिले, मोरे और न भावै हो ॥
 कोटिन परलय टारि कै, तोहि आँच न आवै हो ॥

—कबीरसाहिब

कह रहे हैं, हे हंसा! इक दिन प्रलय हो जायेगी और कोई नहीं रहेगा। इसलिए अभी से होशियार हो जा। मुझे तो वही जीव अच्छा लगता है जो परम-पुरुष से प्रेम करके उसमें मिल जाए।

चाम के महल में मत भूल बावरे

चाम के महल में मत भूल बावरे,
 स्वप्न का संग है बूझि रहना।
 साँच सो प्रीति कर स्वप्न धोखा तजो,
 चाम अरु नाम को चीन्ह गहना ॥
 जासु का खोज सब रोज तुम करत हो,
 मुकुर की छाह में नाहिं लेना।
 देख ले आपना आपको आपही,
 कहैं कबीर यों सत्य कहना ॥

—कबीर साहिब

हे पगले ! तू शरीर रूपी चमड़े के महल में मत भूल । यह समझ लेना कि यह तो सपने का साथ है । जैसे सपने में मिला शरीर कुछ देर का होता है ; वो छूटना ही है, ऐसे ही यह शरीर भी छूट जाना है । इस शरीर के धोखे को छोड़कर सत्य परमात्मा से प्रेम करना, चमड़ी और आत्मराम की पहचान कर आत्मराम में रम जाना । तुम रात-दिन जिसकी खोज कर रहे हो, उस दर्पण में दिखाई देने वाले प्रतिबिम्ब समान नहीं समझना । साहिब कहते हैं कि मैं सत्य कहता हूँ, तुम अपने आपको अपने ही भीतर देख लेना ।

धुबिया फिर मर जायेगा

धुबिया फिर मर जायेगा चादर लीजै धोय ॥
 चादर लीजै धोय मैल है बहुत समानी ।
 चल सतगुरु के घाट भरा जहाँ निर्मल पानी ॥
 चादर भई पुरानी दिनों दिन बार न कीजै ।
 सतसंगति में सौंद ज्ञान का साबुन दीजै ॥
 छूटै कलमल दाग नाम का कलप लगावै ।
 चलिये चादर ओढ़ि बहुत नहिं भवजल आवै ॥
 पलटू ऐसा कीजिये मन नहिं मैला होय ।
 धुबिया फिर मर जायेगा चादर लीजै धोय ॥

—पलटू साहिब

पलटू साहिब कह रहे हैं कि जीव रूपी धुबिया फिर मर जायेगा, इसलिए शरीर रूपी चादर धो लो, इसमें बहुत पुरानी मैल समाई हुई है । सद्गुरु के घाट पर चल, जहाँ निर्मल जल भरा हुआ है । यह चादर दिनोंदिन पुरानी होती जा रही है, इसलिए देरी मत करो । सत्संग रूप अमृत-जल में इसे भिगोकर ज्ञान का साबुन लगाओ । फिर नाम की माँड़ी

लगाओ, तब इसका दाग भी छूट जायेगा। इस शरीर रूपी चादर को ओढ़कर इस तरह चलो कि फिर संसार-सागर में न आना पड़े। वही यत्न करो कि मन मैला न हो। बाद में तो जीव चला जायेगा, इसलिए चादर को धो लो।

आपन काहे न सँवारे काजा

आपन काहे न सँवारे काजा॥
 ना गुरु भगति साथ की संगत, करत अधम निर्लाजा।
 मानुष जनम फेर नहिं पैहो, सब जीवन के काजा॥
 पर नारी प्यारी करि जानै, सो नर नरक समाजा।
 निजके पंथ भूलिगे भोंदू, करु चलने कै साजा॥
 इहाँ नहीं कोई मीत तुम्हारा, मात पिता सुत आजा।
 ये हैं सब मतलब के साथी, काहे करत अकाजा॥
 वृद्ध भये पर नाम भजतु हैं, निकसत सुरत अवाजा।
 टूटी खाट पुराना झिल्लंगा, पड़े रहो दरवाजा॥
 ब्रह्मा विष्णु महेश डेराने, सुनत काल के गाजा।
 कहैं कबीर सुनो भाई साधो, चढ़िले ज्ञान जहाजा॥

—कबीरसाहिब

हे जीव ! तू अपना कल्याण क्यों नहीं करता ! न तू गुरु की भक्ति करता है, न साधु की संगत करता है और नीच, लज्जित करने वाले कार्यों में लगा हुआ है। याद रख, तुझे मानव-चोला फिर नहीं मिलेगा। यह तो सब योनियों में राजा समान है। जो नर दूसरे की स्त्री से प्रेम करता है, वो नरक में ही जाता है। हे मूर्ख मनुष्य ! तू अपने कल्याण की राह भूल गया है, इसलिए शीघ्र चलने की तैयारी कर। माता-पिता, सुत, पितामह आदि कोई तुम्हारा नहीं है। ये सब मतलब के मीत हैं, तू इनके लिए बुरे कर्म क्यों कर रहा है ? लोग बूढ़े होने पर नाम जपते हैं, उस

समय मुख से आवाज़ नहीं निकलती है। दरवाजे के पास पड़ी टूटी-सी खाट पर वो पड़ा रहता है। काल की आवाज़ से वो त्रिदेव भी रहित नहीं होते। साहिब समझाते हुए कहते हैं कि विचार करके नाम रूपी जहाज़ पर चढ़ जाओ, भवसागर से पार हो जाओगे।

का माँगू कुछ थिर न रहई

का माँगू कुछ थिर न रहाई, देखत नैन चला जग जाई॥
 इक लख पूत सवा लख नाती, ता रावण घर दिया न बाती॥
 लंका सो कोट समुद्र सी खाई, ता रावण की खबरि न पाई॥
 आवत संग न जात संगती, का हुआ दल बाँधे हाथी॥
 कहैं कबीर अंत की बारी, हाथ झाड़ ज्यों चले जुआरी॥

साहिब कह रहे हैं कि किस वस्तु की चाह करूँ, कुछ भी तो स्थिर नहीं रहेगा, आँखों के सामने सब लोग बारी-बारी से जा रहे हैं। जिस रावण के घर में तो एक लाख पुत्र और सवा लाख नाती थे, पर उस रावण के घर में तो कोई दिया जलाने वाला भी नहीं रहा। सोने की लंका, जिसके चारों ओर समुद्र की खाई थी, उस लंका और लंकापति रावण का कुछ पता नहीं चलता कि कहाँ चले गये। हाथी, घोड़े बाँधने से क्या होता है, संग में तो न कुछ लेकर आए थे और न लेकर जाया जा सकता है। साहिब कहते हैं कि अंत समय में ऐसे ही जाना पड़ता है, जैसे जुए में सब कुछ हारने के बाद जुआरी हाथ झाड़ कर चल पड़ता है।

मेरो सैंया निकर गयो मैं न लरी

मेरो सैंया निकर गयो मैं न लरी॥
 ना मैं बोली न मैं चाली, ओढ़ी चुनरिया परी रही॥
 शीश महल के दस दरवाजे, कौन सी खिड़की खुली रही॥

हमारे संग की सात सहेली, न जाने कुछ उनसे कही॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, ऐसी व्याही से कुँवारी भली॥

आत्मा के शरीर में से निकल जाने के बाद देह मानो कह रही है कि मेरे पिया मुझे छोड़ कर चले गये। मैंने उनके साथ कोई लड़ाई-झगड़ा भी नहीं किया, कुछ भी नहीं कहा, पर फिर भी वो मुझे छोड़ कर चले गये और मैं ऐसे ही पढ़ी रह गयी। शरीर रूपी शीश महल के दस दरवाजों में न जाने कौन सा खुला रह गया था, जिसमें से वे निकल गये। हमारी सात सहेलियों में किसी के साथ कुछ बात तो नहीं हो गयी कि वो मुझे ऐसे ही छोड़ कर चले गये। साहिब कह रहे हैं कि ऐसी व्याही से तो कुँवारी ही अच्छी थी।

खबरि नहिं या जग में पल की

खबरि नहिं या जग में पल की।
सुकृत करिले नाम सुमिर ले, को जाने कल की॥
कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी, बात करे छल की।
पाप पुण्य की बाँधि पोटरिया, कैसे होय हलकी॥
तारन बीच चंद्रमा झलके, जोत झलाझल की।
एक दिन पंछी निकल जायगा, मिट्टी जंगल की॥
मातु पिता परिवार भाई बंधु, तिरिया मतलब की।
माया लोभी नगर बसतु है, या अपने कब की॥
यह संसार रैन का सपना, ओस बुन्द झलकी।
कहहिं कबीर सुनो भाई साधो, बातें सतगुरु की॥

—कबीरसाहिब

इस संसार में पल की भी खबर नहीं है, इसलिए अभी अच्छे काम कर ले, नाम सुमिरन कर ले, कल न जाने क्या हो जायेगा! तूने छल से कौड़ी-कौड़ी करके बहुत माया जोड़ी, पर पाप की जो गठरी बाँधी

है, वो कैसे हलकी होगी! आँखों के तारों के बीच आत्म रूपी चंद्रमा चमकता है, उसी से शरीर चेतन है। एक दिन इसमें से पंछी निकल जायेगा तो यह शरीर जंगल की मिट्टी हो जायेगा। माता-पिता, परिवार, भाई-बंधु, स्त्री आदि सब मतलब के हैं। इस नगर में माया के लोभी रहते हैं, वो तेरे कब अपने हुए! जैसे प्रातःकाल ओस की बूँदें मोती समान लगती हैं, पर सूर्य के प्रकाश या हवा के झोंके से समाप्त हो जाती हैं, ऐसे ही यह संसार तो रात के सपने की तरह है, आँख खुली तो समाप्त। साहिब कहते हैं कि सद्गुरु की इन बातों को सुनकर इनपर विचार करो।

भजु मन नाम उमरि रहि थोड़ी

भजु मन नाम उमरि रहि थोड़ी॥
 चारि जने मिलि लेन को आये, लिये काठ की घोड़ी॥
 जोरि लकड़ियाँ फूँक अस दीन्हो, देह जरै जैसे होरी॥
 सीस महल के दस दरवाजे, आन काल ने घेरी॥
 आगर तोड़ी बागर तोड़ी, निकसे प्राण खुपड़िया फोड़ी॥
 पाटी पकरि के माता रोवै, बहिया पकरि के भाई॥
 लट छिटकाये तिरिया रोवै, छूटत है मोर हंस की जोड़ी॥
 गुरु ज्ञान का सुमिरन कर ले, बाँध गाँठ तू पोढ़ी॥
 कहत कबीर सुनो भाई साधो, जिन जोड़ी तिन तोड़ी॥

—कबीर साहिब

हे मन! नाम सुमिरन कर ले, तेरी उमर थोड़ी-सी रह गयी है। एक दिन तो तुझे लकड़ियों से बनी अर्थी पर लिटाकर चार लोग उठा ले जायेंगे। वहाँ लकड़ियों का ढेर लगाकर चिता तैयार कर उस पर तुझे लिटाकर आग लगा देंगे। होलिका की तरह तेरा शरीर जल जायेगा। इस शरीर रूपी महल के दस दरवाजे हैं। जब काल आकर इस शरीर को घेर

लेगा तो जैसे घोड़ा पैर और गले में लगे रस्सियों के बँधनों तो तोड़कर भाग चलता है, वैसे ही तब प्राण इस खोपड़ी को फोड़कर निकल चलेंगे। तब तुम्हारी माँ पेट पकड़ कर रोवेगी, तुम्हारा भाई भुजा पकड़कर रोवेगा और बालों की लटों को छितराकर तुम्हारी बीबी रोयेगी, कहेगी कि आज हमारी हंसी की जोड़ी छूट गयी। साहिब कहते हैं कि जो ये रिश्ते बनाता है, वो ही तोड़ भी देता है, इसलिए तू गुरु-ज्ञान को मजबूती के साथ अपनी गाँठ में बाँध ले और नाम सुमिरन में लग।

जग में कोई नहीं तेरा

दिन चार है बसेरा। जग में कोई नहीं तेरा ॥
 सबही बटाऊ लोग हैं। उठ जाइंगे सवेरा ॥
 अपनी करो फिकर। चलने की जो जिकर ॥
 यहाँ रहन का नहीं काम है। फिर जा करो नहीं फेरा ॥
 तन में पवन बसेई। जावे हवा नस देही ॥
 टुक जीवने के कारने। दुख सहत क्यों यम केरा ॥
 सुख देख क्यों भुलाना। कुछ दिन रहै पर जाना ॥
 जैसे मुसाफिर रात रह। उठ जात है कर डेरा ॥
 क्या सोवता पड़ा। जम द्वार पै खड़ा ॥
 तुलसी तैयारी भोर कर। फिर रात को अँधेरा ॥

—तुलसी साहिब (हाथरस वाले)

मोह की नींद में सो रहे लोगों को समझाते हुए तुलसी साहिब कह रहे हैं कि यह संसार तो कुछ दिनों का बसेरा है, यहाँ तेरा कोई नहीं है। सभी यहाँ पर राही हैं, सुबह अपने-अपने स्थान पर चले जायेंगे। इसलिए तुम अपनी चिंता करो, यहाँ तुम्हारा कोई काम नहीं है, यह शरीर फिर तुम्हें नहीं मिलेगा। शरीर में पवन समाई हुई है और यह उसे छोड़कर चली जायेगी। फिर थोड़े से जीवन के लिए काल का भारी दुख क्यों सह

रहे हो ! तुम सुखों को देखकर क्यों भूले हुए हो, क्या तुम्हें नहीं पता है कि कुछ दिन बाद तुम्हें यहाँ से चले जाना होगा । जैसे मुसाफ़िर रात-भर कहीं ठहरता है और सुबह फिर उठकर चल पड़ता है, इसी तरह तुम्हें भी जाना पड़ेगा । तुम क्या मोह-माया की नींद में सो रहे हो, काल तुम्हारे द्वार पर तुम्हें ले जाने के लिए खड़ा है । तुलसी साहिब कहते हैं कि सुबह ही उठ यानी जल्दी ही इस मोह निद्रा से जाग जा, क्योंकि रात (जीवन का अंतिम समय) को फिर अँधेरा हो जायेगा, फिर तू यहीं भटकता रहेगा ।

करो रे मन वा दिन की तदबीर

करो रे मन वा दिन की तदबीर ॥
जब यमराजा आन पड़ेंगे, नेक धरत नहिं नीर ।
मुरगिन मारि के प्राण निकासत, नैनन भरि हैं नीर ॥
भवसागर इक अगम पंथ है, नदी बहत गंभीर ।
नाव न बेड़ा लोग घनेरा, केवट है गंभीर ॥
घर तिरिया अरधंगी बैठी, मात पिता सुत बीर ।
माल मुलुक की कौन चलावै, संग न जात शरीर ॥
लैकेबोरत नरक कुण्ड में, व्याकुल होत शरीर ।
कहहिं कबीर नर अब चेतो, माफ़ होत तकसीर ॥

साहिब कह रहे हैं कि रे मन ! उस दिन के लिए प्रयास करो जब अचानक मौत का देवता यम आकर मुंगलियों से मार-मारकर तुम्हारे शरीर से प्राणों को निकाल ले जायेगा । तब तुम्हारी आँखों में आँसू ही आयेंगे । यह भवसागर तो अथाह है, यहाँ मोह-ममता रूपी गंभीर नदी बह रही है, जिसे पार करना बड़ा कठिन है । इसे पार करने के लिए कोई नाव भी नहीं है । बहुत से लोग इससे पार होना चाहते हैं, पर कर्मों का केवट बड़ा निर्दयी है, इसलिए पापों का बोझा लादकर कैसे पार हों ! घर

में तो पत्नी भी बैठी हुई है, माता-पिता, पुत्र, भाई आदि भी हैं, धन-धौलत और राज-काज भी है, पर इनकी बात क्या करनी है, संग में तो अपना शरीर भी नहीं जायेगा। वो यमराज जब ले-जाकर नरक-कुण्ड में डालेगा तो शरीर बहुत व्याकुल होगा। साहिब कह रहे हैं कि अभी से सचेत हो जाओ, अच्छे कर्म करते हुए भक्ति में लग जाओ, तभी सब गुनाह माफ़ होंगे।

जाग जाग जंजाली जियरा

जाग जाग जंजाली जियरा, यह तो मेला हाट का।
 धोबी घर के कुत्ता होइहौ, नहिं घर का न घाट का॥
 खानिन भ्रमत अमित दुख पायो, मानुष तन यह हाथ का।
 माथे भार धर्यो ममता का, मानो घोड़ा भाँट का॥
 दुनिया दौलत माल खजाना, जामा दरकस पाट का।
 सोने रूप भंडार भरे हैं, धरा सन्दूक काठ का॥
 मातु पिता सुत बन्धु सहोदर, कुटुंब कबीला ठाट का।
 अंत की बेरिया चला अकेला, मानो बटोही बाट का॥
 आये संत आदर न कीन्हों, धंधा किहो घर घाट का।
 कहहिं कबीर सुनो भाई साधो, भयो किरौना खाट का॥

हे संसार के जंजाल में पड़े हुए जीव! मोह-माया से जाग जा। यह संसार तो बाजार का मेला है, जो उठ जायेगा। तुम तो धोबी के कुत्ते की तरह बन गये हो, जिसे न घर में कुछ मिलता है, न घाट पर। इस संसार में उसे निराशा ही हाथ में लगती है। हे मनुष्य! तू नाना योनियों में भटकते हुए असीम दुख को प्राप्त हुआ, आत्म कल्याण संभव न था। अब तुम्हारे हाथ मानव-तन लगा तो तूने अपने सिर पर ममता का बोझ लाद दिया। जैसे भाड़े का घोड़ा बोझा लादता है, वैसा ही हाल तूने अपना बना लिया है। तुम्हारे पास दुनिया की दौलत है, बहुत सारा माल

है, रेशमी वस्त्र हैं, उन्हें रखने की पेटी भी है। सोने, चाँदी के भण्डार हैं, लकड़ी के संदूक में माल भरा है। माता-पिता, पुत्र, भाई-बंधु, कुटुम्ब, कबीला सब कुछ है तुम्हारे पास। पर अफसोस! अंत में तुम्हें ऐसे ही चलना पड़ेगा जैसे रास्ते का पथिक कुछ देर विश्राम करने के बाद उठ कर चल पड़ता है। हे मानव! जब तुम्हारे द्वार पर संत आए तो तुमने उन्हें आदर-सम्मान नहीं दिया, केवल परिवार के धंधे में ही लगा रहा। साहिब कह रहे हैं कि मेरी बात सुनकर इस पर विचार करो कि यह मनुष्य तो खाट के कीड़े के समान होकर जन्म व्यर्थ कर रहा है।

चेत सबेरा चलना बाट

चेत सबेरा चलना बाट, यह जग देखा झूठा ठाट ॥
 चलने की तजबीज न कीन्हा, मजलों की खर्ची न लीन्हा।
 अच्छी राह ताहि न चीन्हा, अब का सोता गाफिल खाट ॥
 चंचल मन का घोड़ा कीन्हा, ज्ञान लगाम ताहि दे दीन्हा।
 हो होसियार बेगि गहि लीन्हा, भवसागर का चौड़ा पाट ॥
 मित्र कुटुम्ब कोई न तेरा, ये सब हैं स्वारथ के बेरा।
 यहाँ नहीं तेरा निश्चल डेरा, इनसे चलना बेग उचाट ॥
 मन माली तन बाग लगाया, चलत मुसाफिर को बिलमाया।
 विष के लाडू देत खिलाई, लूट लीन्हें मारग पर हाट ॥
 तन सराय में मन अरुझाना, भठियारी के रूप लुभाना।
 निसदिन वाके बच के रहना, सौदा कर सतगुरु के हाट ॥
 जल्दी चेतो साहिब सुमिरो, दसों द्वार जम आगे पकरो।
 कहहिं कबीर सुनो भाई साधो, अब का सोवै बिछाये खाट ॥

हे जीव रूपी मुसाफिर! जाग जा। सुबह होते ही तुझे अपनी राह चलना है। यह संसार का ऐश्वर्य तो झूठा है। तूने अपने कल्याण की राह पर चलने का विचार नहीं किया और साधु सेवा तथा प्रभु भजन के रूप

में रास्ते का खर्च भी नहीं लिया। तूने अच्छी राह को नहीं पहचाना, तू गफलत की खाट पर सोता क्या कर रहा है ! चंचल मन को घोड़ा बना लो, उसपर ज्ञान की लगाम दो और होशियार होकर इस लगाम को शीघ्र ही पकड़ लो, क्योंकि भवसागर का रास्ता बड़ा लंबा है। मित्र, परिवार आदि में से कोई भी तेरा नहीं है। ये सब स्वार्थ तक तुम्हारे साथ हैं। यह तुम्हारा स्थायी पड़ाव नहीं है, तुम्हें इनसे विरक्त होकर जल्दी ही चलना होगा। मन रूपी माली ने तन रूपी बाग लगाया है और उसमें जीव रूपी मुसाफिर को मोहित कर दिया, भड़का दिया, उसे ज़हर के लड्डू खिलाकर सब ज्ञान छीन लिया। शरीर रूपी सराय में मन ने उलझा दिया और जीव माया के रूप पर मोहित हो गया। साहिब कहते हैं कि सद्गुरु के सत्संग में जाकर सत्य नाम का सौदा कर लो, यदि दिन-रात इस मन से बचे रहना है। हे जीव ! तू जल्दी से जग जा और साहिब का सुमिरन कर। दसों द्वारों को यम ने घेर लिया है। साहिब कहते हैं कि अब सोने से क्या होगा, जाग जाओ

चादर हो गयी बहुत पुरानी

चादर हो गयी बहुत पुरानी, अब तो सोच समझ अभिमानी॥
 अजब जुलाहा चादर बीनी, सूत करम की तानी।
 सुरति निरति का भरना दीनी, तब सबके मन मानी॥
 मैले दाग परे पापन के, विषयन में लपटानी।
 ज्ञान का साबुन लाय न धोया, सतसंगति का पानी॥
 भई खराब गई अब सारी, लोभ मोह में सानी।
 सारी उमर ओढ़ते बीती, भली बुरी नहिं जानी॥
 शंका मानि जान जिय अपने, है यह वस्तु बिरानी।
 कहैं कबीर यहि राखु यतन से, ये फिर हाथ न आनी॥
 हे मानव ! तुम्हारी शरीर रूपी चादर अब बहुत पुरानी हो गयी

है, तुम बुढ़ापे की ओर बढ़ रहे हो, अब तो कुछ सोच और भक्ति में लग। इस शरीर रूपी चादर को बुनने वाला काल-निरंजन बड़ा अजब है, उसने इसमें कर्म का सूत लगाया, फिर सुरति-निरति का भरना दिया, तब जाकर इस देह का आभास हुआ। पर हे मानव! विषयों में, पापों में लिपटाकर इसे तूने गंदा कर दिया। ज्ञान रूपी साबुन और सत्संगति रूपी अमृत जल से इसे तूने कभी निर्मल नहीं किया। सारी उमर बीत गयी इसे ओढ़ते-ओढ़ते, पर भले-बुरे का ज्ञान नहीं हुआ, लोभ-मोह में सनकर यह अब बहुत खराब हो गयी। तुम इस बात को समझ लो कि यह तुम्हारी अपनी नहीं है, यह बिरानी चीज़ है, चली जाएगी, इसलिए इसे संभाल कर रख, पापों में लिप्त होकर खराब न कर।

भँवरवा के तोरे संघवा जाई

भँवरवा के तोरे संघवा जाई ॥
 आवे की बेरिया बड़ा खुश होला, दुआरा पे बाजे बधाई।
 जात की बेरिया बड़ा दुख होला, हंस अकेला जाई ॥
 डेहरी पकड़ि के मेहरी रोवे, बाँह पकड़ि सग भाई।
 अंगना के बिचवा पिता जी रोवैं, बबुआ के होंगे बिदाई ॥
 कहत कबीर सुनो भाई साधो, यह पद है निर्बानी।
 जो ई पग का अर्थ लगावे, जगत पार होइ जाई ॥

मानव को चेताते हुए साहिब कह रहे हैं कि हे भ्रमर जीव! कौन तेरे साथ जाने वाला है! जब तू इस संसार में आया था तो घर वाले बड़े खुश हुए थे, बधाइयाँ दी गयीं थी। दूसरी ओर जब तू यहाँ से जाता है तो वे बड़े दुखी होते हैं। तुझे अकेले ही यहाँ से जाना पड़ता है। तेरी पत्नी डेहरी को पकड़कर रोती है, सगे भाई बाँह पकड़कर रोते हैं, पिता जी आँगन में रोते हैं। ऐसे में तुम्हारी बिदाई हो जाती है। साहिब कहते हैं कि जो इस बात को समझ जाता है, वो इस संसार से पार हो जाता है।

सत्य नाम का सुमिरन कर ले

सत्य नाम का सुमिरन करले, कल जाने क्या होय ।
जागु जागु नर निज आतम में, काहे बिरथा खोय ॥
जेहि कारण तू जग में आया, वो नहिं तूने करम कमाया ।
मैला का मैला तेरा, काया मल मल धोय ॥
दो दिन का है रैन बसेरा, कौन है मेरा कौन है तेरा ।
हुआ सबेरा चला मुसाफिर, अब क्या नैन भिगोय ॥
गुरु का शब्द जगा ले मन में, चौरासी से छूटे क्षण में ।
ये तन बार बार नहिं पावै, शुभ अवसर क्यों खोय ॥
ये दुनिया है एक तमाशा, कर नहिं बंदे इसकी आशा ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, साईं भजे सुख होय ॥

हे जीव ! तू सत्य नाम का सुमिरण कर ले, क्योंकि कल का कोई भरोसा नहीं है, क्या हो जाएगा । तू अपनी आत्मा में जाग जा, क्यों अपना जन्म बेकार में खो रहा है । जिस कारण तू इस संसार में आया है, तूने वो काम नहीं किया । तूने काया को खूब मल-मलकर धोया, पर तेरा मन मैला का मैला ही रहा । यह जीवन तो दो दिन का रैन बसेरा है, यहाँ क्या मेरा-तेरा लगा रखा है । जैसे सुबह होते ही रैन का मुसाफिर उठकर चल पड़ता है, ऐसे ही तुझे भी जाना ही पड़ेगा, फिर रोता क्यों है तू गुरु शब्द को मन में जगा ले, जिससे चौरासी के चक्कर से पल में छूट जायेगा । यह मानव-तन बार बार नहीं मिलने वाला है, फिर तू इस अवसर को क्यों खोता है ! यह दुनिया तो काल का तमाशा है, तू इसकी आशा न कर । साहिब कहते हैं कि विचार करके प्रभु के भजन में लग जाओ, उसी में सुख मिलेगा ।

तन का यही तमासा है

पानी बीच बतासा संतो, तन का यही तमासा है ॥
 क्या ले आया क्या ले जायेगा, क्या बैठा पछताता है ।
 मूठी बाँधे आये जगत में, हाथ पसारे जाता है ॥
 किसकी नारी कौन पुरुष है, कहाँ से नाता लगता है ।
 बड़े निहाल खबर न तनकी, बिरही लहर बुझाता है ॥
 इक दिन जीना दो दिन जीना, जीना बरस पचासा है ।
 अंतकाल बीसा सौ जीना, फिर मरने की आसा है ॥
 ज्यों ज्यों पाँव धरो धरती में, त्यों त्यों यम नियराता है ।
 कहें कबीर सुनो भाई साधो, गाफिल गोता खाता है ॥

हे संतो ! पानी में पड़े बताशे की तरह इस शरीर का हाल है । न कोई यहाँ कुछ लेकर आया है और न ले जायेगा, फिर पछताते क्यों हो ! मुट्ठी बाँधकर तुम इस संसार में आए थे और एक दिन हाथ पसारकर चले जाओगे । न कोई किसी की पत्नी है, न कोई किसी का पति है, यह कौन सा नाता बना रहा है ! किसी दृष्टि से तुम्हारा किसी से कोई नाता नहीं है । माया के मजे में तुझे अपने तन की सुध भी भूल गयी है और तू वासना की लहर बुझाने में लगा है । एक दिन जी लोगे, दो दिन जी लोगे, पचास वर्ष जी लोगे, ज्यादा-से-ज्यादा सौ साल जी लोगे, फिर तो मरना ही है । तुम जितना-जितना धरती पर पैर रखते हो, उतना ही यम तुम्हारे निकट आता-जाता है । साहिब कहते हैं कि माया में लिप्त मनुष्य भवसागर में डूब जाता है ।

जागु जागु उठि जागु रे

क्या सोवै गफलत के माते, जागु जागु उठि जागु रे ॥
 और कोई तोर काम न आवै, गुरु चरणन उठि लागु रे ॥
 उत्तम चोला बना अमोला, लगत दाग पर दाग रे ॥

दुइ दिन का गुजरान जगत में, जरत मोह की आग रे ॥
 तन सराय में जीव मुसाफिर, करता बहुत दिमाग रे ॥
 रैन बसेरा करले डेरा, चलन सबेरा ताक रे ॥
 ये संसार विषय रस माते, देखो समुझि विचार रे ॥
 मन भँवरा तजि विष के बन को, चलु बेगम के बाग रे ॥
 केंचुलि करम लगाइ चित्त में, हुआ मनुष ते नाग रे ॥
 पैठा नाहिं समुझ सुख सागर, बिना प्रेम बैराग रे ॥
 साहिब भजै सो हंस कहावै, कामी क्रोधी काग रे ॥
 कहैं कबीर सुनो भाई साधो, प्रगटे पूरण भाग रे ॥

हे ग़फ़लत की नींद सोने वाले जीव ! जाग जा । इतनी बात समझ लें कि और कुछ तेरे काम नहीं आयेगा, इसलिए तू सद्गुरु के चरणों में ध्यान लगा । तुझे यह अमोलक मानव-चोला मिला है, पर इस पर विषयों के दाग़ पर दाग़ लग रहे हैं । इस संसार में थोड़ा समय ही रहना है, फिर भी तू मोह की आग में जल रहा है । शरीर रूपी सराय में हे जीव रूपी मुसाफ़िर ! तू बहुत अहंकार करता है, रात-भर (कुछ समय) के लिए बसेरा कर ले, पर सुबह (समय आने पर) तुम्हें यहाँ से चलना ही होगा । यह संसार विषयों में लिप्त हो गया है, पर विचार कर कि इनमें कुछ नहीं रखा है । हे भँवरे ! तू विषय रूपी बन को त्याग दो और परमात्मा के घर में चल । तू अपने चित्त पर गंदे कर्मों की केंचुली लगाकर मनुष्य से साँप हो गया है, पर याद रख, बिना ईश्वर-प्रेम और वैराग्य के सुख-सागर में नहीं पहुँच सकता । साहिब कहते हैं कि जो कामी, क्रोधी हैं, वे तो कौवे के समान हैं, पर जो साहिब की भक्ति करते हैं, वे हंस समान हैं और वे बड़े भाग्यवान हैं ।

देह तो देख मिल जायेगी खेह में

देह तो देख मिल जायेगी खेह में,
 देह से काज कुछ कीजिये रे ।
 साहिब का भजन औ गुरु की बंदगी,
 देह धरि लाभ यह लीजिये रे ॥
 चालती कौड़ियाँ काज भल कीजिए,
 कौड़ियाँ साथ कुछ नाहिं जाई ।
 प्राण के छूटते पलक नहिं यार की,
 कहैं कबीर सुन चेत लाई ॥

साहिब समझाते हुए कह रहे हैं कि यह शरीर तो धूल में मिल जायेगा, इसलिए जब तक यह है, कुछ काम ले लो इससे। साहिब का भजन और गुरु की बंदगी करने का लाभ ले लो। यदि पास में कुछ धन है, तो उससे भले काम कर, दूसरों की सेवा कर। ये प्राण कब छूट जाएँ, कुछ पता नहीं है, इसे ध्यान से समझ ले।

पड़े अविद्या में सोने वालो

पड़े अविद्या में सोने वालो, खुलेंगी आँखें तुम्हारी कब तक।
 शरण में आने को सद्गुरु की, करोगे अपनी तैयारी कब तक ॥
 गया न बचपन वो खेल बिन है, चढ़ी जवानी ये चार दिन हैं।
 समय बुढ़ापे का फिर कठिन है, रहोगे ऐसे अनारी कब तक ॥
 अजब अटारी और चित्रसारी, मिली मनोहर है तुमको नारी।
 बढ़ी है दौलत की जो खुमारी, रहेगी ऐसी ये सारी कब तक ॥
 जो यज्ञ आदिक हैं कर्म नाना, फल है उन्हीं का सुख स्वर्ग पाना।
 मिटे न इनसे भव आना जाना, सहोगे संकट ये भारी कब तक ॥
 कबीर तो कहते हैं पुकारी, तुम्हीं को है अखितयारी।
 सुनो अगर ना सुनो हमारी, बनोगे सच्चे विचारी कब तक ॥

हे अज्ञान की नींद सोने वालो! तुम्हारी ज्ञान की आँखें कब खुलेंगी और कब तुम सद्गुरु शरण में आने की तैयारी करोगे! बचपन तो खेल में बीत गया, जवानी के चार दिन ही है, फिर बुढ़ापा आ जायेगा, वो समय बड़ा कठिन होगा, इसलिए समझ जाओ, कब तक मूर्ख बने रहोगे! तुम्हारे पास विचित्र भवन है, विचित्र अटारी है, चित्रशाला भी है, तुम्हें सुंदर नारी भी मिली है, तुम्हारे पास धन-दौलत भी बहुत है, पर इस दौलत का नशा, जो तुम पर चढ़ा है, वो आखिर कब तक रहेगा! यज्ञ आदि, जो नाना कर्मकाण्ड हैं, उसका फल तो स्वर्ग का स्वर्ग का सुख पाना है, पर स्वर्ग जाने से संसार का आवागमन तो मिटेगा नहीं, लगा रहेगा, फिर चौरासी का भारी कष्ट कब तक सहोगे! साहिब पुकार कर कह रहे हैं कि अपना कल्याण करने का जिम्मा तुम्हारा ही है, इसलिए मेरी बात सुनो, अगर तुम अभी मेरी बातों पर ध्यान नहीं दोगे तो फिर कब विचार करोगे! कब अपने कल्याण का प्रयत्न करोगे!

समझ मन कोई नहीं अपना

समझ मन कोई नहीं अपना ॥

प्राण नाथ जब निकरन लागै, मुहँ पर परे झपना ॥

धरती धन आपन करि लेहैं, तुम्हें देहैं सिर्फ कफना ॥

जो कुछ आय किहौ या जग में, तौन जाई संग मा ॥

कहहिं कबीर सुनो भाई साधो, ई जगत भया सपना ॥

हे मन! समझ, यहाँ कोई अपना नहीं है। जब अंत समय में प्राण निकलने लगेंगे तो आँखों के आगे अँधकार छा जायेगा। तब तुम्हारे अपने तुम्हारी धरती, धन आदि को अपना बना लेंगे और तुम्हें केवल कफन दे देंगे। जो कुछ तुमने इस संसार में अच्छा-बुरा कर्म किया, वही तुम्हारे साथ में संस्कार रूप में जायेगा और उन्हीं का फल तुम भोगोगे। साहिब कहते हैं कि मेरी बात पर विचार करो कि सपने के समान ही यह संसार लुप्त हो जायेगा।

रहना है होशियार नगर में

रहना है होशियार नगर में, इक दिन चोरवा आवेगा ।।
 तोप तीर तलवार न बरछी, नाहीं बंदूक चलावेगा ।।
 आवत जात लखे नहिं कोई, घर में धूम मचावेगा ।।
 ना गढ़ तोड़े ना गढ़ फोड़े, ना वह रूप दिखावेगा ।।
 नगरी से कुछ काम नहीं है, तुझे पकड़ ले जावेगा ।।
 नहिं फरियाद सुनेगा तेरी, तुझे न कोई बचावेगा ।।
 लोग कुटुम्ब परिवार घनेरे, एक भी काम न आवेगा ।।
 सुख सम्पत्ति धन धाम बढ़ाई, त्याग सकल तू जावेगा ।।
 ढूँढ़ै पता लगे नहिं तेरा, खोजी खोज न पावेगा ।।
 है कोई ऐसा सन्त विवेकी, हरि गुण आय सुनावेगा ।।
 कहहिं कबीर सुनो भाई साधो, खोल किंवारी जावेगा ।।

—कबीर साहिब

हे जीव ! शरीर रूपी नगर में होशियार रहो, एक दिन यम रूपी चोर इसमें आयेगा । वह न तोप चलायेगा, न तीर, न तलवार, न बरछी और न बंदूक । उसे कोई आते-जाते देख भी नहीं पायेगा । वह शरीर रूपी घर में आकर उपद्रव मचायेगा । वह शरीर के किले को तोड़े-फाड़ेगा भी नहीं और न ही अपना रूप दिखायेगा । उसे इस शरीर रूपी नगरी से कोई काम नहीं है, वो तो बस तुझे पकड़कर ले जायेगा । वो तेरी कोई फरियाद भी नहीं सुनेगा और न कोई दूसरा ही तुझे उससे बचा पायेगा । तेरे जितने भी मित्र-कुटुम्बी आदि हैं, कोई एक भी तेरे काम नहीं आयेगा । सुख-संपत्ति, धन-धाम, मान-बढ़ाई आदि सब यहीं छोड़कर तू चला जायेगा । यदि तुझे कोई ढूँढ़ने की कोशिश करेगा तो उसे पता न चल पायेगा कि तू कहाँ गया है । साहिब कहते हैं कि कोई विवेकी संत ही होता है, जो सच्चे परमात्मा का ज्ञान सुनाता है और ऐसे गुरु से ज्ञान प्राप्त करने वाला अपनी सुरति के भीतर के 11वें द्वार को खोल अपने सही घर चला जायेगा ।

छुटि जैहैं धन धामा

भजि लीजै सतगुरु नाम, काम सकल तजि दीजै ॥
 मातु पिता सुत नारि बाँधवा, आवै ना कोउ कामा ।
 हाथी गोड़ा मुलुक खजाना, छुटि जैहैं धन धामा ॥
 जब तुम आया मूठी बाँधे, हाथ पसारे जाना ।
 सूखा हाथ जगत की माया, ताहि देख ललचाना ॥
 नर तन सुभग भजन के लायक, कौड़ी हाट बिकाना ।
 हरिगा ज्ञान परा कुसंगति, अमृत में विष साना ॥
 एक न भूला दुइ ना भूला, भूला सब संसारा ।
 पलटूदास हम कहा पुकारी, अब ना दोस हमारा ॥

—पलटूसाहिब

पलटू साहिब कह रहे हैं बाकी सब काम छोड़कर सद्गुरु का नाम ही जपो । माता-पिता, पुत्र, स्त्री, भाई आदि कोई भी अंत समय काम नहीं आयेगा । हाथी, घोड़े, धन, महल आदि सब छूट जायेंगे । हे मनुष्य ! तू मुट्ठी बाँधे इस संसार में आया था और हाथ पसारे हुए जायेगा । जब तुझे खाली हाथ ही इस संसार से जाना है तो फिर क्यों झूठी माया को देखकर ललचा रहा है । यह सुंदर मानव-तन, जो भजन के लायक है, उसे तू माया के बाजार में कौड़ी का बेच रहा है । तेरा सारा ज्ञान माया द्वारा चुरा लिया गया है, इसलिए तूने माया के कुसंग में पड़कर अमृत समान जीवन में विषय-वासनाओं का विष घोल दिया है । संसार की माया में कोई एक-दो जीव नहीं भूले हुए हैं, बल्कि सारा संसार ही इस माया में भूला हुआ है । पलटू साहिब कह रहे हैं कि मैंने तो सबको पुकार-पुकार कर कहा है कि इस माया से बचो, पर बार-बार समझाने से भी कोई समझता नहीं है तो अब मेरा क्या दोष !

देह तो मलिन अति

देह तो मलिन अति, बहु बिकार भरि,
 ताहू माहैं जरा ब्याधि, सब दुख रासी है ।
 कबहूँक पेट पीर कबहूँक सिर वाय,
 कबहूँक आँख कान मुख में विथा सी है ॥
 औरहू अनेक रोग नख सिख पूरि रहै,
 कबहूँक स्वास चलै कबहूँक खाँसी है ।
 ऐसो ये सरीर ताहि अपनो कै मानत है,
 सुन्दर कहत या में कौन सुख बासी है ॥

—सुन्दर दास जी

देह के दुख का वर्णन करते हुए सुन्दर दास जी कह रहे हैं कि यह देही तो बड़ी ही गंदी है, विषय-विकारों से भरी हुई है। इस शरीर में रोग हैं, पीड़ा है, बुढ़ापा है और दुखों की खानि है। कभी पेट में दर्द हो जाता है, कभी सिर में दर्द हो जाता है, कभी स्वाँस का कष्ट हो जाता है, कभी आँख में कष्ट हो जाता है, कभी नाक में कष्ट हो जाता है, कभी मुख में कष्ट हो जाता है। पाँव के नाखून से लेकर सिर तक और भी बहुत सारे रोगों से यह भरा हैं। कभी तो स्वाँस तेज़ चलने लगती है, कभी खाँसी हो जाती है। ऐसे शरीर को मनुष्य करके मानता है। सुन्दर दास कहते हैं कि इस देही में कोई भी सुखी नहीं है।

जीव बिपति तोको समझाऊँ

सुनु हिरदे में कहा बताऊँ । जीव बिपति तोको समझाऊँ ॥
 चार खान जीवन की होई । जामें सुखी न देखा कोई ॥
 जन्म मरन क्या कहूँ अलेखी । पूछै कही जाय नहिं एकी ॥
 जन्मत गर्भ माहिं का लेखा । जरते जठर अगिन में देखा ॥
 ज्यों कीड़े मोरी के माहीं । तड़पत जेठ तपन में भाई ॥

छटपट करे तपत रहे पानी। येही दसा गर्भ में जानी॥
जन्मत जीव जबर दुख भारी। बाहर की कहूँ बिपति बिचारी॥
जोनी संकट की सुनु भाई। रहे नौ मास नरक की माहीं॥
उलटे गर्भ रहा लटकाना। औंधे मुख मल मुत्र समाना॥

—तुलसी साहिब (हाथरस वाले)

तुलसी साहिब अपने शिष्य से कह रहे हैं, हे हृदय! जीव के संकट के बारे में बताता हूँ। यह जीव चार खानियों में घूम रहा है और इन चारों में कोई भी जीव सुखी नहीं है। अगर जन्म-मरण की बात पूछो तो एक के दुख भी नहीं कहे जायेंगे। जब माँ के पेट में आता है तो जठर अग्नि का बड़ा कष्ट सहता है। जैसे किसी सुराख में कीड़ा पड़ा हो और जेठ की गर्मी में वो तड़पता है, ऐसे ही जीव की हालत होती है। जब बाहर आता है, तब जो दुख मिलते हैं, उन पर तो विचार किया जा सकता है, पर वहाँ जो कष्ट मिलता है, वो बहुत भारी है। बहुत ही कष्ट होता है। नौ महीने नरक में मल-मूत्र के बीच औंधे मुँह लटका रहता है।

सब दिन होत न एक समाना

सब दिन होत न एक समाना॥
एक दिन राजा हरिश्चंद्र गृह, कंचन भरे खजाना।
एक दिन भरै डोम घर पानी, मरघट गहे निशाना॥
एक दिन राजा रामचंद्र जी, चढ़े जात विमाना।
एक दिन उनका बनोबास भये, दसरथ तज्यो पराना॥
एक दिन अर्जुन महाभारत में, जीते इन्द्र समाना।
एक दिन भिल्लन लूटी गोपिका, वही अर्जुन वही बाना॥
एक दिन बालक भयो गोदी मा, एक दिन भयो जवाना।
एक दिन चिता जलै मरघट पर, धुवाँ जात असमाना॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, यह पद है निर्बाना।

यह पद का जो अर्थ लगावै, होनहार बलवाना॥

—कबीर साहिब

सब दिन एक समान नहीं होते, समय बदलता रहता है। एक समय था जब राजा हरिश्चंद्र के घर के खजाने में सोना भरा पड़ा था, पर एक दिन वो भी आया जब काशी के एक डोम के घर पर पानी भरना पड़ा और श्मशान में लाशें जलाने का काम करना पड़ा। एक दिन राजा रामचंद्र जी विमान में बैठे घूमते थे, पर एक दिन ऐसा आया कि बनवास हो गया, जंगलों में पैदल चलना पड़ा और वियोग में राजा दशरथ ने प्राण त्याग दिये। एक दिन वो भी था जब महाभारत में अर्जुन ने इन्द्र के समान बलवान होकर कौरवों को अपने वाणों से मार गिराया था, पर एक दिन वो भी आया, जब द्वारिका के विनाश होने पर वो गोपियों, बच्चों आदि को लेकर हस्तिनापुर जा रहे थे तो रास्ते में भीलों ने उन्हें घेर कर लूट लिया। तब भी अर्जुन के पास वही घाण्डीव धनुष था और वही वाण भी थे, पर वो कुछ न कर सका।

एक दिन वो होता है, जब बालक पैदा होता है और माँ की गोद में खेलता है। एक दिन वही बालक जवान हो जाता है, माँ की गोद में नहीं खेलता और एक दिन वो मर जाता है और श्मशान में लकड़ियों पर जलाया जाता है और उसका धुआँ आकाश में उड़ता है। साहिब कहते हैं कि मेरी बात पर विचार करो, यह मुक्ति प्रदान करने वाला पद है। जो इसे समझ लेगा, वो भविष्य को जानने में भी सक्षम होकर साहिब के भजन में लग जायेगा।

दिवाने मन को है तेरा साथी

दिवाने मन को है तेरा साथी॥

जैसे बुन्द ओस का मोती, ऐसी काया जाती।

तन से मनुआ न्यारा वह है, तन है जैसी माटी॥

खाले पीले दे ले ले ले, ये हैं आगे आधी।
 दिना चार साहिब को भजले, कहूँ बाँधेगी गाँठी।।
 भाई बंधु सब कुटुम कबीला, और हैं बेटा नाती।
 ई सब तुम्हरे काम न आये, दिन की हुड़हैं राती।।
 चार जने मिलि ले के चलिहैं, ऊपर चादर तानी।
 कहैं कबीर सुनो भाई साधो, सतगुरु कह गये बानी।।

—कबीर साहिब

हे पगले मन! संसार में तुम्हारा मित्र कौन है! जैसे ओस की बूँदें मोती समान लगती हैं, पर सूर्य किरणों और हवा के झोंकों से नष्ट हो जाती हैं, ऐसे ही यह काया भी नष्ट हो जाती है। वो आत्मा तो इस शरीर से न्यारा है और शरीर तो जैसे मिट्टी ही है। अभी जितना चाहे खा-पी ले, लेन-देन कर ले, पर यह सब अधूरा ही रह जायेगा। चार दिन की तो तेरी ज़िंदगी है, तू साहिब का भजन कर ले, इस माया की गाँठ बाँधकर कहाँ ले जायेगा! अंत समय में जब दिन से रात हो जायेगी, सुख-चैन की ज़िंदगी दुखों से भरपूर हो जायेगी तो भाई-बंधु, कुटुम्ब-कबीला, बेटे-नाती आदि में से तो कोई तेरे काम नहीं आयेगा। मरने पर तुम्हारे ऊपर एक चादर डाल देंगे और चार लोग मिलकर तुम्हें उठा ले जायेंगे। साहिब कहते हैं कि इस सत्य पर विचार करो, सद्गुरु यह सावधान कर गये हैं।

काया बौरी चलत प्राण काहे रोई

काया बौरी चलत प्राण काहे रोई।।
 काया पाय बहुत सुख कीन्हों, नित उठि मलि मलि धोई।
 सो तन छिया छार होय जैहैं, नाम ना लेहैं कोई।।
 कहत प्राण सुन काया बौरी, मोर तोर संग न होई।
 तोहि अस मित्र बहुत हम त्यागा, संग न लीन्हा कोई।।

लट छिटकाये माता रोवै, खाट पकड़ के भाई।
 आँगन बैठी तिरिया रोवै, हंस अकेला जाई॥
 शिव सनकादिक औ ब्रह्मादिक, शेष सहस मुख होई।
 जो जो जन्म लिया बसुधा में, थिर न रहो है कोई॥
 पाप पुण्य दोऊ जन्म संघाती, समुझ देख नर लोई।
 कहत कबीर अभिअंतर की गति, जानत बिरला कोई॥

—कबीर साहिब

प्राणों के निकल जाने पर हे पगली काया! तू क्यों रोती है ?
 काया को पाकर तूने बड़ा सुख भोग किया, काया को मल-मल धोया,
 पर यह गंदी काया तो एक दिन धूल में मिल जायेगी और इसका नाम लेने
 वाला भी कोई नहीं रहेगा। प्राण कहते हैं, हे पगली काया! मेरा-तेरा कोई
 साथ नहीं है, तेरे जैसे कई साथी मैंने छोड़ दिये हैं, किसी को भी अधिक
 देर तक अपने साथ नहीं रखा। मेरे निकल जाने के बाद तेरी माँ सिर के
 बाल पकड़ कर रोती है, तेरी खाट पकड़कर तेरा भाई रोता है, आँगन
 में बैठकर तेरी स्त्री रोती है, पर हंस इन सबको छोड़कर अकेला चल
 पड़ता है।

शिव-सनकादिक ही क्यों न हों, जिसने भी पृथ्वी पर जन्म
 लिया, कोई भी यहाँ स्थिर होकर नहीं रहा। इस बात को समझो कि पाप
 और पुण्य ही जीव के साथ जाते हैं। साहिब कहते हैं कि कोई बिरला
 ही अंतःकरण की स्थिति को जानता है।

भजन कर बीती जात घरी

भजन कर बीती जात घरी॥
 जग में आया हवा जब लागी, माया अमल करी।
 दूध पिये मुसकात गोद में, किलकिल कठिन करी॥
 खात पियत ऐंड़ात गली में, खेलत डग डगरी॥

जवान भये तरुनी संग माते, अब कहु कैसे करी॥
 वृद्ध भये तन काँपन लागे, थरथर डगमग ही।
 कहैं कबीर सुनो भाई साधो, बिरथा जनम गई॥

गुरु के नाम भजन के बिना यह जीवन यूँ ही बीता जा रहा है। संसार में आते ही जीव को मायाबी हवा लग जाती है और वो माया के नशे में खो जाता है। छोटा होने तक तो माँ की गोद में ही रहता है और खूब किलकारियाँ मारता है। जब थोड़ा बड़ा हो जाता है तो फिर खेलकूद शुरू हो जाता है। उसी में रम जाता है। फिर जवान होने पर स्त्री में खो जाता है। इस तरह माया के नशे में ही जीवन व्यतीत हो जाता है, देखते-ही-देखते बुढ़ापा आ जाता है, शरीर काँपने लग जाता है और जीवन बेकार में ही समाप्त हो जाता है।

आखिर यह तन खाक मिलेगा

मन लागो मेरा यार गरीबी में॥
 जो सुख पायो नाम भजन में, सो सुख नाहीं अमीरी में।
 भली बुरी सबकी सुनि लीजै, करि गुजारान गरीबी में॥
 प्रेम नगर में रहनि हमारी भलि बनि आई सबूरी में॥
 हाथ में कूँ डी बगल में सोटा तीनों लोक जगीरी में॥
 आखिर यह तन खाक मिलेगा, कहाँ फिरत मगरूरी में॥
 कहैं कबीर सुनो भाई साधो, साहिब मिलैं सबूरी में॥

इस मन को गरीबी में मस्त रखना है। जो आनन्द नाम-भजन में है, वो और कहीं नहीं है। संसार की दौलत से वो आनन्द प्राप्त नहीं हो सकता है। इस शरीर का घमंड करने का कोई मतलब नहीं है, बेकार है, क्योंकि यह शरीर तो एक दिन मिट्टी में मिल जायेगा।

सम्पत्ति बहुत रहै दिन थोरा

बहुत दुख दुख दुख की खानी। तब बचिहो जब नामहि जानी॥
 नामहि जानि युक्ति जो चलई। युक्तिहु ते फंदा नहिं परई॥
 युक्तिहि युक्ति चला संसारा। निश्चय कहा न मानु हमारा॥
 कनक कामिनी घोर बटोरा। सम्पत्ति बहुत रहै दिन थोरा॥
 थोरी सम्पत्ति गौ बौराई। धर्मराय की खबरि न पाई॥
 देखि त्रास मुख गौ कुम्हलाई। अमृत धोखे गौ विष खाई॥

यह संसार तो दुखों का घर है। सच्चे नाम को पाकर ही इससे बच सकते हो। नाम पाकर नियम पर चलने वाला फँदे में नहीं पड़ता। स्त्री, धन आदि कोई कितना भी बटोर ले, पर इस संसार में तो थोड़े ही दिन रहना है। लोग सांसारिक सम्पत्ति पाकर उसी में खो जाते हैं और ऐसे में काल को भी भूल जाते हैं। जब मौत सामने आकर खड़ी हो जाती है तब डरके मारे मुँह सूख जाता है और तभी समझ आती है कि जिस सांसारिक माया को अमृत समझकर वो इकट्ठा करते रहे, वो तो विष के समान निकली।

ऐसा यह संसार है

ऐसा यह संसार है, जैसा सेमर फूल।
 दिन दस के व्यौहार में, झूठे रंग न भूल॥
 कबीर धूलि सकेलि के, पूड़ि जो बाधी येह।
 दिवस चार का पेखना, अंत खेह की खेह॥
 कबीर मंदिर लाख का, जड़िया हीरा लाल।
 दिवस चार का पेखना, बिनसि जायगा काल॥
 सपने सोया मानवा, खोलि जो देखै नैन।
 जीव परा बहु लूट में, ना कछु लेन न देन॥
 मरोगे मरि जाहुगे, कोई न लेगा नाम।

ऊजड़ जाड़ बसाहुगे, छोड़ि बसंता गाम॥
 कबीर जो दिन आज है, सो दिन नाहीं काल।
 चेत सकै तो चेत ले, मीच परी है खयाल॥

यह संसार तो सेमर के फूल की तरह है, जिसे नष्ट होते देर नहीं लगेगी। इसमें जीव बहुत लूट में है। उसे कुछ लेना देना नहीं है, फिर भी लगा हुआ है। लाखों के महल लोग खड़े कर देते हैं, पर रहना तो यहाँ थोड़े ही दिन है। जब मर जाओगे तो कोई नाम भी नहीं लेगा और फिर जंगल में जाकर बसेरा करना पड़ेगा। इसलिए जितनी जल्दी हो सके, जाग जाओ।

सब स्वर्ग चलेगा व तपोलोक चलेगा

कैलास चलेगा व जिन् लोका चलेगा।
 अमरावती अलकावती गोलोक चलेगा॥
 सब स्वर्ग चलेगा व तपोलोक चलेगा।
 जो हृद् जनो मर्द में सो लोक चलेगा॥
 वो भी चल जावे जहाँ नौलाख सितारे।
 चल हंस अचल मोलिदो मावाय हमारे॥

यहाँ जो कुछ भी दिख रहे है, एक दिन नष्ट हो जायेगा। स्वर्ग लोक, तप लोक आदि भी नहीं रहेगा। नौ लाख तारे भी नहीं रहेंगे। इसलिए हे अमर हंस! तू इस नश्वर संसार को छोड़कर उस अमर-धाम में चल।

खलक है रैन का सपना

खलक है रैन का सपना। समझ दिल कोई नहीं अपना॥
 कहीं है लोभ की धारा। बहा जग जात है सारा॥
 घड़ा ज्यों नीर का फूटा। पतर जैसे डार से टूटा॥

ऐसी निर्जान जिंदगानी। अजौं क्यों न चेत अभिमानी॥
 सजन परवार सुतदारा। सभी उस रोज हों न्यारा॥
 निकल जब प्राण जावेंगे। कोई नहिं काम आवेंगे॥
 निरख मत भूल तन गोरा। जगत में जीवना थोरा॥
 सदा जिन जान यह देही। लगाओ सत्यनाम से नेही॥
 कटे यम काल की फाँसी। कहें कबीर अविनाशी॥

कह रहे हैं कि यह संसार तो रात के सपने की तरह हैं। यहाँ पर कोई भी अपना नहीं है। यहाँ पर लोभ की कठिन धारा बह रही है और सारा संसार उसी में बहे जा रहा है। जैसे पानी का घड़ा फूटता है, जैसे डाली से पत्ता टूटता है, ऐसे ही यह जिंदगी एक दिन समाप्त हो जायेगी। इसलिए हे अभिमानी जीव! सावधान हो जा। मित्र, कुटुम्बी, पुत्र, स्त्री आदि कोई भी तेरे काम नहीं आयेगा। ये सब एक दिन छूट जायेंगे। जब तेरे प्राण निकल जायेंगे तो ये सब तेरे काम नहीं आयेंगे। तू गोरे तन को देखकर मत भूल। इस संसार में थोड़ा-सा ही जीवन है। इसलिए तू अहंकार, लोभ और सारी चतुराई को त्यागकर इस संसार की माया से परे रह और सत्यनाम से प्रीत कर, जिससे काल की फाँस कट सके।

जनम अकारथ जात

कहा नर गरबस थोरी बात॥
 मन दस नाज टका चार गाँठी, ऐँड़ो टेढ़ो जात॥
 बहुत प्रताप गाँव से पाये, दुइये टका बरात॥
 दिवस चारि के करी साहिबी, जैसे बन हर पात॥
 ना कोऊ लै आयो यह धन, ना कोऊ लै जात॥
 रावन हूँ से अधिक छत्रपति, छिन में गये बिलात॥
 मैं उन संत सदा थिर पूजों, जो सत्यनाम जपात॥
 जिन पर कृपा करत हैं सद्गुरु, ते सतसंग मिलात॥

मात पिता बनिता सुत संपति, अंत न चलत संगीत।

कहत कबीर संग कर सतगुरु, जनम अकारथ जात॥

हे मनुष्य! तू नश्वर जीवन की छोटी-छोटी बातों पर क्या डींग मारता है! घर में दस मन अनाज है, चार रुपए की पूंजी है, बहुत कम है। यह तुम्हारा स्वामित्व बन के हरे पत्तों की तरह चार दिन का है। जो कुछ दिन में ही पीला पड़कर, मुरझाकर झड़ जायेगा। संसार का धन न कोई जन्मते अपने साथ लाया है और न अपने साथ ले जायेगा। रावण से भी बड़े-बड़े पल में विलीन हो गये, काल के गाल में समा गये।

मैं तो उन संतों की भक्ति करता हूँ, जो सत्य नाम के सुमिरण भजन में लगाते हैं, जिन पर सद्गुरु कृपा करते हैं, वे ही सत्य के साथ मिल पाता है। माता-पिता, पत्नी, पुत्र, धन आदि कुछ साथ में नहीं जाता। साहिब कहते हैं कि सद्गुरु का संग कर, बिना सद्गुरु तेरा यह जन्म बेकार में जा रहा है।

किसी दा भइया क्या ले जाना

किसी दा भइया क्या ले जाना, आहि गया ओहि गया भँवर निमाना॥
उड़ि गया तोता रहि गया पिंजरा, दसके जीना ठिकाना॥
ना कोई भाई ना कोई बन्धू, जो लिखिया सो खाना॥
काहू को नवा काहू को पुराना, काहू को अधुराना॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, जंगल जाइ समाना॥

ई न जानै अपनेउ मरि जैबे

गये राम औ गये लक्ष्मना। संग न गई सीता ऐसी धना॥
जात कौरवे लागु न बारा। गये भोज जिन्ह साजल धारा॥
गये पाण्डव कुन्ता ऐसी रानी। गये सहदेव जिन बुधि मति ठानी॥
सर्व सोने की लंका उठाई। चलत बार कछु संग न लाई॥

जाकर कुरिया अन्तरिक्ष छाई। सो हरिश्चंद देखल नहिं जाई॥
मूरख मनुसा बहुत सँजोई। अपने मरे और लग रोई॥
ई न जानै अपनेउ मरि जैबे। टका दश बिढ़ै और ले खैबे॥

इतने बड़े बड़े अवतार भी चले गये और उन्हें जाते देर भी नहीं लगी। अपनों को मरते देख मनुष्य रोता है, पर यह नहीं जानता कि अपनी भी बारी आयेगी और किसी तरह से धन को और बढ़ाने की प्लानिंग करता है।

ऐसो दुर्लभ जात शरीर

ऐसो दुर्लभ जात शरीर, गुरु नाम भजु लागू तीर॥
गये बेनु बलि गये कंस, दुर्योधन को बूड़ो बंस॥
पृथु गये पृथिवी के राव, त्रिविक्रम गये रहे न काव॥
छौ चकवै मंडली के झारि, अजहूँ हो नर देखु बिचारि॥
हनुमत कश्यप जनक बालि, ई सब छेंकल यम के द्वारि॥
गोपीचंद भल कीन्ह योग, जस रावण मार्यो करत भोग॥
ऐसी जात देखि नर सबहिं जान, कहहिं कबीर भजु गुरु नाम॥

यह दुर्लभ शरीर गुरु नाम के सुमिरन के बिना बेकार में चला जायेगा। वेनु, कंस, राजा बलि, दुर्योधन आदि बड़े बड़ों का वंश का वंश समाप्त हो गया। पूरी पृथ्वी पर राज करने वाले राजा पृथु भी चले गये। 6 चक्रवर्ती राजे इस धरा पर आए, पर वो भी चले गये। हनुमान, कश्यप, राजा जनक, बालि आदि सबको काल ने पकड़ लिया। योग करने वाले गोपीचंद और भोग करने वाले रावण भी नहीं रहे। इस तरह देखते ही देखते सबकी जान चली जाती है। इसलिए हो सके तो गुरु के नाम का सुमिरन कर ले।



दोहे

हंसा सरवर तजि चले, देही परि गौ सुन्न।
कहैं कबीर पुकारि के, तेही दर तेही थून॥

जीव शरीर को त्यागकर चल पड़ता है तो शरीर खाली हो जाता है। पर फिर यह जीव बार-बार गर्भ में प्रवेश करता है।

कबीर गर्व न कीजिये, ऊँचा देखि अवास।
काल पराँ भुँड़ लेटना, ऊपर जमसी घास॥

अपने ऊँचे महल को देखकर अहंकार मत करो। कल नहीं तो परसों अर्थात् कुछ समय बाद तो जमीन में लिटा दिये जाओगे और फिर ऊपर से घास भी जम जायेगी।किसी को पता भी नहीं चलेगा कि कौन हो।

एक दिन ऐसा होयगा, कोय काहु का नाहिं।
घर की नारी कौ कहै, तन की नारी जाहिं॥

अंतिम समय ऐसा होगा, जब कोई साथ नहीं देगा। अपनी स्त्री का क्या कहना, शरीर की नाड़ी तक साथ छोड़ देगी।

हाड़ जले लकड़ी जले, जले जलावनहार।
कौतुकहारा भी जले, कासों करूँ पुकार॥

मृतक के शरीर की हड्डियाँ जला दी जाती हैं। फिर वो लकड़ी भी जल जाती है, जिससे हड्डियों को जलाया गया। इतना ही नहीं, हड्डियों और लकड़ियों को जलाने वाले और यह सब तमाशा देखने वाले मनुष्य भी समय के साथ एक-एक करके जला दिये जाते हैं। इस

तरह यह पूरा संसार नश्वर है। एक-एक करके सभी काल के मुँह में जा रहे हैं। फिर ऐसे में किससे पुकार की जाए, जो हमें इस तरह जलने से बचा सके।

चले गये सो ना मिले, किसको पूछूँ बात।

मात पिता सुत बाँधवा, झूठा सब संघात॥

पिता, पुत्र, रिश्तेदार आदि सब झूठे हैं। जो भी इस संसार से चला जाता है, फिर वो मिलता नहीं।

झूठे सुख को सुख कहै, मानत है मन मोद।

जगत चबेना काल का, कछु मूठी कछु गोद॥

इस संसार के झूठे सुखों को सुख मानकर सुहावने सपने देखने वाले मनुष्यो, यह संसार तो काल पुरुष का चबेना है। चबेना कहते हैं, भूने हुए दानों को। जैसे हम मक्की, चने आदि के दानों को गोद में रखकर खाते हैं। कुछ मुट्ठी में भरे होते हैं, कुछ मुख में होते हैं। जो मुख में हैं, वो तो गये, अब मुट्ठी वालों की बारी आयेगी, फिर गोद वाले उठेंगे। इस तरह यह सारा संसार काल-पुरुष का चबेना बना हुआ है। एक एक करके सब काल के मुँह में जा रहे हैं।

पानी केरा बुदबुदा, अस मानुष की जात।

देखत ही छिप जायेंगे, ज्यों तारा परभात॥

मनुष्य का जीवन पानी के बुलबुले की तरह है, जो थोड़ी सी हवा चलने से इसी तरह नष्ट हो जायेगा, जैसे प्रातः होते ही आकाश के सारे तारे छिप जाते हैं।

चलती चक्की देख करि, दिया कबीरा रोय।

दुइ पाटन के बीच में, साबत बचा न कोय॥

काल की चक्की में सब जीव पिसे जा रहे हैं। कोई भी बच नहीं पा रहा है।

बारी बारी आपने, चले पियारे मीत।

तेरी बारी जीयरा, नियरै आवै नीत॥

हे मनुष्य, एक-एक करके बारी-बारी से तेरे सब मित्र चले गये और तेरे जाने की बारी भी नित्य प्रति निकट आती जा रही है.... चलना होगा।

माली आवत देखि के, कलियाँ करें पुकार।

फूली फूली चुनि लई, काल्ह हमारी बार॥

माली को आते देख मानो कलियाँ कह रही हों कि जो फूल थे, वो तो माली ने चुन लिए, कल हम भी खिल जायेंगी और हमें भी माली तोड़ लेगा। यानी इस संसार का माली (निरंजन) एक एक करके सबको खा जायेगा।

हम जाये तो भी मुवा, हम भी चालनहार।

हमरे पीछे पूंगरा, तिन भी बाँधा भार॥

हमारे शरीर को जन्म देने वाले मर गये। हमारा शरीर भी नष्ट होने वाला है....मौत के मुँह में जा रहे हैं, हम भी। हमारे पीछे जो परिवार है, वो भी अपने कर्मों की गठरी बाँध कर जाने की तैयारी कर रहे हैं।

यह तन काँचा कुम्भ है, लिया फिरै थे साथ।

टपका लागा फूटि गया, कछु न आया हाथ॥

हे मनुष्य, यह शरीर तो कच्चे घड़े के समान है, जिसको साथ लेकर घूम रहे थे। काल का एक धक्का लगेगा और यह फूट जायेगा....कुछ हाथ नहीं आयेगा।

आये हैं सो जायेंगे, राजा रंक फकीर।

एक सिंहासन चढ़ि चले, एक बाँधें जंजीर॥

जो भी इस नश्वर संसार में आया है, वो एक दिन तो यहाँ से अवश्य जायेगा....चाहे वो राजा हो या गरीब हो या फकीर। अन्तर केवल इतना है कि अच्छे कर्म करने वाला सिंहासर पर चढ़कर जायेगा और पाप कर्म करने वाला यमराज की मोटी-मोटी जंजीरों में बँधा हुआ जायेगा।

भाई बीर बटाउआ, भरि भरि नैनन रोय।

जा का था सो ले लिया, दीन्हा था दिन दोय॥

साहिब कह रहे हैं कि मरने वाले के भाई, साथी आदि बड़े रोते हैं, पर जिसने वो शरीर दिया, वो वापिस ले लेता है। उसने तो कुछ ही दिन के लिए वो शरीर दिया था।

आस पास जोधा खड़े, सबै बजावैं गाल।

मंझ महल से लै चला, ऐसा काल कराल॥

साहिब कह रहे हैं कि जब मरने का समय आता है तो रिश्ते-नातेदार आस-पास खड़े होकर गाल बजाते हैं कि यह कर देंगे, वो कर देंगे, बचा लेंगे, पर काल तो बड़ा ही भयानक है, वो शरीर रूपी महल के बीच से जीव को पकड़कर ले ही जाता है।

चहुँ दिस सूरा बहु खड़े, हाथ लिये हथियार।

रहि गये सबही देखते, काल ले गया मार॥

साहिब कह रहे हैं कि मरने वाले के चारों ओर बहुत से शूरवीर साथी खड़े होते हैं; सब उसे बचाने के लिए अपने-अपने हथियार लिये हुए होते हैं, पर सब देखते ही रह जाते हैं और काल पकड़ कर ले जाता है।

माटी कहै कुम्हार से, तू क्या रौंदे मोहि।

एक दिन ऐसा होयगा, मैं रौंदोंगी तोहि॥

लकड़ी कहै लुहार से, तू मति जारे मोहि।

इक दिन ऐसा होयगा, मैं जारौंगी तोहि॥

मिट्टी मानो कुम्हार से कहती है कि तू मुझे क्या रौंद रहा है, एक दिन मैं बदला लूँगी और तुम्हें रौंदूँगी। ऐसे ही मानो लकड़ी लुहार से कहती है कि तू मुझे जला रहा है, पर एक दिन ऐसा आयेगा कि मैं तुम्हें जलाऊँगी। यानी मृत्यु के समय मुसलमान लोग मृतक के शरीर को जमीन में गाड़ देते हैं और मिट्टी ऊपर डाल देते हैं और हिंदू लोग

लकड़ियों के सहारे मृतक के शरीर को जला देते हैं।

सुखिया ढूँढत मैं फिरूँ, सुखिया मिलै न कोय।

जाके आगे दुख कहूँ, पहिले अठै रोय॥

साहिब कह रहे हैं कि मैं संसार में सुखी प्राणी को खोजता फिरता हूँ, पर कोई भी ऐसा इंसान नहीं मिलता, जो सुखी हो। मैं जिसे भी अपना दुख बताता हूँ, वो पहले ही अपने दुखों का रोना रो देता है।

जा दिन ते जिव जनमिया, कबहुँ न पाया सूख।

डालै डालै मैं फिरा, पातै पातै दूख॥

साहिब कह रहे हैं कि जिस दिन से जीव संसार में जन्म लेकर आता है, उस दिन से वो कभी सुख प्राप्त नहीं करता है। मैंने संसार की एक-एक डाली को देखा, पत्ते-पत्ते को देखा, पर कोई भी सुखी नहीं मिला; हरेक दुखी ही मिला।

भू दुखी अवधूत दुखी, दुखी रंक विपरीत।

कहैं कबीर ये सब दुखी, सुखी संत मन जीत॥

भोगी भी दुखी है और योगी भी दुखी है। धनहीन भी दुखी हैं तो धनवान भी दुखी हैं। साहिब कह रहे हैं कि केवल संत जन, जिन्होंने मन को जीत लिया है, सुखी हैं।

देह धरे का दंड है, भुगतत हैं सब कोय।

ज्ञानी भुगते ज्ञान से, मूरख भुगते रोय॥

साहिब कह रहे हैं कि शरीर धारण करने का दंड हरेक भुगत रहा है। अन्तर इतना है कि ज्ञानी इसका दंड ज्ञान से भुगत रहा है और मूर्ख रोकर भुगत रहा है।

जाके आगे इक कहूँ, सो कहवै इक्कीस।

एक एक ते धाड़िया, कहाँ से काढूँ बीस॥

कह रहे हैं कि मैं जिसे अपना एक दुख सुनाता हूँ, वो आगे से अपने 20 दुखड़े सुना देता है। संसारी मनुष्य एक ही दुख से जले जा रहा

है, फिर मैं इसके बीसों दुखों को कैसे दूर करूँ!

चहै आकाश पताल जा, फोड़ि जाहु ब्रह्मण्ड ।

कहैं कबीर मिटि है नहीं, देह धरे का दंड ॥

कह रहे हैं कि चाहे आकाश में पहुँच जाओ, चाहे पाताल में पहुँच जाओ, चाहे ब्रह्माण्ड फोड़कर आगे निकल जाओ, पर देह धारण करने का जो दंड है, वो तो भोगना ही पड़ेगा।

मछरी मुख जस केंचुआ, मुसवन महँ गिरदान ।

सर्पन माहिं गहेजुआ, ऐसी जात देखि सबन की जान ॥

जिस तरह मछली मुख में केंचुआ डालकर अपना गला फँसा लेती है और मारी जाती है, जैसे चूहा अपने मुख में गिरगिट को लेकर खाहमकाह की परेशानी ले लेता है और जैसे साँप अपने मुख में छछूंदर को लेकर बेकार में परेशानी ले लेता है, इसी तरह दुनियाबी लोग संसार भोग-विलासों में उलझकर अपनी जान को संकट में डाल देते हैं।



नाम का रंग

ऐसे रंग में रंग दिया,

साहिब ने मुझको ।

और कोई भी रंग,

भाये नहीं मुझको ।

मैंने थे अपराध किए,

साहिब ने सब माफ किए ।

मुझ पर रहम साहिब ने किया,

मुझको अद्भुत नाम दिया ।

कर्मों का कागद फाड़ दिया ।

जब से मैंने नाम लिया,

मन साहिब ने थाम लिया ।

मन यह जगत में ना ही लगे,

जीवन एक दुःस्वप्न लगे ।

इच्छा है सतलोक को जाऊँ,

परम मुक्ति में पा जाऊँ ।

साहिब हम पर दया करो,

पार यह हमरी नैया करो ॥

पुस्तक सूची

हिन्दी में

1. परा रहस्या
2. मासिक पत्रिका सत्यकेतु
3. पावन प्रार्थनाएँ
4. सद्गुरु चालीसा
5. वार्षिक डायरी
6. सद्गुरु भक्ति
7. कहाँ से तू आया और कहाँ
तुझे जाना रे?
8. सत्संग सुधारस
9. नाम अमृत सागर
10. अमृत वाणी
11. सद्गुरु नाम जहाज़ है
12. चल हंसा सतलोक
13. कोटि नाम संसार में तिनते
मुक्ति न होय
14. मूल नाम गुप्त है, जाने बिरला
कोय
15. गुरु सुमिरै सो पार
16. तीन लोक से न्यारा
17. सेहत के लिए ज़रूरी
18. सहजे सहज पाइये
19. रोगों से छुटकारा
20. सद्गुरु महिमा
21. भक्ति के चोर
22. अनुरागसागर वाणी
23. भक्ति सागर
24. हरि सेवा युग चार है, गुरु
सेवा पल एक
25. सत्य नाम के सुमरते उबरे
पतित अनेक
26. काग पलट हंसा कर दीना
27. कस्तूरी कुण्डल बसै मृग
खोजे बन माहिं
28. गुरु पारस गुरु परस है
29. गुरु अमृत की खान
30. शीश दिये जो गुरु मिले तो
भी सस्ता जान
31. मूल सुरति
32. भृंग मता होय जिहि पासा,
सोई गुरु सत्य धर्मदासा

33. मैं कहता हूँ आँखिन देखी
34. गुरु संजीवन नाम बतावे
35. नाम बिना नर भटक मरे
36. रोगों की पहचान
37. यह संसार काल को देशा
38. न्यारी भक्ति
39. साहिब तेरी साहिबी सब
घट रही समाय
40. जाप मरे अजपा मरे अनहद
भी मर जाए
41. आयुर्वेद का कमाल रोगों के
निदान में
42. सुरति समानी नाम में
43. सबकी गठरी लाल है, कोई
नहीं कंगाल
44. निन्दक जीवे युगन युग
काम हमारा होय।
45. निराले सद्गुरु
46. कुँजड़ों की हाट में हीरे का
क्या मोल
47. जीवड़ा तू तो अमर लोक का
पड़ा काल बस आई हो
48. मुझे है काम 'सद्गुरु से
जगत रूठे तो रूठन दे'
49. जेहि खोजत कल्पो भये
घटहि माहिं सो मूर
50. आत्म ज्ञान बिना नर भटके
51. बिन सतगुरु बाँचे नहीं
कोटिन करे उपाय
52. अँधी सुरति नाम बिन जानो
53. सत्यनाम निज औषधि
सद्गुरु दर्ई बताय
54. सेहत संजीवनी
55. भक्ति दान गुरु दीजिए
56. मन पर जो सवार है ऐसा
ऐसा विरला कोई
57. सत्यनाम है सार बूझौ सन्त
विवेक करि
58. रोग निवारक
59. मुक्ति भेद मैं कहौं विचारी
60. "तेरा बैरी कोई नहीं
तेरा बैरी मन"
61. सुरति का खेल सारा है
62. सार शब्द निहअक्षर सारा
63. करूँ जगत से न्यार
64. बिन सत्संग विवेक न होई
65. सत्य नाम को जनि कर दूजा
देई बहा
66. सुरत कमल सद्गुरु स्थाना
67. मनहिं निरंजन सबै नचाए
68. सत्यपुरुष को जानसी
तिसका सतगुरु नाम
69. आपा पौ आपहि बँध्यो
70. सत्य भक्ति का भेद न्यारा
71. जपो रे हंसा केवल नाम
कबीर
72. सत्य भक्ति कोई बिरला
जाना
73. जगत है रैन का सपना

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

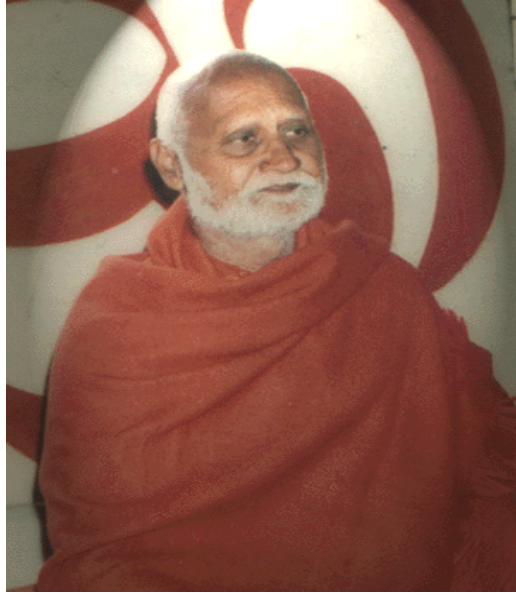
अन्तका अनुभव

(पूज्यपाद स्वामी श्रीशरणानन्दजी महाराज)

मेरा अपना अबतकका अनुभव है कि जो हम चाहते हैं, वह न हो, इसीमें हमारा हित है। हमने तो जबतक अपने मनकी मानी है, अपने मनकी बात की है, तो सिवाय पतनके, सिवाय अवनतिके हमें तो कुछ परिणाममें मिला नहीं।.....मैं आपके सामने अपनी अनुभूति निवेदन कर रहा हूँ, और इससे लाभ उठाना चाहते हैं तो अपनी चाही मत करो। प्रभुकी चाही होने दो। प्रभु वही चाहते हैं, जो अपने-आप हो रहा है।



आध्यात्म की दो मंजिले



(स्वामी शंकरानन्द)

आध्यात्मिक जीवन के विकास की दो मंजिलें हैं - पहले कर्म सुधार के द्वारा अपने स्वभाव का सुधार करना और फिर अविद्या का नाश कर परमात्म स्वरूप में स्थिर होना । धर्माधर्म के विवेक से पहली मंजिल में प्रवेश होता है और स्वधर्म तथा सामान्य धर्म का पालन करने से इस मंजिल का उद्देश्य पूरा होता है । यहाँ पहुँच कर साधक को भौतिक सुख, कीर्ति और स्वर्ग की अनित्यता और तुच्छता समझ में आ जाती है । इनमें कहीं उसकी प्रियता नहीं रह जाती । वह विरक्त हो जाता है । अब उसके सामने दूसरी मंजिल का द्वार खुलता है । दूसरी मंजिल परमार्थ साधना की है।

परमार्थ पथ साधक को शरीर से ऊपर उठाकर व्यक्तित्व के सर्वोच्च शिखर पर पहुँचा देता है। जैसे पर्वत शिखर पर चढ़ने के लिये प्रायः दो मार्ग होते हैं - एक सीधा किन्तु सकरा व कठिन रास्ता और दूसरा पर्वत के चारों ओर घूम कर जाने वाला चौड़ा और अपेक्षाकृत सरल रास्ता । ठीक इसी प्रकार अपने व्यक्तित्व के उच्चतम शिखर पर पहुँचने के लिये एक ज्ञान योग का सीधा-सकरा रास्ता है और दूसरा भक्तियोग का लम्बा चौड़ा रास्ता ।

पहले रास्ते पर वही चढ़ सकते हैं जो सशक्त हैं । कम शक्ति रखने वाले व्यक्ति अपने लिये दूसरा रास्ता चुनते हैं । निर्मल बुद्धि व विवेकबल से युक्त ज्ञान के रास्ते से परमार्थ शिखर पर बहुत जल्दी पहुँचा जा सकता है, किन्तु बहुत कम मनुष्यों में

ऐसी सामर्थ्य होती है। प्रायः लोग भावना प्रधान होते हैं। उनके पास श्रद्धा का ही विशेष बल होता है। वे उपासना और भक्ति के द्वारा अपनी दुर्बलताओं को दूर करते हुये धीरे-धीरे आगे बढ़ते रहते हैं। घुमावदार लम्बे-चौड़े मार्ग पर चलते-चलते वे भी एक दिन उसी शिखर पर पहुँच जाते हैं जहाँ बुद्धि व विवेक से पहुँचे हुये व्यक्ति पहले से बैठे दिखाई देते हैं। जो साधक जिस रास्ते पर सफलता प्राप्त कर लेता है, उसे वही रास्ता ज्यादा सुगम प्रतीत होता है। तुलसीदास जी ने वर्तमान काल में कलियुग का प्रभाव देखकर भक्ति मार्ग ही श्रेष्ठ माना है।

उपनिषद् परमार्थ पथ के परिपोषक हैं। उनमें अविद्या का नाश कर विद्या के बल पर परमतत्त्व का साक्षात् अपरोक्ष दर्शन प्राप्त करने का मार्ग दिखाया गया है। हृदय में विद्या का उच्चवल प्रकाश प्रकट होने पर अद्वितीय नित्य तत्त्व की उपलब्धि हो जाती है। उपनिषदों में ज्ञान व उपासना दोनों को विद्या माना गया है। 'विद्या' शब्द केवल ब्रह्मज्ञान सूचक नहीं है, बल्कि उस ज्ञान को प्राप्त करने के जो साधन या मार्ग हैं उन्हें भी विद्या कहते हैं। जैसे शांडिल्य विद्या, प्राण विद्या, प्रणव विद्या आदि। प्रायः सभी उपनिषदों में ब्रह्मज्ञान कराने के लिये ज्ञान व उपासना दोनों का वर्णन है। उसका मुख्य कारण अधिकारी भेद है।

किन्तु ज्ञान व भक्ति में किसी को छोटा या बड़ा कहना उचित नहीं है। दोनों की अपनी महिमा है और दोनों एक-दूसरे पर आश्रित हैं। परमात्मा का ज्ञान हुये बिना उसमें प्रेम नहीं हो सकता और बिना प्रेम परमात्मा का ज्ञान भी सम्भव नहीं है। इसलिये ज्ञानीजन ज्ञान का विस्तार करते समय भक्ति का आश्रय लेना नहीं भूलते और भक्त लोग भी परमात्मा के प्रेम की महिमा गाते समय उसका ज्ञान प्राप्त करने के लिये उपासना भी करते हैं। गीता में ज्ञान व भक्ति दोनों के प्रसंग आते हैं। भगवान् उन दोनों के अनन्योपाश्रित संबंध को बहुत अधिक महत्व देते हैं। भगवान् आर्त, जिज्ञासु, अर्थार्थी और ज्ञानी चार प्रकार के भक्तों का वर्णन करते हुये कहते हैं -

तेषां ज्ञानी नित्ययुक्ता एक भक्तिर्विशिष्यते ।

प्रियो हि ज्ञानिनोऽत्यर्थमहं स च मम प्रियः ॥७-१७॥

अर्थात् उनमें मेरे साथ एकीभाव से नित्य स्थित अनन्य प्रेम रखने वाला ज्ञानी पुरुष अति उत्तम है, क्योंकि उस ज्ञानी को मैं अत्यन्त प्रिय हूँ और वह ज्ञानी मुझे भी अत्यन्त प्रिय है।

भगवान् आगे कहते हैं -

उदारा सर्व एवैते त्वात्मैव मे मतम् ।

आस्थितः स हि युक्तात्मा मामेवानुत्तमां गतिम् ॥७-१८॥

ये सभी प्रकार के भक्त उदार हैं परन्तु ज्ञानी भक्त तो मेरा स्वरूप ही हैं - ऐसा मेरा मत है । वह मुझसे युक्त होकर अति उत्तम गति अर्थात् मुझ में ही स्थित हो जाता है ।

परा भक्ति व ज्ञान समतुल्य हैं । शुद्ध ज्ञान की परणिति परमात्मा के पूर्ण प्रेम में होती है और परम भक्ति ही परमात्म स्वरूप का अपरोक्ष ज्ञान है । अद्वैतवादी आदि शंकराचार्य भगवान हरि, हर व देवी के महान भक्त थे । संत ज्ञानेश्वर श्रीकृष्ण के परम भक्त थे । रामकृष्ण परमहंस ने काली माता की उपासना की और अद्वैतवादी गुरु तोतापुरी महाराज से ज्ञान प्राप्त किया । बंगाल के गौरांग महाप्रभु अद्वैत वेदान्त के विद्वान थे, फिर भी वे हरि नाम का संकीर्तन करते हुये सड़कों पर नाचते थे । परम भक्त तुलसीदास में ज्ञान की क्या कमी थी?

मानवी व्यक्तित्व के तीन मुख्य स्तर हैं - शरीर, मन और बुद्धि । परमात्मा की दिव्यता प्रकट होने पर इन तीनों स्तरों पर उसका प्रकाश दिखाई देता है । परमार्थ पद तो एक ही है चाहे कोई भक्ति मार्ग से वहाँ पहुँचे या फिर ज्ञान मार्ग से। परमार्थ शिखर पर आसीन व्यक्ति की बुद्धि शंकराचार्य की तरह, हृदय गौतम बुद्ध की तरह और हाथ राजा जनक की तरह काम करने लगते हैं । जिसने आत्मा की अखण्डता का अनुभव कर लिया है उसे समस्त प्राणियों से सहज प्रेम हो जाता है और वह निःस्वार्थ भाव से सबकी सेवा करता है ।

भक्तियोग से उद्धृत

॥ ॐ सर्व शक्तिमते परमात्मने श्री रामाय नमः ॥

मेरे राम ! मेरे नाथ !!

आप सर्वदयालु हो, सर्वसमर्थ हो, सर्वत्र हो, सर्वज्ञ हो । आपको कोटिश नमस्कार ।

आपने साधना के लिये मानव शरीर दिया है और प्रति क्षण दया करते रहते हैं । आपके अनन्त उपकारों का ऋण नहीं चुका सकता । पूजा से आपको रिझाने का प्रयास करना चाहता हूँ ।

अपनी कृपा से मेरे विश्वास दृढ़ कीजिये कि “राम मेरा सर्वस्व है ” । “मैं राम का हूँ ” । “सब मेरे राम का है ” । “सब मेरे राम के हैं ” । “सब राम के मंगलमय विधान से होता है और उसी में मेरा कल्याण निहित है ” ।

अपनी अखण्ड स्मृति दीजिये । राम नाम का जप करता रहूँ । रोम रोम में राम बसा है । हर स्थान पर हर समय राम को समीप देखूँ । अपनी चरण शरण में अविचल श्रद्धा दीजिये । मेरे समस्त संकल्प राम इच्छा में विलीन हों । राम कृपा में अनन्य भरोसा रख कर सदैव सन्तुष्ट और निश्चिन्त रहूँ, शान्त रहूँ, मस्त रहूँ ।

ऐसी बुद्धि और शक्ति दीजिये कि वर्तमान परिस्थिति का सदुपयोग करके, पूरा समय और पूरी योग्यता लगा कर अपना कर्तव्य लगन उत्साह और प्रसन्न चित्त से करता रहूँ । मेरे द्वारा कोई ऐसा कर्म न होने पाये जिसमें मेरे विवेक का विरोध हो ।

सत्य, निर्मलता, सरलता, प्रसन्नता, विनम्रता, मधुरता मेरा स्वभाव हो ।

दुखी को देख कर सहज करुणित और सुखी को देख कर सहज प्रसन्न हो जाऊँ । मेरे जीवन में जो सुख का अंश है वह दूसरों के काम आये और जो दुख का अंश है वह मुझे त्याग सिखाये ।

मेरी प्रार्थना है कि आपका अभय हस्त सदा मेरे मस्तक पर रहे । आपकी कृपा सदा सब पर बनी रहे । सब प्राणियों में सद्भावना बढ़ती रहे । विश्व का कल्याण हो ।

ॐ शान्ति शान्ति शान्तिः ।

Daily Prayer

Oh! Ram, my Lord!

You are omnipotent, omnipresent and omniscient. You know everything and are kind to everybody. I bow to you time and again.

You have given us the human body for spiritual advancement and are ever merciful. I cannot redeem the countless favours you have bestowed on me. I would try to please you only through prayers.

Have mercy and reinforce my faith that Ram is everything for me. I am Ram's and everything and everybody belong to my Ram. Everything happens as per your benevolent orders and my welfare is included therein.

Make me remember you constantly by repeating your name and let me feel your presence with horripilation at every place and at all times.

Grant me refuge in your lotus feet and let all my desires merge in reaching you. Let me be free from care and sorrow through my constant faith in you. May your boundless mercy lead me to revel and delight in you.

Give me intellect and strength so I can make the best use of the time; do my duty, willingly, cheerfully, enthusiastically and to the best of my ability. Let me not do anything that militates against my conscience.

Let my nature be moulded by truth, purity, simplicity, cheerfulness, humility and sweetness. (Alt: Let Truth, Purity, Simplicity, Cheerfulness, Humility and Sweetness constitute my Nature.) Let me show spontaneous compassion towards the suffering people and spontaneous satisfaction on seeing the happy ones. Let others be benefited by whatever is good in me and let me discard whatever is bad in me.

My prayer unto you is: May your protective hand ever rest on my head. May you be ever merciful towards one and all and at all times. May there be amity amongst all the living beings. May peace and happiness pervade the entire world.

OM! ShantiH! ShantiH! ShantiH!

dainika praarthanaa by Shri Shiv Dayalji Srivastav
English Translation by Shri S. V. Ganesanji
ITRANS version updated on February 21, 1999